रूहुल्-क़ुर्आन्

(उर्दू भाषा, नागरी लिपि)

—विनोबा

रूहुल्-कुरआन

(उर्दू भाषा, नागरी लिपि)

विनोबा

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

नाशिर (पब्लिशर) : सेक्रेटरी, सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट, वाराणसी

एडिशन : अव्वल, २,०००; जून, १९६३
दुव्वम, १,५००; मई, १९६४

कुल : ३,५००

ताबअ् (प्रिंटर) : विश्वनाथ भार्गव,
मनोहर प्रेस,
जतनबर, वाराणसी

क़ीमत : दो रुपये
एक डालर
पाँच शिलिंग

Title : ROOHUL QURAN
(Urdu, Nagari)

Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi

Edition : First, 2,000; June, '63
Second, 1,500; May, '64

Total Copies : 3,500

Price : Rs. 2.00
$ 1.
sh. 5.

रूहुल्-कु़र्आन के उर्दू तर्जमः का यह नागरी रूप पेश करते हुए हमें बहुत ख़ुशी होती है।

यह किताब उर्दू रस्मुल्ख़त (लिपि) न जाननेवाले उर्दू ज़बानदानों के काम आ सकेगी और हिन्दी जाननेवालों के भी काम आयेगी। किताब में जगह-जगह मुश्किल लफ़्ज़ों के मानी दिये गये हैं।

असल रूहुल्-कु़र्आन, कु़र्आन-शरीफ़ से विनोबाजी की चुनी हुई आयतों का मज्मूअ़ः है, जिसे उन्होंने ख़ास तरीक़ से अ़ुन्वानात (शीर्षक) के साथ तर्तीब दिया है। कु़र्आन-शरीफ़ में से चुनी हुई १०६५ आयतें इसमें ९ क़ितों', ३० बाबों, ९० फ़स्लों और ४०० मौज़ूओं में मुरत्तब की गयी हैं।

रूहुल्-कु़र्आन का तर्जमः अच्युत देशपाण्डेजी ने किया, और काशी में, अरबी ज़बान के आ़लिम मौलाना अ़ब्दुल अ़लीम साहिब और मौलाना मुह़म्मद हसन साहिब 'अहसन' मज़्हरी ने उसे जाँचा। कश्मीर के मश्हूर आ़लिमेदीन मौलाना मुहम्मद सअ़ीद साहिब मसऊ़दी ने इस तर्जमः को देख लिया है। उनकी कुछ हिदायतें भी इसमें शामिल हैं।

अ़ुन्वानात के तर्जमः को जनाब अ़ब्दुल् क़य्यूम (पटना) ने देख लिया है। नागरी में इसे अच्युतभाई ने तैयार किया है और जनाब मन्ज़ुरुल हसन और मौलवी मुख़्तार अह़मद 'अख़्तर' फ़ैज़ी मुअ़ऽइ (काशी) की मदद भी इसमें शामिले-हाल रही है।

इस सिल्सिलः में जिन हज़रात ने हमारी मदद फ़र्मायी, हम उनके निहायत ही शुक्रगुज़ार हैं।

हर मौज़ूअ: के आखिर में आ'दाद दिये गये हैं, जिनसे कु.र्आन-शरीफ़ की किस सूर: की कौनसी आयतें ली गयी हैं, यह बतलाया गया है। तीन जगहों (मौ० १६८, २०४ और २८६) के सिवा बाक़ी सब जगह आयतें सिल्सिले से ली गयी हैं।

वाराणसी
११-६-'६३

नाशिर

नागरी में लिखने के लिए जिन अ़लामतों (संकेत-चिह्नों) का इस्तिअ़्माल किया गया है, वे इस तरह हैं :

ह़ = .हे ح
ख़ = ख़े خ
ज़ = ज़ाल, ज़े, ज़्वाद, ज़ोय (दन्त्य-तालव्य)
ذ ز ض ظ
अ़,' = अ़ैन ع
ग़ = ग़ैन غ
फ़ = फ़े ف
क़ = क़ाफ ق
: = हे ه
ऽ = हम्ज़: ء

तम्हीद

साइन्स ने दुन्या छोटी बनायी और वह सब इन्सानों को नज़्दीक लाना चाहता है। ऐसी .हालत में इन्सानी समाज फ़िर्क़ों में बँटा रहे, हर जमाअ़त अपने को ऊँचा और दूसरों को नीचा समझे, यह कैसे चलेगा ? हमें एक-दूसरे को ठीक से समझना होगा। एक-दूसरे के औसाफ़ को .हासिल करना होगा। यह किताब 'रूहुल्-कु.र्आन' इस जानिब एक छोटी-सी सअ़ी है।

इसी मक्सद से 'धम्मपद' की तद्.वीन मैंने की थी, और गीता के बारे में अपने ख़्यालात 'गीता-प्रवचन' के ज़रीअ़: लोगों के सामने पेश किये थे।

बरसों से 'भूदान' के बाअ़िस मेरी पदयात्रा चल रही है, जिसका वाहिद मक्सद दिलों को जोड़ना है। बल्कि मेरी ज़िन्दगी के कुल काम दिलों को जोड़ने के वाहिद मक़्सद से मुतहर्रिक हैं।

इस किताब की इशाअ़त में वही तह्रीक कार्.फ़र्मा है। मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो-करम से वह बार्.आवर होगी।

मैत्री-आश्रम, आसाम
७-३-'६२
२५ रमजानुल मुबारक
१३८१

[illegible]

रूहुल्-कु.र्आन में अब्वाब का जो सिल्सिलः क़ायम किया गया है, वह सूरए़ बक़्रः की पाँच इब्तदाईऽ आयतों के तसल्सुल से मुताबिक़त रखता है। यह सिल्सिलः याद रखने के लिए मुन्दरजः ज़ेल संस्कृत श्लोक भी, जो विनोबाजी का बनाया हुआ है, मुफ़ीद साबित होगा।

आरम्भे तदनुध्यानं भक्त्या भक्तैर्निषेवितम्।
धर्म-नीती मनुष्याणां प्रेषितैर्गूढशोधनम्॥

शुरूअ़:[1] में मैं उस अल्लाह[2] का ध्यान करता हूँ, जिसकी अ़िबादत[3] करके आ़बिदों[4] ने अपनी बंदगी के फ़रायज़ पूरे किये हैं।

जिसने दीन[5] और अख़्लाक़[6] की इन्सान[7] को ता'लीम दी है और जिसने रसूलों[8] के ज़रीअः ग़ैब[9] की बातों का इन्किशाफ़ करवाया है।

अब्वाब–अध्याय इब्तदाई–प्रारंभिक तसल्सुल–क्रम मुताबिक़त–साधर्म्य मुन्दरजः-ज़ेल—निम्ननिर्दिष्ट फ़रायज़–धर्मकर्तव्य मुफ़ीद–लाभदायी दीन–धर्म इन्किशाफ़–आविष्कार।

फेहरिस्त

रूहुल्-क़ुर्आन में क़ुर्आन-शरीफ़ से मुन्दरजे ज़ेल सूरह् पूरे लिये गये हैं। १, ६२, ६३, ६४, ६७, ६६, १०१, १०२, १०३, १०४, १०७, ११२, ११३, ११४।

रूहुल्-क़ुर्आन में इनका इन्दराज बित्तरतीब इन सफ़्हात में है : १७, १५७, १७६, १७५, ५६, १६०, १६०, १३७, १२३, ११७, १२२, २५, ६०–६०।

मुन्दरजे ज़ेल आयतें पूरे रुकुअ़ की हैं।

२६१–२६६/२, २८४–२८६/२, २३–३०/१७, ३५–४०/२४, ७६–८२/२८, १२–१६/३१, ८–११/६३।

इनका इन्दराज बित्तरतीब इन सफ़्हात में है : १३७, १०४, १४१, ३१, १३५, १४३, १४०।

रूहुल्-क़ुर्आन के क़ित्आत और फ़स्लों के नाम याद रखने के लिए मुन्द-रजः-ज़ेल संस्कृत श्लोक मददगार साबित होंगे। ये श्लोक विनोबाजी के बनाये हुए हैं।

[1]आरम्भे, [2]तदनुध्यानं, [3]भक्त्या, [4]भक्तैर्निषेवितम्।
[5]धर्म[6]नीती, [7]मनुष्याणां, [8]प्रेषितै[9]र्गूढशोधनम्॥

१ [1]सप्तकं, [2]सारतत्त्वं च, [3]सारल्येन समर्पितम्,
पुस्तकेऽस्मिं[4]स्ततो भक्त्या शुचिर्भूत्वा पठेदिदम्।

२ [5]एक एवा[6]द्वितीयश्च, [7]प्रकाशो, [8]ज्ञानमेव च,
[9]दयालुर्, [10]दानवान्, [11]कर्ता, [12]सुरूपः, [13]सुप्रकेतनः।
[14]सर्वशक्तिः, [15]स्वतंत्रेच्छो, [16]मनोवाचामगोचरः,
[17]नामभिर्घोषित[18]श्चाविः, [19]प्रार्थनीयः पुनः पुनः।

३ [20]उपासनोपदिष्टेयं, [21]या धृता भौतिकैरपि,
[22]निष्ठा, [23]त्याग[24]स्तपश्चर्या, [25]धैर्यं मद्भक्तिलक्षणम्।
[26]सत्संगः, [27]क्षणिको भावो, [28]वैराग्यं च तदुद्भवम्।

४ [29]लक्षण्याः, [30]प्रार्थनावन्तो, [31]नैष्ठिका, [32]धैर्यशालिनः,
[33]अहिंसका ये मद्भक्ता, [34]मद्दूतैरभिरक्षिताः
[35]नास्तिका, [36]भ्रांत-चित्तास्तु, [37]मोघा, [38]निरयगामिनः।

५ [39]धर्म-निष्ठा, [40]सहिष्णुत्वं, [41]लोकसंग्रह-योजना।

६ [४२]सत्य-धीरो, [४३]वदेद् वाक्यं सत्यं, [४४]शिव[४५]मनिंदनम्,
[४६]न्यायं रक्षेत्, [४७]परं न्यायात् करुणैव गरीयसी।
[४८]अहिंसायां दृढश्रद्धा, [४९]स्नेहेन सहजीवनम्,
[५०]पापैरसहकारश्च, [५१]प्रतीकारश्च संयतः।
[५२]अस्वादो, [५३]वासनाशुद्धि[५४]रस्तेयं [५५]मित-संग्रहः
[५६]दानं, [५७]शिवानुसन्धानं, [५८]नीति[५९]राचार-पालनम्।

७ [६०]वैशेष्येऽपि मनुष्याणां, [६१]दौर्बल्यं, [६२]पाप-वश्यता,
[६३]निर्मातरि कृतघ्नत्वं, [६४]नास्तिकास्तिकयोर्भिदा।

८ [६५]साधारणा, [६६]मनुष्यास्तु, [६७]धीरा ये, [६८]तत्स्मृतिः शुभा,
[६९–७२]अत्र प्रकाशिताः केचित्, [७३]सन्त्यन्येऽप्यप्रकाशिताः।
[७४]प्रातिभं, [७५]चेश्वरादेशो, [७६]घोषणा, [७७]गुण-संश्रयः,
[७८]कार्यं पञ्चविधं यस्य, [७९]स चाशीर्वादमर्हति।

९ [८०]विश्वं, [८१]जीवं, [८२]परात्मानं, नैव तर्केण योजयेत्,
[८३]श्रद्दधानः संविधानं, [८४]विपाकं, [८५]मरणोत्तरम्।
[८६]समुत्तिष्ठ, [८७]दिनं पश्य, [८८]विविच्य विविधा गतीः,
[८९]तुष्टात्मन् प्रविशोद्यानं, [९०]प्राप्नुहि प्रेम चैश्वरम्।

तक़्दीमे-किताब

ग्रन्थ-प्रवेश

۱- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

۲- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

۳- الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

۴- مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○

۵- اِيَّاكَ نَعْبُدُ

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○

۶- اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○

۷- صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

१ अल्फ़ातिहः

१ अल्फ़ातिहः

१ अल्फ़ातिहः

१ शुरू अल्लाह के नाम से, जो बहुत मेह्रबान, निहायत रह्मवाला है।

२ हर तारीफ़ अल्लाह ही के वास्ते है, जो तमाम जहान का पालनेवाला है।

३ बहुत मेह्रबान, निहायत रह्मवाला।

४ जज़ा के दिन का मालिक है।

५ ऐ खुदा, तेरी ही हम अिबादत करते हैं। और तुझ ही से मदद मांगते हैं।

६ हमको सीधा रास्ता दिखा।

७ रास्ता उन लोगों का, जिनके ऊपर तूने इन्आम किया है; न उनका, जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ, और न गुम्राहों का।

१.१–७

अल्फ़ातिहः–उद्घाटन (मंगलाचरण) रह्म–करुणा तारीफ़–स्तुति जहान–दुनिया जज़ा–अन्तिम न्याय अिबादत–भक्ति इन्आम किया–दया की ग़ज़ब–प्रकोप गुम्राह–भ्रष्ट।

२ जलालते-किताब

२ ज़ियाए-किताब

२ किताब मुत्तक़ी के लिए

१ अलिफ़्; लाम्; मीम्;

२ यह वह किताब है जिसमें कोई शक नहीं, रहनुमा है, पर्हेज़-गारों—सलामत्-रवों—के लिए।

३ जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं; और सलात क़ायम करते हैं; और हमने जो कुछ उनको दिया है, उसमें से हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

४ और जो ईमान लाते हैं उस पर, जो तुझ पर उतारा गया और तुझसे पहले उतारा गया; और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

५ यह लोग अपने पर्वर्दिगार की हिदायत पर हैं; और यही लोग फ़लाह् पानेवाले हैं।

२.१–५

जलालते-किताब—ग्रन्थ-गौरव ज़िया—प्रकाश मुत्तक़ी—संयमी, कल्याण-मार्गी, ईश्वर से डरनेवाला रहनुमा—मार्गदर्शक पर्हेज़गार—संयमी, ईशभीरु सलामत-रव—कल्याणमार्गी ग़ैब—अव्यक्त सलात—प्रार्थना, नमाज ईमान लाना—श्रद्धा रखना आख़िरत—सांपराय, परलोक यक़ीन—विश्वास पर्व-र्दिगार—प्रभु, पालक हिदायत—मार्गदर्शन फ़लाह्—सफलता।

३ दो नौअ़ी आयतें

१ वही है जिसने तुझ पर किताब उतारी, इसमें कुछ आयतें वाज़ेह् हैं, वही किताब की अस्ल है; और दूसरी मुत्शाबेह हैं; सो जिनके दिल में कजी है, वह गुमराही फैलाने के लिए और हक़ीक़त की टोह लगाने के लिए, मुत्शाबिहात के पीछे पड़ते हैं, हालाँकि उनकी हक़ीक़त अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता............... ३.७

४ बेह्तरीन माहिय्यत लो

१ जो लोग इस कलाम को सुनते हैं और उसके बेह्तर पर चलते हैं, उन्हीं को अल्लाह ने रास्ता दिखाया है, और वही लोग अक़्लमंद हैं। ३९.१८

५ खुली हिदायत

१ बेशक यह एक नसीहत है।

२ जो चाहे, उसको सोचे। ८०.११-१२

६ किताब ज़ाहिर करनी होती है, छिपानी नहीं

१ तुम ज़रूर लोगों के वास्ते इस किताब को ज़ाहिर करोगे, उसको छुपाओगे नहीं। ३.१८७

वाज़ेह्—स्पष्ट दो नौअ़ी—दो प्रकार की मुत्शाबिहात—लाक्षणिक वचन अस्ल—मूल कजी—कुटिलता हक़ीक़त—वास्तविकता हालाँकि—जबकि माहिय्यत—सार नसीहत—सदुपदेश।

३ कैफ़ियते-किताब

७ किताब मादरी ज़बान में

१ अगर हम इसको अरबी के सिवा दूसरी ज़बान का क़ुर्आन बनाते, तो वह कहते कि इसकी आयतें खोल कर क्यों नहीं समझाई गईं। यह क्या! ग़ैर अरबी ज़बान, और अरबी लोग! कह, यह ईमानवालों के लिए हिदायत और शिफ़ाऽ है...।

४१-४४

८ आसान क़ुर्आन

१ हमने क़ुर्आन को समझने के लिए आसान बनाया; तो, है कोई सोचनेवाला? ५४.१७

९ शाअि़र का कलाम नहीं

१ क़सम खाता हूँ उस चीज़ की, जो तुम देखते हो

२ और उस चीज़ की, जो तुम नहीं देखते

३ कि यह क़ुर्आन बुज़ुर्ग पैग़ाम्-रसाँ का कहना है

४ किसी शाअि़र का कहना नहीं; (मगर), तुम लोग कम ही ईमान लाते हो।

५ और न किसी काहिन की बात है; (मगर), तुम कम ही ग़ौर करते हो।

६ यह उतारा हुआ है, पर्वर्दिगारे-आ़लम का ६९-३८-४३

कैफ़ियते-किताब—ग्रंथस्वरूप मादरी ज़बान—मातृभाषा शिफ़ाऽ—शमन, उपाय शाअि़र—कवि कलाम—शब्द पैग़ाम्-रसाँ—संदेश पहुँचानेवाला काहिन—शकुन-अपशकुन देखनेवाला या भविष्य कहनेवाला ज्योतिषी आदि।

१० दिल को तसल्ली देनेवाली किताब

१ अल्लाह ने बेहूतरीन बात यानी ऐसी किताब उतारी, जो बाहम मिलती-जुलती दुहराई जानेवाली है। जिससे उनके दिल थर्रा उठते हैं, जो अपने पर्वर्द्‌गार से डरते हैं। फिर उनके जिस्म और उनके दिल यादे-खुदा पर नर्‌म होते हैं। ३९.२३

११ दुहराई जानेवाली सूर:–फ़ातिहा

१ यक़ीनन् हमने तुमको दुहराई जानेवाली सात आयतें दीं और कुर्आने-अज़ीम। १५.८७

४ तरीक़ए-तिलावत

१२ पाक होकर

१ बेशक यह कुर्आन इज़्ज़तवाला है।

....

२ इसको वही छूते हैं, जो मुतह्हर (पाक) होते हैं। ५६.७७, ७९

१३ अल्लाह से पनाह मांगकर

१ जब तू कुर्आन पढ़ने लगे तो अल्लाह की पनाह मांग, धुतकारे हुए शैतान से। १६.९८

तसल्ली—संतोष बाहम—परस्पर यादे-खुदा—स्मरण अज़ीम—महान् तरीक़ए-तिलावत—पठनविधि पाक—पवित्र पनाह—संरक्षण।

२ अल्लाह

३ एक और बेमिसाल

५ तौहीद

१४ अल्लाह एक है

१ कह, अल्लाह एक है ।
२ अल्लाह बे-नियाज़ है ।
३ वह न वालिद है, न औलाद ।
४ और न कोई उसके बराबर का है । ११२.१–४

१५ औलाद रखना ख़ुदा के शायां नहीं

१ लोग कहते हैं, कि अल्लाह औलाद रखता है ।
२ तुम एक सख़्त बात कह रहे हो ।
३ इससे ज़मीन फट जाये, और आस्मान टुकड़े-टुकड़े हो जाये, और पहाड़ रेज़ारेज़ा होकर गिर पड़े ।
४ कि यह लोग अल्लाह के वास्ते औलाद क़रार देते हैं ।
५ और रह्मान के शायां नहीं, कि वह औलाद इख़्तियार करे ।
१९.८८–९२

बेमिसाल–अनुपम, अद्वितीय तौहीद–एकेश्वरता बे-नियाज़–निरपेक्ष वालिद–बाप औलाद–अपत्य शायां–शोभादायक रेज़ा–टुकड़ा क़रार देना–ठहराना रह्मान–कृपावान् इख़्तियार करे–स्वीकार करे ।

१६ मोमिनों की गवाही

१ क़सम है, सफ़ें बाँधकर खड़े होनेवालों की,

२ डांटनेवालों की,

३ और ज़िक्र करते हुए तिलावत करनेवालों की,

४ बेशक तुम्हारा हा़किम एक है।

५ वह रब है ज़मीन और आस्मानों का, और उनमें जो चीज़ें हैं उन सबका, और तुलूअ़ करने की जगहों का। ३७.१–५

१७ अ़ीसा अ़लैहिस्सलाम की गवाही

१ जब अल्लाह कहेगा–ऐ मर्यम के बेटे अ़ीसा! क्या तूने लोगों से कहा था, कि मुझे और मेरी मां को अल्लाह के सिवा दो मा' बूद मानो? (अ़ीसा) कहेगा, तू पाक है, मेरे वास्ते ज़ेबा नहीं, कि वह बात कहूँ जिसका मुझे हक़ नहीं। अगर मैंने कहा होगा, तो तू उसे ज़रूर जानता होगा। तू जानता है, जो कुछ मेरे जी में है। और जो कुछ तेरे जी में है, वह मैं नहीं जानता। बेशक तू ही ग़ैबों का जाननेवाला है।

मोमिन–श्रद्धावान्, भक्त सफ़ें–पंक्तियाँ हा़किम–आदेष्टा रब–प्रभु तुलूअ़ होना–उदित होना अ़लैहिस्सलाम–उस का ईश्वर रक्षण करे मा'बूद–उपास्य।

२ तूने मुझको जो हुक्म दिया, सिर्फ़ वही मैंने उनसे कहा, कि अल्लाह की बंदगी करो, जो मेरा रब है और तुम्हारा रब है। और जब तक मैं उनमें रहा, उन पर शाहिद रहा; फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उन पर निग्हबान था। और तू ही हर चीज़ का गवाह है।

३ अगर तू उनको सज़ा दे तो वह तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें बख्श दे, तो यक़ीनन तू ही ग़ालिब और हिक्मतवाला है।

५.११६–१२१

१८ तीन नहीं, एक

१ ऐ किताबवालो! अपने दीन में ग़ुलू न करो और अल्लाह के मुतअ़ल्लिक सच के सिवा कुछ मत कहो, बेशक मसीह ओ़सा, मर्यम का बेटा, अल्लाह का रसूल है; और उसका कलिमः है, जिसको उसने मर्यम की तरफ़ डाला; और रूह है उसकी तरफ़ से। पस, अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और न कहो कि तीन हैं। बाज़ आ जाओ, तुम्हारे लिए बेहतर होगा। बेशक अल्लाह ही अकेला मा'बूद है। वह इससे पाक है, कि उसके औलाद हो। उसीका है, जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है; और अल्लाह, बहैसियते-कार्साज़ काफ़ी है।

४.१७१

१९ जो फ़ानी, वह मा'बूद नहीं

१ हम इब्राहीम को इस तरह आस्मानों और ज़मीन की बादशाही दिखाने लगे, ताकि वह यक़ीन करनेवालों में हो जाए।

बंदगी–दास्य, उपासना शाहिद–साक्षी निगहूबान–निरीक्षक, उपद्रष्टा बख्श दे–क्षमा कर ग़ालिब–सर्वजित् हिक्मतवाला–सर्वविद् ग़ुलू–अति करना, हद से गुजरना कलिमः–शब्द, वचन रसूल–प्रेषित बाज़ आ जाओ–परावृत्त हो जाओ बहैसियते कार्साज़–काम सँवारनेवाले के नाते।

२ फिर जब रात ने उस पर अँधेरा डाला, तो उसने एक सितारा देखा। बोला, यह है पर्वर्दगार। फिर वह जब डूब गया तो बोला, मैं डूबनेवालों को पसंद नहीं करता।

३ फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा, तो कहा, यह है मेरा पर्वर्दगार, फिर जब वह ग़ाएब हो गया, तो कहा, अगर मेरा पर्वर्दगार मुझको हिदायत न करे, तो यक़ीनन् मैं गुमराहों में हो जाऊंगा ?

४ फिर जब उसने जगमगाते हुए सूरज को देखा, तो कहने लगा कि यह है मेरा पर्वर्दगार। यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह ग़ुरूब हो गया, तो बोल उठा, ऐ मेरे लोगो, जिनको तुम शरीक क़रार देते हो, उनसे मैं बिलकुल बेज़ार हूँ।

५ बेशक, मैंने यकसू होकर, अपना रुख़ उसीकी तरफ़ फेर दिया है, जिसने आस्मान और ज़मीन बनाये हैं; और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। ६.७५–७६

२० सूरज और चांद पैदः करनेवाले को सज्दः करो

१ सज्दः न करो सूरज को, और न चांद को; बल्कि सज्दः करो अल्लाह को, जिसने उनको पैदा किया, अगर तुम उसीकी अ़िबादत करते हो। ४१.३७

ग़ुरूब हो गया–अस्त हो गया शरीक–भागीदार, ईश्वर के साथ जिन अन्य विषयों की भक्ति की जाती है, वे एकसू–एकाग्र रुख़–मुख, प्रवृत्ति मुश्रिक–विभक्त, अव्यभिचारी निष्ठा न रखनेवाला।

६ शरीकों की नफ़ी

२१ कई मा'बूद होते तो !

१ अल्लाह ने किसीको बेटा नहीं क़रार दिया, और न उसके साथ कोई और मा'बूद है। अगर ऐसा होता, तो हर मा'बूद अपनी बनाई हुई चीज़ अलग कर ले जाता, और एक-दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह इनकी बयान्करदः बातों से पाक है।

२३.९१

२२ कई आक़ाओं का ग़ुलाम

१ अल्लाह ने एक मिसाल बयान की, कि एक शख़्स है, जिसके कई झगड़ालू आक़ा हैं, और एक शख़्स पूरा एक ही का है। क्या दोनों मिसाल में बराबर हो सकते हैं ? सब तारीफ अल्लाह के लिए है, लेकिन बहुत से लोग समझते नहीं।

३९.२९

२३ मकड़ी का घर

१ जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा और हिमायती बनाये हैं, उन लोगों की मिसाल मकड़ी की-सी है, उसने एक घर बना लिया, लेकिन इसमें शक नहीं कि सब घरों में बड़ा ही बोदा है मकड़ी का घर। काश, ये समझते ! २९.४१

२४ शिर्क और उसकी सफ़ाई

१ याद रखो, ख़ालिस बंदगी अल्लाह ही के लिए है, और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा और हिमायती बना रखे हैं कि हम तो उनकी अिबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वह हमें ख़ुदा के नज़दीक कर दें; बेशक अल्लाह फैसला कर देगा उनके

नफ़ी—निषेध आक़ा—मालिक हिमायती—सहायक, पृष्ठ-पोषक काश—ईश्वर करे शिर्क—विभक्ति ख़ालिस—शुद्ध।

दर्मियान, उस चीज़ के बारे में, जिसमें वह इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। बेशक अल्लाह राह नहीं दिखाता उसको, जो झूठा और हक़ न माननेवाला है। ३९.३

२५ ख़ल्क़ और हिदायत की कुव्वतें शुरकाऽ में नहीं

१ पूछ, तुम्हारे शरीकों में कोई है, जो पहली बार पैदा करे, फिर दोबारा पैदा करे? कह, अल्लाह पहली बार पैदा करता है और फिर दोबारा पैदा करेगा। तो तुम कहाँ उल्टे फिर जाते हो।

२ पूछ, तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है, जो हक़ की राह दिखाये? कह दे, अल्लाह हक़ की राह दिखाता है, फिर जो हक़ की राह दिखाता है, वह पैरवी किये जाने के ज्याद: लायक़ है? या वह, कि जो, बग़ैर बतलाये, ख़ुद ही राह न पाये। तो तुमको हुआ क्या है, कैसा फ़ैसला करते हो? १०.३४-३५

२६ शुरकाऽ मख्खी भी नहीं उड़ा सकते

१ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, सो इसको कान लगाकर सुनो। अल्लाह के सिवा तुम जिनको पुकारते हो वह हरगिज़ एक मख्खी भी नहीं बना सकेंगे, अगरचे उसके वास्ते सब इकट्ठा हो जायें। और अगर मख्खी उनसे कुछ छीन ले जाये, तो वह उससे छुड़ा नहीं सकते। कैसे बोदे हैं यह तालिब और मत्लूब? २२.७३

इख़्तिलाफ़—विरोध हक़—सत्य ख़ल्क़—सृष्टि पैरवी करना—अनुसरण करना मिसाल—दृष्टान्त, उदाहरण तालिब—याचक मत्लूब—याच्य।

४ अ़लीम

७ "अल्लाहुन्नूरु"

२७ नूरे-इलाही की मिसाल

१ अल्लाह आस्मानों का और जमीन का नूर है। इस नूर की मिसाल ऐसी है, जैसे एक ताक़ है, उसमें एक चिराग़ है। चिराग़ शीशे में है। शीशा गोया एक चमकता हुआ तारा है। चिराग़ रोशन किया जाता है, बरकतवाले दरख़्त यानी ज़ैतून से, जो न मश्रिक़ी है न मग़्रिबी। क़रीब है, कि उसका तेल रौशन हो जाय ख़ाह उसे आग न छूए। "नूर-अ'ला-नूर"। अल्लाह जिसको चाहता है, अपने नूर का रास्ता दिखलाता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज़ को जाननेवाला है।

२ यह ऐसे घरों में है, जिनको बुलंद करने का, और जिनमें अल्लाह के नाम याद करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। वहाँ सुबह व शाम उसकी याद करते हैं।

३ वह लोग, जिनको अल्लाह की याद, इक़ामते-सलात और अदायगीये-ज़कात से, न तिजारत ग़ाफ़िल करती है, न ख़रीद व फ़रोख़्त। वह, जो ऐसे दिन से डरते हैं, जिसमें दिल और आँखें उलट जायेंगी।

अ़लीम–ज्ञानमय अल्लाहुन्नूरु–ईश्वर प्रकाश है नूरे-इलाही–ईश्वरीय प्रकाश ताक़–आला बरकत–धन्यता, मंगलता नूर-अ'ला-नूर–प्रकाश पर प्रकाश बुलंद–ऊँचा इक़ामते-सलात–नित्य-नियमित प्रार्थना करना अदायगीये-ज़कात–दान देना ग़ाफ़िल–प्रमादी, असावधान फ़रोख़्त–बिक्री।

४ ताकि अल्लाह उनको उनके कामों का बेहतर से बेहतर बदला दे, और अपने फ़ज़्ल में से उनको ज़्यादती दे। और अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।

५ और जो लोग मुन्किर हैं, उनके आ'माल हैं, जैसे सहरा में सराब। जिसको प्यासा पानी समझता है; यहाँ तक, कि जब वह उसके पास आता है, तो उसको कुछ नहीं पाता। और वह पाता है ख़ुदा को अपने पास। पस, उसने उसका लेखा पूरा कर दिया, और ख़ुदा जल्द हिसाब लेनेवाला है।

६ या जैसे तारीकियां, एक गहरे समंदर में, जिस पर छायी हुई है मौज; उस मौज पर एक और मौज, और मौज पर बादल; तारीकियों पर तारीकियां। अपना हाथ जब बाहर निकलता है, तो देख नहीं पाता। और जिसे अल्लाह ने रौशनी नहीं दी, उसके वास्ते कोई रौशनी ही नहीं। २४.३५–४०

फ़ज़्ल–दया मुन्किर–नास्तिक आ'माल–कृति सहरा–जंगल सराब–मृगजल–तारीकियाँ–अँधेरा रौशनी–प्रकाश।

८ आ़लिमे-कुल

२८ अल्लाह दिलों का शाहिद; उसका अ़र्श पानी पर

१ आगाह। वह अपने सीनों को दोहराते हैं, ताकि उससे छुपायें। सुनो, जिस वक्त वह अपने कपड़े ओढ़ते हैं, अल्लाह जानता है, जो कुछ वह छुपाते हैं, और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं। बेशक वह सीनों के भेद से वाक़िफ़ है।

२ कोई ज़मीन पर चलनेवाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मः न हो। वह जानता है उसके ठहरने की जगह, और उसके सौंपे जाने की जगह। सब चीज़ें बयान करनेवाली क़िताब में, मौजूद हैं।

३ और वही है, जिसने छः दिन में आस्मान और ज़मीन को पैदा किया। और उसका अ़र्श पानी पर था, (और है); ताकि तुम्हारा इम्तिह़ान करे, कि कौन तुममें अच्छा काम करता है। और अगर तू कहे, कि मौत के बाद यक़ीनन् उठाये जाओगे, तो वह लोग, जो मुन्किर हैं, ज़रूर कहेंगे, कि यह तो महूज़ खुला जादू है।

११.५–७

२९ हर अ़मल का देखनेवाला

१ और तू किसी हाल में नहीं होता, और न तू अल्लाह की तरफ़ से कुछ क़ुर्आन की तिलावत करता है और न तुम लोग कोई काम करते हो, मगर हम तुम्हारे पास मौजूद होते हैं, जब कि

आ़लिमे-कुल–सर्वज्ञ शाहिद–साक्षी अ़र्श–सिंहासन आगाह–खबर्दार सीना–वक्ष भेद–छिपी हुई बात वाक़िफ़ होना–जानना महज़–केवल इम्तिह़ान–परीक्षा अ़मल–कृति, आचरण हाल–स्थिति।

तुम उसमें मश्ग़ूल होते हो। और तेरे रब से ज़र्रा भर कोई चीज़ नहीं छुपती, ज़मीन में न आस्मान में। और उससे न कोई छोटी न कोई बड़ी चीज़ है, जो इस बयान करनेवाली किताब में नहीं है। १०.६१

३० अल्लाह के पास ग़ैब की कुंजियाँ

१ और उसीके पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। और वह जानता है जो कुछ ख़ुश्की और समंदर में है। और कोई पत्ता नहीं झड़ता, मगर वह उसे जानता है। और कोई दाना ज़मीन के अंधेरों में नहीं गिरता और न कोई हरी चीज़, और न कोई सूखी चीज़, मगर बयान करनेवाली किताब में मौजूद है। ६.५९

३१ पाँच बातें, जिन्हें अल्लाह ही जानता है

१ बेशक क़ियामत का अ़िल्म अल्लाह ही को है। वही मेंह बरसाता है। और माँ के पेट में जो कुछ है, उसे वही जानता है। कोई नफ़्स नहीं जानता, कि कल वह क्या करेगा। और कोई नहीं जानता, कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्ला ही अ़लीम और ख़बीर है। ३१.३४

मश्ग़ूल—व्यस्त ज़र्रा—कण ख़ुश्की व समंदर—थल-जल
क़ियामत—अन्तिम दिन ख़बीर—सावधान।

३२ अल्लाह जानता है जो रिह्म में है

१ अल्लाह जानता है, जो हर मादा ह़मल में रखती है, और जो कुछ रिह्मों में कमी-वेशी होती है। और हर चीज़ उसके पास एक अंदाज़े से है।

२ वह पोशीद: और ज़ाहिर का जाननेवाला, आ'ला मर्तबत आ़लीशान है।

३ तुममें, जो चुपके से कहे और जो पुकारकर कहे, और जो रात में छुप जाये, और जो दिन में चले-फिरे, सब बराबर हैं।

१३.८–१०

३३ रगे-जान से भी नज़दीक

१ हमने इन्सान को पैदा किया है। और उसके जी में जो ख़्यालात आते रहते हैं, उन्हें हम जानते हैं। और हम उससे रगे-जान से ज़्यादह नज़दीक हैं। ५०.१६

३४ निगाहों को मुह़ीत करनेवाला

१ उसको निगाहें नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है और वह़ बारीक्-बीन और बाख़बर है। ६.१०३

३५ अव्वल, आख़िर, ज़ाहिर, बातिन

१ वह़ी है अव्वल, वही है आखिर। वही है ज़ाहिर, वही है बातिन। और वह सब कुछ जानता है। ५७.३

रिह्म–गर्भस्थान ह़मल–गर्भ अंदाज़ः–अनुमिति आला-मर्तबत–उच्च श्रेणी आलीशान–उच्च, प्रतिष्ठावान् रग–नस निगाह–दृष्टि मुह़ीत करनेवाला–घेरनेवाला बारीक्-बीन–सूक्ष्मदर्शी बातिन–गुप्त।

५ रहीम

६ रह्मान

३६ अल्लाहूतआ़ला के सिफ़ाते-आ़लिया

१ बेशक, वही पहली बार पैद: करता है। और वही दोबारा पैद: करेगा।

२ वही बख़्शनेवाला, मुहब्बत करनेवाला।

३ अ़र्श का मालिक, और अ़ज़मतवाला है।

४ जो चाहता है, कर गुज़रता है। ८५.१३–१६

३७ अल्लाह चाहता है, कि तुम्हारा बोझ हल्का करे

१ अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते खोल दे और दिखा दे तुमको, उन लोगों की राह जो तुमसे पहले थे। और तुमको मुआ़फ़ करे। और अल्लाह जाननेवाला हिकमतवाला है।

२ और अल्लाह चाहता है, कि तुम पर तवज्जो: करे। और जो लोग नफ़्सानी ख्वाहिशात के पीछे लगे हुए हैं, वह चाहते हैं, कि तुम राह से बहुत दूर जा पड़ो।

३ अल्लाह चाहता है, कि तुमसे बोझ हल्का करे। और आदमी नातवाँ पैदा किया गया है। ४.२६–२८

रहीम–करुणामय रह्मान्–कृपावान् अल्लाहूतआ़ला–सर्वोच्च परमात्मा सिफ़ाते-आ़लिया–सर्वोच्च गुण अज़्मत–महानता नफ़्सानी–वैषयिक ख्वाहिशात–कामनाएँ नातवाँ–दुर्बल।

३८ इस्लाह् रह्मत है

१ जब तेरे पास हमारी आयतों के माननेवाले लोग आयें तो तू कह दे कि तुम पर सलाम (अमन व रह्मत) हो। तुम्हारे रब ने रह्मत को अपना ज़िम्मः क़रार दिया है, कि तुममें से जो कोई नादानी से बुरा काम करे, फिर उसके बाद तौबः करे और अपनी इस्लाह् करे, तो वह बख़्शनेवाला मेहूरबान है। ६.५४

३९ मुआफ़ करनेवाला, सज़ा देनेवाला (ग़फ़्फ़ार और शदीदुल अिक़ाब)

१ बेशक, मेरा पर्वर्द्गार लोगों को उनकी ज़्यादतियों के बावजूद मुआफ़ करनेवाला है। और यह भी वाक़िआ है कि तेरा रब सख़्त सज़ा देनेवाला है। १३.६

४० क़बूलियते-तौबः के हुदूद

१ अल्लाह पर तौबः की क़बूलियत सिर्फ़ उन लोगों के लिए है, जो नादानी से बुराई करते हैं फिर जल्दी से तौबः करते हैं, पस, ऐसे ही लोगों को अल्लाह मुआफ़ करता है। और अल्लाह जाननेवाला, और हिकमतवाला है।

२ और उन लोगों के लिए तौबा की क़बूलियत नहीं है, जो बुराई करते रहते हैं। यहाँ तक कि, जब उनमें से किसीके आगे मौत आ जाती है, तो कहता है मैंने अब तौबः कर ली। और ऐसों के लिए भी नहीं, जो हालते-कुफ़्र में मरते हैं। ऐसे लोगों के लिए हमने एक दर्दनाक सज़ा तय्यार रखी है। ४.१७-१८

इस्लाह्—सुधार रह्मत—करुणा अमन—शांति नादानी—नासमझी
तौबः—पश्चात्ताप क़बूलियत—स्वीकृति हालते-कुफ़्र—नास्तिकता की स्थिति।

४१ नाक़ाबिले-मुआफी जुर्म

१ बेशक, अल्लाह इस बात को नहीं बख़्शेगा, कि उसके साथ शिर्क किया जाये। और उसके सिवा और गुनाह मुआफ़ करेगा, जिसके लिए चाहे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठहराये उसने यक़ीनन् बड़े गुनाह की बात बनाई। ४.४८

१० निअ़मतें

४२ रुहानी, अख़लाक़ी और माद्दी निअ़मतें

१ रह्मान ने।
२ सिखाया क़ुर्आन।
३ पैदा किया इन्सान को।
४ उसको बोलना सिखाया।
५ सूरज और चांद हिसाब से हैं।
६ और सितारे और दरख़्त सज्दः करते हैं।
७ और आस्मान को ऊँचा किया। और तराज़ू रखी।
८ कि तौल में बे-ऐ'तदाली न करो।
९ और इन्साफ से सीधी तौल तौलो और तौल में कमी न करो।
१० और ज़मीन बनाई मख़लूक़ के लिए।
११ उसमें मेवे हैं, और ग़िलाफ़्दार फलवाली खजूरें हैं।
१२ और अनाज भूसीवाला, और ख़ुश्बूदार फूल।
१३ पस, तुम दोनों अपने पर्वर्दिगार के किन-किन एह्सानात और करिश्मा-साज़ियों से मुकरोगे? ५५.१–१३

निअ़मतें–देनें दरख़्त–वृक्ष सज्दः–प्रणिपात ऐ'तदाली–सन्तुलन मख़्लूक़–प्रजा ग़िलाफ़–आवरण ख़ुश्बू–सुवास करिश्मासाज़ी–चमत्कार करना।

४३ मांगा सो सब दिया

१ अल्लाह् वह है, जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया। और आस्मान से पानी उतारा। फिर उससे तुम्हारे लिए मेवों का रिज़्क़ निकाला। और कश्तियों को तुम्हारे अिख़्तियार में कर दिया, कि उसके हुक्म से समंदर में चलें। और नदियों को तुम्हारे काम में लगाया।

२ और लगाया तुम्हारे काम में सूरज और चांद को जो कि लगातार चले जा रहे हैं। और रात और दिन को तुम्हारी ख़िद्मत पर मामूर किया।

३ और वह सब तुम्हें दिया, जो तुमने माँगा। और अगर तुम अल्लाह् की निअ़्मतों को गिनना चाहो, तो गिन नहीं सकते।
१४.३२–३४

४४ तख़्लीक़े-अज़्दाद रह़्मत है

१ कह, देखो तो, अगर अल्लाह् रोज़े-क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे, तो सिवाय ख़ुदा के कौन ह़ाकिम है, कि तुम्हारे पास कहीं से रोशनी लाये। फिर क्या तुम सुनते नहीं ?

२ कह, देखो तो, अगर अल्लाह् रोज़े-क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन कर दे, तो ख़ुदा के सिवा कौन ह़ाकिम है कि तुम्हारे पास ऐसी रात लाये, जिसमें तुम आराम पाओ। फिर क्या तुम सोचते नहीं ?

३ और अपनी मेह्रबानी से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाये कि उसमें आराम करो और उसका फ़ज़्ल चाहो, और ताकि तुम शुक्र करो। २८.७१–७३

रिज़्क़–रोजी इख़्तियार–अधिकार ख़िद्मत–सेवा मामूर–नियुक्त तख़्लीक़े-अज़्दाद–द्वन्द्व-निर्माण।

४५ इन्सान की ग़िज़ा

१ पस इन्सान अपने खाने की तरफ़ देखे ।
२ कि हमने ऊपर से ख़ूब पानी बरसाया ।
३ फिर हमने ख़ास तरह से ज़मीन को फाड़ा ।
४ फिर उसमें अनाज उगाया ।
५ और अंगूर और ग़िजाई पौदे ।
६ और ज़ैतून और खजूरें भी ।
७ और घने बाग़ ।
८ और मेवा और चारा ।
९ तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए । ८०.२४–३२

४६ दूध, अंगूर, शहद

१ बेशक, तुम्हारे वास्ते चौपायों में भी सबक़ है । उनके पेट की चीज़ों में से गोबर, और ख़ून के दर्मियान से ख़ालिस दूध, जो पीनेवालों के लिए खुश्गवार है, हम तुम्हें पिलाते हैं ।

२ और खजूर और अंगूर के फलों से भी, जिनसे तुम लोग नशः और अ़ुम्दा रिज़क़् बनाते हो । इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं ।

३ और पर्वर्द्गार ने शहद की मख्खी के जी में यह बात डाली कि "पहाड़ों में, और दरख़्तों में, और जहाँ-जहाँ ऊँची-ऊँची टट्टियाँ बाँधते हैं उनमें, घर बना ले ।"

चौपाये–चतुष्पाद ।

४ "फिर सब फलों में से खा। फिर अपने रब की हम्वार की हुई राहों पर चलती रह।" उनके पेट से एक रंग-बिरंग की पीने की चीज़ निकलती है, जिसमें लोगों के वास्ते शिफ़ाऽ है। बेशक इसमें निशानी है, उन लोगों के लिए जो सोचते हैं।

१६.६६—६६

४७ हिक्मत सबसे बड़ी देन

१ वह जिसे चाहता है हिक्मत देता है, और जिसे हिक्मत दी गई, ख़ैरे-कसीर (बहुत भलाई) दी गई। और अक़्लवाले ही नसीहत क़बूल करते हैं। २.२६६

हिक्मत—विवेक।

६ ख़ालिक़

११ ख़ालिक़े-कायनात

४८ अम्मन ख़म्सा

१ भला, किसने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को ! और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा। फिर हमने उससे रौनक़वाले बाग़ उगाये। उनके दरख़्त उगाने की क़ुद्रत तुमको न थी। क्या अल्लाह के साथ कोई और ह़ाकिम है ? नहीं। बल्कि वह ऐसे लोग हैं, कि रू-गरदानी किये जाते हैं।

२ आया, किसने ज़मीन को ठिकाना बनाया। और उसके बीच में नदियाँ बनायीं। और उसके वास्ते पहाड़ बनाये। और दो समंदरों के बीच ह़द्दे-फ़ासिल रखी। क्या है अल्लाह के साथ कोई और ह़ाकिम ? नहीं। बल्कि उनमें अक्सर समझते नहीं।

३ भला, कौन सुनता है बेक़रार की, जब वह उसको पुकारता है। और मुसीबत दूर कर देता है। और तुमको ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है। क्या, अल्लाह के साथ और कोई ह़ाकिम है ? तुम लोग कम ही ध्यान देते हो।

ख़ालिक़्–स्रष्टा ख़ालिक़े-कायनात–सृष्टि-निर्माता ख़मसा–पंचक अम्मन–केन, किसने अम्मन-ख़म्सा–केनपंचक रौनक़्–तेज, शोभा रू-गरदानी–मुँह फेरना हद्दे-फ़ासिल–दूर करनेवाली सीमा बेक़रार–अस्वस्थ मुसीबत–क्लेश, कष्ट ख़लीफ़ा–विश्वस्त।

४ आया, कौन है, जो तुमको ख़ुश्की और समंदर की तारीकियों में राह दिखाता है। और कौन भेजता है हवाओं को, अपनी रह्मत के आगे, ख़ुश्ख़बरी देनेवाली बनाकर। क्या, कोई और हाकिम है अल्लाह के साथ? अल्लाह बुलंद व बरतर है, उस चीज़ से, जिसे वह शरीक क़रार देते हैं।

५ भला, कौन पहिली बार पैदा करता है, फिर दोबारा करेगा। और कौन तुमको आस्मान से और ज़मीन से रिज़्क़ देता है। क्या, है और कोई हाकिम अल्लाह के साथ? कह, अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ। २७.६०–६४

४९ फिरिश्तों को पैदा करनेवाला

१ तारीफ़ सब अल्लाह ही के वास्ते है। जो आस्मानों और ज़मीन को पैदा करनेवाला। फ़िरिश्तों को क़ासिद बनानेवाला है, जो दो-दो, तीन-तीन और चार-चार परोंवाले हैं। तख़्लीक़ में जो चाहता है, बढ़ा देता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। ३५.१

५० नशोनुमा देनेवाला

१ बेशक अल्लाह फाड़नेवाला है दाना और गुठली को, ज़िन्दः को मुर्दः से निकालता है। और मुर्दः को ज़िन्दः से निकालने-वाला है। यह है अल्लाह। फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो?

२ सुबह की पौ फोड़नेवाला है। और उसीने रात बनायी राहत के लिए। और सूरज और चाँद हिसाब के लिए। यह ग़ालिब अि़ल्मवाले का अन्दाज़ा है।

बर्तर–श्रेष्ठ, अधिक अच्छा दलील–प्रमाण, सुबूत क़ासिद–संदेशवाहक नशोनुमा–विकास राहत–आराम फिरिश्ता–देवदूत।

३ और वही है, जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये। ताकि उनके ज़रीअः ख़ुश्की और समंदर की तारीकियों में राह पाओ। बेशक, हमने समझदार लोगों के लिए तफ़सील के साथ निशानियाँ बयान कर दी हैं।

४ और वही है जिसने तुम सबको एक जान से पैदः किया। फिर एक जाये-क़रार है। और एक सौंपने की जगह। यक़ीनन्, हमने उन लोगों के लिए जो सोचते हैं निशानियां खोल-खोल बयान कर दी हैं।

५ और वही है, जिसने आस्मान से पानी उतारा। फिर हमने उससे हर तरह की नबातात उगायी। फिर उससे सब्ज़ः उगाया, जिससे हम ऊपर तले चढ़े हुए दाने निकालते हैं। और खजूर के गाभे से फलों के गुच्छे, जो झुके होते हैं। और अंगूर के बाग़। और ज़ैतून और अनार, जो आपस में मिलते-जुलते हैं, और जुदा भी हैं। उसके फल की तरफ देखो, जब वह फलता है। और उसके पकने को। बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो ईमान रखते हैं। ६.९५–९९

५१ तख़्लीके-काएनात के अय्याम

१ कह, क्या तुम इसका इन्कार करते हो, जिसने दो दिन में ज़मीन पैदा की? और उसका हम्सर बनाते हो? यह है सारे जहाँ का रब।

२ और उसने ज़मीन में उसके ऊपर से पहाड़ रखे। और उसमें बरकत रखी। उसने चार दिन में उसकी पैदावार का अंदाज़ा ठहराया, पूरा-पूरा माँगनेवालों के लिए।

तफ़्सील—विस्तार नबातात—वनस्पति इन्कार—अस्वीकार हम्सर—समान अय्याम—दिन।

३ फिर आस्मान की तरफ़ तवज्जोः की। और वह धुवाँ था। फिर उससे और ज़मीन से कहा, तुम दोनों आओ, ख़ुशी से या नाख़ुशी से। दोनों बोले, हम आये ख़ुशी से।

४ पस दो दिन में उनको सात आस्मान बनाये। और हर आस्मान में उसका हुक्म उतारा। और इस क़रीब के आस्मान को चिराग़ों से सजाया, और मह्फ़ूज़ कर दिया। यह उस ग़ालिब अिल्मवाले का अंदाज़ा है। ४१.९–१२

५२ आग, पानी और अनाज का ख़ालिक़

१ क्या तुमने ग़ौर किया उस पर, जो तुम बोते हो?

२ क्या तुम उसको उगाते हो, या हम उगानेवाले हैं?

३ अगर हम चाहते, तो उसको चूरा-चूरा कर देते। फिर तुम बातें बनाते रह जाते।

४ कि हम पर तो तावान पड़ा।

५ बल्कि हम मह्रूम कर दिये गये।

६ क्या तुमने ग़ौर किया पानी पर, जो तुम पीते हो?

७ बादल से उसको तुमने उतारा, या हम उतारनेवाले हैं?

८ अगर हम चाहते, तो उसको खारी कर देते। फिर तुम क्यों नहीं शुक्र करते?

९ फिर क्या तुमने ग़ौर किया आग पर, जिसे तुम सुलगाते हो?

१० क्या उसका दरख़्त तुमने पैदा किया, या हम हैं पैदः करनेवाले?

११ हमही ने बनाया उसको नसीहत, और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए।

१२ पस तू अपने रब्बे-अ़ज़ीम के नाम की तस्बीह़ कर।

५६.६३–७४

तावान–जुर्माना, अर्थदण्ड तस्बीह़–जप करना, जयजयकार करना मह्रूम–वंचित रब्बे-अ़ज़ीम–महान् प्रभु।

५३ सबका सहारा

१ क्या उन लोगों ने अपने ऊपर परिंदों को नहीं देखा, पर फैलाये हुए, और कभी समेट लेते हैं। उनको कोई नहीं थाम रखता बजुज़ रह्मान के। बेशक, वह हर चीज़ को देखनेवाला है। ६७.१९

१२ अल्लाह की हसीन सनअ्त

५४ सनअ्ते-ख़ुदावंदी का नज़्म

१ बहुत बरकतवाला है वह, जिसके हाथ में बादशाही है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।
२ जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदः किया, ताकि तुमको जांचे कि कौन तुममें से ज्यादः अच्छा है अ़मल में। और वह ग़ालिब और बख़्शनेवाला है।
३ जिसने तह पर तह सात आस्मान बनाये। तू रह्मान की सनअ्त में कोई कसर नहीं देखेगा। फिर दोबारा निगाह डाल, तुझे कहीं दराड़ नज़र आती है?
४ फिर बार-बार निगाह डाल, तेरी निगाह लौट आयेगी नाचार और थकी हुई। ६७.१-४

५५ ख़ुदा ने मुतनासिब दुनिया बनायी

१ क्या हमने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया?
२ और पहाड़ों को मेखें?
३ और हमने तुमको जोड़े-जोड़े पैदा किया।
४ और हमने तुम्हारी नींद को सामाने-राहत बनाया।

परिंदे–पक्षी पर–पंख बजुज़–सिवा सनअ्त–कारीगरी, व्यवस्थित रचना नज़्म–व्यवस्था ख़ुदावंदी–ईश्वरीय, मालिक की क़ादिर–समर्थ नाचार–निरुपाय मुतनासिब–अनुपातयुक्त, सम्मित सामाने-राहत–विश्राम का साधन।

५ और रात को पर्दा बनाया।

६ और दिन को कमाई के लिए बनाया। ७८.६–११

५६ ऊंट वग़ैरः अज़ायबाते-क़ुद्रत

१ क्या वह ऊंटों की तरफ नहीं देखते कि वह कैसे बनाये गये ?

२ और आस्मान की तरफ, कि कैसे ऊँचा किया गया ?

३ और पहाड़ की तरफ कि कैसे नस्ब किये गये ?

४ और जमीन की तरफ, कि कैसी बिछायी गई ? ८८.१७–२०

५७ ग़ैब के बारे में दिमाग़ न लगाओ

१ हमने आस्माने-दुनिया को तारों की सजावट से सजाया।

२ और उसे हर सर्कश शैतान से महफ़ूज़ किया।

३ वह आ़लमे-बाला की तरफ कान नहीं लगा सकते और खदेड़ने के लिए हर तरफ से उन पर शिहाब फेंके जाते हैं।

४ और उनके लिए दायमी अ़ज़ाब है।

५ मगर जो झप से उचक ले, तो उसके पीछे एक चमकता शो'ला लगता है। ३७.६–१०

१३ आयाते इलाही

५८ एक पानी से मुख़्तलिफ़ फल

१ जमीन में पास-पास कई क़तअ़ हैं, और अंगूर के बाग़ हैं, और खेतियाँ हैं, और खजूरें हैं। एक की जड़ दूसरे से मिली हुई, और बा'ज़ बिन मिली अकेली ही। एक ही पानी सबको दिया जाता है। और हम बा'ज़ को बा'ज़ पर बढ़ा देते हैं फलों

अ़जायबात–अद्भुतताएँ नस्ब करना–गाड़ना सर्कश–विद्रोही महफ़ूज–सुरक्षित आ़लमे-बाला–उच्च लोक शिहाब–ज्वाला, शोले दायमी–नित्य अ़ज़ाब–शिक्षा शो'ला–अंगारा, ज्वाला क़तअ़–टुकड़े।

में। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए, जो अक़्ल से काम लेते हैं। १३.४

५९ क़ुद्रत की चंद निशानियां

१ उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से बनाया। फिर अब तुम इन्सान होकर ज़मीन पर हर तरफ़ फैल पड़े हो।

२ और उसकी निशानियों में यह है, कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाये, ताकि उनके पास तुम सुकून पाओ और तुम्हारे दर्मियान प्यार और रह्म पैदा किया। बेशक इसमें फ़िक्र करनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।

३ और उसकी निशानियों में से है, आस्मानों और ज़मीन का बनाना। और तुम्हारी बोलियों और रंगों का अलग-अलग होना। बेशक इसमें दानिश्मंदों के लिए निशानियाँ हैं।

४ और उसकी निशानियों में से है तुम्हारा रात में और दिन में सोना। और तुम्हारा उसके फ़ज़्ल को तलाश करना। बेशक इसमें निशानियाँ हैं उनके लिए, जो सुनते हैं।

५ और उसकी निशानियों में से यह है, कि वह तुमको बिजली दिखलाता है, जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी। और आस्मान से पानी उतारता है। फिर उससे ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िंद: करता है। बेशक इसमें अक़्ल-वालों के लिए निशानियाँ हैं।

क़ुद्रत—ईश्वरीय सामर्थ्य जिन्स—जाति सुकून—शांति।

६ और उसकी निशानियों में से यह है, कि उसके हुक्म से ज़मीन और आस्मान क़ायम हैं। फिर वह जब तुमको पुकारकर ज़मीन में से बुलायेगा, तो तुम उसी वक़्त निकल पड़ोगे। ३०.२०–२५

६० अल्लाह् सायः करनेवाला

१ क्या तूने अपने पर्वर्दिगार की तरफ नज़र नहीं की कि उसने साये को कैसे फैला रखा है। और अगर वह चाहता तो उसको ठहरा हुआ रखता। फिर हमने सूरज को उसकी अ़लामत बनायी।

२ फिर हमने उसको अपनी तरफ़ आहिस्ता-आहिस्ता समेट लिया। २५.४५–४६

६१ मुख़्तलिफ़ रंगों का पैदा करनेवाला

१ क्या तूने नहीं देखा, कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा। और फिर उससे हमने मुख़्तलिफ़ रंग के फल निकाले। और पहाड़ों में तबक़े हैं, सफीद और कई तरह के लाल और भुजंगे काले।

२ और इसी तरह आदमियों में और जानवरों में और चौपायों में भी, कई तरह के रंग हैं। अल्लाह से उसके बंदों में वही डरते हैं, जो जानते हैं। बेशक अल्लाह जबर्दस्त बख़्शनेवाला है। ३५.२७–२८

अ़लामत–निशानी तबक़े–स्तर मुख़्तलिफ़–विविध।

७ कादिरे-मुत्लक

१४ कादिर

६२ मुक़्तदरे-आला

१ कह, किसकी है ज़मीन, और जो इसमें हैं ? अगर तुम जानते हो।

२ वह ज़रूर कहेंगे, कि अल्लाह के हैं। तू कह, फिर तुम सोचते नहीं ?

३ कह, कौन है पर्वर्दिगार सातों आस्मानों का, और मालिक अर्शे-अज़ीम का ?

४ वह ज़रूर कहेंगे सब अल्लाह का है। कह, फिर तुम क्यों नहीं डरते ?

५ कह, किसके हाथों में हर चीज़ की बादशाही है ? और वह पनाह देता है। और उसके मुक़ाबले में पनाह नहीं दी जा सकती। अगर तुम जानते हो।

६ वह ज़रूर कहेंगे, कि अल्लाह के लिए। तू कह, फिर तुम पर कहाँ से जादू आ पड़ता है ? २३.८४–८९

६३ क़ियामत बर्पा करनेवाला

१ और वह नहीं समझे अल्लाह को, जितना कि वह है। क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी एक मुट्ठी में होगी। और आस्मान उसके दाहने हाथ में लिपटा हुआ होगा। वह पाक है, और बुलंद है उससे, जिसको वह शरीक क़रार देते हैं। ३९.६७

कादिरे—मुत्लक—सर्वसमर्थ मुक़्तदरे-आला—सर्वशक्तिमान् मालिक अर्शे-अज़ीम का—महान् सिंहासन का स्वामी क़ियामत बर्पा करनेवाला—प्रलयंकारी बुलंद—ऊँचा।

६४ बनानेवाला, सँवारनेवाला और मिटानेवाला

१ पर्वर्दिगारे-आलीशान के नाम की तस्बीह कर।
२ जिसने बनाया फिर दुरुस्त किया।
३ और जिसने अन्दाज़ा किया, और फिर राह दिखलायी।
४ और जिसने चारा निकाला।
५ फिर उसको स्याह कूड़ा-कर्कट कर डाला। ८७.१–५

६५ दोबारा ज़िन्दः करनेवाला

१ इन्सान ने ग़ौर नहीं किया, कि हमने उसको एक क़त्रे से पैदा किया। पस नागहाँ वह खुला झगड़ालू हो गया।
२ और हमारी निस्बत अजीब बातें बोलने लगा। और अपनी पैदाइश भूल गया। कहता है, कौन ज़िन्दः करेगा हड्डियों को, जो गल गयी हों।
३ कह, उनको वह ज़िन्दः करेगा, जिसने उनको पहली बार बनाया और वह सब तरह का पैदा करना जानता है।
४ जिसने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की, फिर अब तुम उससे आग सुल्गाते हो।
५ क्या वह, जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदः किया, इस बात पर क़ादिर नहीं, कि उनके जैसों को पैदः करे? क्यों नहीं? और वही पैदः करनेवाला और जाननेवाला।
६ उसका हुक्म यही है, कि जब किसी चीज़ का इरादः करता है तो उससे कहता है, "हो जाओ।" पस, वह हो जाती है।
७ तो पाक है वह ज़ात, जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाही है। और उसकी तरफ़ तुम सबको लौटकर जाना है।

३६.७७–८३

स्याह–काला कूड़ा–कचड़ा ग़ौर–चिन्तन क़त्रा–बिन्दु
नागहाँ–एकाएक निस्बत–बारे में सब्ज़–हरे।

१५ मुख़्तारे-कुल

६६ बेटा-बेटी देनेवाला

१ अल्लाह का राज है, आस्मानों में और ज़मीन में जो चाहता है, सो पैदा करता है। जिसको चाहता है, बेटियाँ देता है। और जिसको चाहता है, बेटे देता है।

२ या उनको जोड़े देता है, बेटे और बेटियाँ। और जिसको चाहता है, बे-औलाद रख देता है। बेशक वह बड़ा जाननेवाला, क़ुद्रतवाला है। ४२.४६–५०

६७ फ़लाह तेरे हाथ

१ कह, ऐ अल्लाह, मुल्क के मालिक, तू जिसको चाहे, मुल्क दे। और जिससे चाहे, मुल्क छीन ले। और जिसको चाहे, इज़्ज़त दे। और जिसको चाहे, ज़िल्लत दे। सब भलाई तेरे हाथ में है। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। ३.२६

६८ ख़ुदा मुख़्तार है, बंदा मज्बूर

१ तेरा पर्वर्द्‌गार जिसको चाहता है, पैदः करता है, और चुन लेता है। उनको मुत्लक़ इख़्तियार नहीं। अल्लाह पाक है, और उनके शिर्क से बुलंद है। २८.६८

६९ जिसे चाहे, रह्‌मत के लिए ख़ास करे

१ ......कह, फ़ज़्ल यक़ीनन् अल्लाह के हाथ में है। जिसको चाहे, दे। और अल्लाह बहुत वुसअ़तवाला, और जाननेवाला है।

२ जिसको चाहता है, अपनी रह्‌मत के लिए ख़ास करता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्लवाला है। ३.७३–७४

मुख़्तारे-कुल—सर्वसमर्थ, इच्छा—समर्थ इज़्ज़त—प्रतिष्ठा ज़िल्लत—अपमान, मानहानि वुसअ़तवाला—व्यापक फ़ज़्ल—दया, महत्ता।

७० ईमान मशिय्यते-इलाही पर मुनह़सिर है

१ किसी शख्स के लिए मुमकिन नहीं, कि अल्लाह की मशिय्यत के बग़ैर ईमान लाये। और गंदगी डाल देता है उन लोगों पर, जो अक़्ल से काम नहीं लेते। १०.१००

७१ अल्लाह ही शर्हे-सद्र करता है

१ जिसको अल्लाह राहे-रास्त दिखाना चाहता है, खोल देता है उसके सीने को, अपने इताअ़त के लिए। और जिसको गुम्राह रखना चाहता है, उसके लिए उसको तंग, बहुत तंग कर देता है। गोया वह ज़ोर से आस्मान पर चढ़ता है। इस तरह अल्लाह ईमान न रखनेवालों पर फटकार डालता है। ६.१२५

१६ सिफ़ाते-इलाही इह़ातए-बयान से बाहर

७२ "हुवल् अलीउल् अज़ीम"—आयतुल्कुर्सी

१ अल्लाह है कि उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं। ज़िन्दः है। सब का क़ायम रखनेवाला है, उसे न ऊँघ आती है, न नींद। उसीका है, जो कुछ आस्मानों में और जमीन में है। उसके पास, उसकी इजाज़त के बग़ैर, कौन सिफ़ारिश कर सकता है। वह जानता है, जो कुछ उन लोगों के आगे है, और जो कुछ उन लोगों के पीछे है। और वह लोग उसके अ़िल्म में से किसी चीज़ का इह़ाता नहीं कर सकते, मगर वह जो चाहे।

मशिय्यते-इलाही—ईश्वरेच्छा शर्हे-सद्र करता है—हृदय को विशाल करता है इह़ातए बयान से बाहर—अवर्णनीय हुवल् अलीउल् अज़ीम—वह सर्वोच्च महान् आयतुल् कुर्सी—ईश्वरीय सिंहासनविषयक संकेत (वचन)।

उसकी कुर्सी ने आस्मानों और ज़मीन को समा लिया है। और उन दोनों की निगह्बानी उसको थकाती नहीं। और वह बर्तर है, अज़्मतवाला है। २.२५५

७३ समंदर रौशनाई हो, तो भी नाकाफ़ी

१ कह, मेरे रब की बातें लिखने के लिए अगर समंदर स्याही हो, तो मेरे रब की बातें खतम होने के पहिले समंदर ख़र्च हो जाय। अगरचे हम वैसे ही दूसरे समंदर भी उसकी मदद के लिए लायें। १८.१०९

७४ अगर सब दरख़्त क़लम हो जायें

१ ज़मीन में जितने भी दरख़्त हैं, अगर वह क़लम हो जायें, और समंदर (स्याही हो जाय), उसके अलावा सात समंदर और हो जायें, तो भी अल्लाह की सिफ़ात का बयान तमाम नहीं होगा। बेशक अल्लाह ग़ालिब है, हिक्मतवाला है।

३१.२७

निगह्बानी—देखभाल सिफ़त—गुण दरख़्त-वृक्ष।

८ जिकरुल्लाह

१७ अल्लाह का नाम

७५ "अस्माउल्-हुस्ना"

१ दोज़खवाले और बेहिश्तवाले बराबर नहीं हो सकते। जो बेहिश्तवाले हैं, वह मुराद पानेवाले हैं।

२ अगर हम इस क़ुर्आन को किसी पहाड़ पर उतारते। तो तू देखता, कि वह अल्लाह के डर से दब जाता, फट जाता। और यह मिसालें, हम लोगों के लिए बयान करते हैं। ताकि वह सोचें।

३ वही अल्लाह है, जिसके सिवा और कोई हाकिम नहीं। पोशीदः और ज़ाहिर का जाननेवाला है। वह बहुत मेह्रबान, और निहायत रह्मवाला है।

४ वही अल्लाह है, जिसके सिवा और कोई हाकिम नहीं। वह बादशाह है, पाक ज़ात है, सलामतीवाला है, अमन देनेवाला, पनाह में लेनेवाला, ग़ालिब, ज़बर्दस्त, साहिबे-अ़ज़मत है। अल्लाह पाक है उस चीज़ से, जिसको यह शरीक ठहरा देते हैं।

५ वही है अल्लाह, पैदः करनेवाला, दुरुस्त करनेवाला सूरत बनानेवाला। उसीके लिए हैं सारे अच्छे नाम। उसकी तस्बीह करते हैं, जो कुछ आस्मानों में है, और ज़मीन में है। और वही ग़ालिब, हिक्मतवाला है। ५९.२०–२४

मुराद पाना–सफल होना पोशिदः–गुप्त पाकजात–पावन स्वरूप सलामतवाला–कल्याणकारी सूरत बनानेवाला–स्वरूपदाता।

६ दीदार और ता'लीमे-ग़ैबी

१८ दीदार और ता'लीमे-ग़ैबी

७६ मूसा अ़लैहिस्सलाम का मुशाहिदा और गुफ़्तगू

१ हमने मूसा से तीस रात का वा'दः किया, और उनको दस बढ़ाकर पूरा किया। फिर उसके पर्वर्दिगार की मुद्दत चालीस रातें पूरी हुईं। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, कि तू क़ौम में मेरा ख़लीफ़ा रहकर, काम को सँवारता रह। और मुफ़्सिदों की राह की पैरवी न कर।

२ और जब मूसा हमारे मुक़र्रर वक़्त पर आया। और उसके पर्वर्दिगार ने उससे कलाम किया। तो बोला, "ऐ मेरे पर्वर्दिगार! तू मुझे अपना दीदार दिखा, कि मैं तुझको देखूँ।" कहा, "तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा। लेकिन तू पहाड़ की तरफ़ देख। अगर वह अपनी जगह पर क़ायम रहा, तो अल्बत्ता तू मुझको देख सकेगा।" फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर तजल्ली की, तो उसने पहाड़ को चकनाचूर कर दिया। और मूसा ग़श खाकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया, तो बोला, "पाक है तेरी ज़ात। मैंने तेरी तरफ तौबः की। और मैं सबसे पहला ईमान लानेवाला हूँ।"

दीदार—साक्षात्कार ता'लीमे ग़ैबी—साक्षात्कार मुशाहिदा—दर्शन गुफ़्तगू—बातचीत मुफ़्सिद—झगड़ा करनेवाले कलाम किया—भाषण किया तजल्ली की—प्रकाश डाला, ज्योति प्रकट की ग़श खाना—मूर्च्छित होना।

३ कहा, ऐ मूसा ! अपने पैग़ामों के साथ, और अपने कलाम के साथ, मैंने तुझको लोगों पर इम्तियाज़ दिया । पस्, ले, जो कुछ मैंने तुझको दिया । और शुक्र-गुजारों में से हो जा ।

४ और हमने उसको तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी । कहा, उनको मज़्बूती से थाम ले । और अपनी क़ौम को हुक्म दे, कि वह उसकी बेहूतर बातों को पकड़े रहे । ७.१४२–१४५

७७ मूसा अलैहिस्सलाम को दीदार

१ क्या तेरे पास मूसा की ख़बर पहुँची ?

२ जब उसने एक आग देखी, तो अपने घरवालों को कहा, ठहरो ! यक़ीनन् मैंने एक आग देखी है । शायद मैं उससे तुम्हारे पास एक अंगारा ले आऊँ । या आग के पास पहुँचकर रास्ते का पता पाऊँ ।

३ फिर जब उसके पास पहुँचा, तो आवाज़ दी गयी "मूसा" !

४ बेशक मैं तेरा पर्वर्दिगार हूँ । सो अपनी जूतियाँ उतार डाल । तू मुक़द्दस मैदान "तवा" में है ।

५ और मैंने तुझको मुन्तख़ब कर लिया । पस, जो कुछ कि वह्य की जाती है वह सुन ।

६ बेशक, मैं जो हूँ, अल्लाह हूँ । मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं । सो मेरी अिबादत कर । और मेरी याद के लिए सलात क़ायम रख । २०.९–१४

इम्तियाज़—वैशिष्ट्य मुक़द्दस—पवित्र मुन्तख़ब किया—चुना

वह्य—ईश्वरीय ज्ञान, प्रज्ञान ।

७८ मुहम्मद स०...का आस्मानी मुशाहदः (मे'राज)

१ कसम् है सितारे की, जब कि वह नीचे झुके ।
२ तुम्हारा यह साथी न बहका न बेराह हुआ ।
३ और न वह ख्वाहिशे-नफ़्स से बोलता है ।
४ यह तो सिर्फ़ वह्य है, जो भेजी जाती है ।
५ ज़बर्दस्त कुव्वतवाले ने उसको सिखाया है ।
६ वह साहिबे ताक़त है । और पूरी सूरत में नमूदार हुआ ।
७ और वह आस्मान के बुलंद किनारे पर था ।
८ फिर वह नज़दीक हुआ । फिर और उतर आया ।
९ फिर दो कमान के बराबर फ़ासला रह गया । या उससे भी नज़्दीक ।
१० फिर हमने वह्य की अपने बंदे की तरफ़, जो कुछ कि वह्य की ।
११ जो देखा, उसको दिल ने झूठ नहीं समझा ।
१२ अब तुम उससे झगड़ते हो उस पर, जो उसने देखा ।
१३ और उसने उसको और भी एक बार उतरते हुए देखा है ।
१४ सिद्रतुल्मुन्तहा के पास ।
१५ उसके पास आराम से रहने का बेहिश्त है ।
१६ जब सिद्रः पर जो छा रहा था, सो छा ही रहा था ।
१७ उस वक्त निगह न तो हटी और न बढ़ी ।
१८ यक़ीनन् उसने अपने पर्वर्द्गार की बड़ी निशानियाँ देखीं ।

५३.१-१८

सलै अल्ला हुअलैहि व सल्लम-उस पर परमात्मा का आशीर्वाद और कृपा हो और रहे ख्वाहिशे नफ़्स-विषयवासना नमूदार-प्रकट ।

७९ ता'लीमे-ग़ैबी के तीन पहलू

१ किसी आदमी की ताक़त नहीं, कि अल्लाह उससे बात करे। मगर वह्य के ज़रीअ़: । या पर्दे के पीछे से । या कोई रसूल भेजे, कि वह पहुँचाये अल्लाह के हुक्म से, जो अल्लाह चाहे । यक़ीनन् वह बुलंद मर्तबा, और हिक्मतवाला है ।

२ और इसी तरह हमने तेरी तरफ़ अपने हुक्म से वह्य भेजी । तू नहीं जानता था, कि किताब क्या है, और ईमान क्या है। लेकिन हमने उसको एक ऐसी रौशनी बनायी, जिसके ज़रीअ़:, अपने बंदों में से हम जिसे चाहते हैं, हिदायत देते हैं। और बेशक तू लोगों को सीधी राह दिखलाता है।—

३ उस अल्लाह की राह, जिसके लिए है, जो कुछ आस्मानों में है, और जो कुछ जमीन में है। खबर्दार! अल्लाह की तरफ़ सब काम रुजूअ़ होंगे। ४२.५१–५३

८० एक रात हजार महीनों के बराबर है

१ हमने उसको (क़ुर्आन को) लैलतुल्क़द्र (बरकत और अ़ज़मत की रात) में उतारा ।

२ और तूने क्या जाना, कि लैलतुल्क़द्र क्या है ?

३ फज़ीलतवाली रात हजार महीनों से बेहतर है ।

४ उस रात में फ़िरिश्ते और रूह अपने पर्वर्द्गार के हुक्म से, हर काम के वास्ते उतरते हैं।

५ सलामती और रह्मत है वह रात, फ़ज्र तुलूअ़ होने तक । ९७.१–५

८१ वह्य के लिए जल्दी न कर

१ अल्लाह बुलंद मर्तबा है जो बादशाहे-हक़ीक़ी है। और तू क़ुर्आन के साथ जल्दी न कर, जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो चुके। और कह, ऐ पर्वर्द्गार! मुझे अ़िल्म में ज़्यादह कर। २०.११४

बुलंद मर्तबा—उच्चपदस्थ रुजूअ़—पेश फ़ज्र—सबेरा हक़ीक़ी—यथार्थ ।

१६ दुआ

८२ सुपुर्दगी

१ ···आस्मानों और ज़मीन के पैदः करनेवाले ! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा सरपरस्त है। मुझे फ़रमाँबरदारी की हालत में वफ़ात दे। और मुझे नेक बंदों में शामिल कर।

१२.१०१

८३ शुक्र-गुज़ारी

१ ·· ऐ मेरे पर्वद्'गार ! मुझे तौफ़ीक़ दे, कि मैं तेरी निअ्मतों का शुक्र करूँ। जो निअ्मतें तूने मुझे और मेरे माँ-बाप को अ्ता कीं। और वह नेक काम करूँ, जो तू पसंद करे। और मुझको, अपनी रह्मत से, अपने नेक बंदों में दाख़िल कर दे।

२७.१६

८४ आफ़ात से पनाह

१ कह, मैं सुब्ह के पर्वद्गार की पनाह लेता हूँ।
२ हर चीज़ की बदी से, जो उसने बनायी।
३ और अंधियारी की बदी से, जब कि वह छा जाये।
४ और उनकी बदी से, जो गिरहों में फूँकती हैं।
५ और हासिद की बदी से, जब कि वह हसद करे। ११३.१–५

८५ बुरे वस्वसों से पनाह

१ कह, मैं पनाह माँगता हूँ, लोगों के पर्वद्'गार की।
२ लोगों के बादशाह की।
३ लोगों के मा'बूद की।
४ वस्वसा डालनेवाले, पीछे हट जानेवाले की बदी से।
५ जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है।
६ जिन्नों में हों, या आदमियों में। ११४.१–६

सुपुर्दगी–शरणता वफ़ात–मृत्यु सरपरस्त–नाथ, संरक्षक फ़रमाँबरदारी–आज्ञापालन तौफ़ीक़–प्रेरणा आफ़ात–संकट हासिद–द्वेष्टा, ईर्ष्यालु वस्वसा–विकार।

३ अिबादत

—भक्ति

११ अि़बादत

२० हुक्मे-सलात

८६ सात अम्र

१ ऐ लिहाफ़ ओढ़नेवाले !
२ उठ। और लोगों को हुशयार कर।
३ और अपने पर्वर्द्गार की बड़ाई बोल।
४ और अपने नफ़्स को पाक रख।
५ और गंदगी से अलग रह।
६ ज़्यादह लेने की ग़रज़ से इह्सान न कर।
७ और पर्वर्द्गार के वास्ते सब्र कर। ७४.१–७

८७ सलात के लिए रात की अह्मियत

१ ऐ चादर में लिपटनेवाले
२ रात को उठकर, अि़बादत कर। मगर थोड़ी देर।
३ आधी रात। या उससे थोड़ा सा कम कर ले।
४ या उससे ज़्यादह कर। और सहेज-सहेजकर साफ़ क़ुर्आन पढ़।
५ बेशक, हम तुझ पर एक भारी बात डालनेवाले हैं।
६ बिला शुब्हः, रात को उठना नफ़्स के कुचलने में बहुत सख़्त है, और बात को सीधा करनेवाला है।
७ बेशक, तुझे दिन में बहुत काम रहता है।
८ और अपने पर्वर्द्गार का नाम लेता रह। और सबसे अलग होकर, उसकी तरफ़ मुतवज्जेः रह।

अम्र–विधि, आज्ञा लिहाफ़ ओढ़नेवाले–महम्मद (ज्ञानयुक्त) सब्र–धीरज अह्मियत–महत्त्व मुतवज्जेः रह–ध्यान दे।

९ वह मश्रिक और मग़्रिब का मालिक है। उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं। सो उसीको अपना कारसाज़ बना ले।

१० और वह लोग जो कुछ कहते रहें, वह सहता रह। और ख़ूबसूरती के साथ उनको छोड़ दे। ७३.१–१०

८८ अल्लाह् की याद मोऽद्बाना लह्जे में

१ जब क़ुर्आन पढ़ा जाय तो उसकी तरफ कान लगाओ और चुपके रहो। ताकि तुम पर रह्म किया जाय।

२ और अपने पर्वर्दिगार को अपने दिल में याद करता रह आजिज़ी और ख़ौफ़ के साथ। और कम आवाज़ से। सुब्ह और शाम। और ग़ाफ़िलों में से न हो जा।

३ बेशक, जो तेरे रब के नज़दीक हैं, वह उसकी अ़िबादत से तकब्बुर नहीं करते। और उसकी तस्बीह् करते हैं। और उसको सज्द: करते हैं। ७.२०४-२०६

८९ अल्लाह् कहो या रह्मान

१ अल्लाह कहकर पुकारो, या रह्मान कहकर। जो भी कहकर पुकारो, सारे अच्छे नाम उसीके लिए हैं ? और अपनी सलात बहुत बुलंद आवाज से न पढ़, और न चुपके पढ़। उसके दर्मियान राह इख़्तियार कर। १७.११०

९० इस्तिग़्फ़ार कर

१ तू यह जान, कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। और अपने गुनाह के वास्ते मुआ़फ़ी माँग। और ईमानवालों के लिए, और ईमानवालियों के लिए भी। और अल्लाह तुम्हारे चलने-फिरने की जगह और तुम्हारा ठिकाना जानता है। ४७.१९

मश्रिक–पूर्व मग्रिब–पश्चिम मोऽद्बाना–विनीत, आहिस्ता आजिज़ी–नम्रता ख़ौफ़–भय तकब्बुर–अहंकार लह्जा–स्वर इस्तिग़्फ़ार–क्षमा-याचना।

९१ अल्लाह की याद तिजारत और तमाशे से बेहतर

१ ऐ ईमानवालो ! जब नमाज़ के लिए जुमअ़ के दिन तुम्हें पुकारा जाय, तो अल्लाह की याद को दौड़ो। और खरीद व फ़रोख्त छोड़ो। अगर तुम समझते, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है।

२ फिर जब नमाज़ पूरी की जाये, तो ज़मीन में फैल जाओ। और अल्लाह का फ़ज़्ल ढूँढ़ो। और अल्लाह को बहुत याद करो। ताकि तुम्हारा भला हो।

३ और (लोग) जब देखते हैं सौदा बिकता या तमाशा, तो बिखर कर, उसकी तरफ दौड़ जाते हैं। और तुझको खड़ा छोड़ देते हैं। (उन्हें) कह, जो अल्लाह के पास है, वह तमाशे से और तिजारत से बेहतर है। और अल्लाह बेहतर रोज़ी पहुँचानेवाला है। ६२.६–११

९२ अल्लाह का ज़िक्र अक्बर है

१ जो किताब तेरी तरफ़ उतरी उसे पढ़। और सलात क़ायम रख। बेशक सलात बेहयाई और नामाक़ूल बातों से रोकती है। और अल्लाह की याद सबसे बड़ी है। और अल्लाह जानता है, जो कुछ तुम करते हो। २९.४५

९३ अल्लाह की याद से इत्मीनाने-क़ल्ब

१ ······खूब समझ लो, कि अल्लाह की याद दिलों को शांति से भरपूर कर देती है। १३.२८

बेहयाई–निर्लज्जता नामाक़ूल–अयोग्य ज़िक्र–सतत मनन
इत्मीनाने-क़ल्ब–मनःशांति ।

२१ सारी काएनात अल्लाह की बंदगी करती है

९४ बादलों की गरज तस्बीह् करती है

१ बादलों की गरज अल्लाह की तारीफ़ के साथ उसकी तस्बीह् करती है। और सब फ़िरिश्ते उसके ख़ौफ़ से तस्बीह् व तह्मीद करते हैं। १३.१३

९५ परिंदे ह्म्द करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा, कि आस्मान और ज़मीन में जो कोई है, और परिंदे पर खोले हुए, अल्लाह की तस्बीह् करते हैं; हरएक अपनी तरह् की सलात और तस्बीह् जानता है। और अल्लाह जानता है, जो कुछ वह करते हैं। २४.४१

९६ काएनात की तस्बीह् जो तुम नहीं समझते

१ सातों आस्मानों, और ज़मीन, और जो कोई उनमें है, उसकी तस्बीह् करते हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो तारीफ़ के साथ उसकी तस्बीह् न करती हो। लेकिन तुम उनकी तस्बीह् नहीं समझते। बेशक वह तम्हूमुलवाला, बख़्शनेवाला है। १७.४४

९७ साये सज्द: करते हैं

१ आस्मानों और ज़मीन में जो कोई है वह ख़ुशी-नाख़ुशी से अल्लाह को सज्द: करते हैं। और उनकी परछाइयाँ भी सुब्ह व शाम सज्द: करती हैं। १३.१५

काएनात–सृष्टि तह्मीद–स्तुति तह्म्मुलवाला–सहनशील।

९८ काएनात का सज्द:

१ क्या उन्होंने नहीं देखा, कि अल्लाह ने जो चीज़ें भी पैदा की हैं, उनके साये, दायें और बायें, अल्लाह को सज्द: करते हुए, ढलते हैं, और वह आजिज़ हैं।

२ और अल्लाह को सज्द: करते हैं जितने भी जानदार हैं, आस्मानों और ज़मीन में, और फ़िरिश्ते। और वह तकब्बुर नहीं करते।

३ डर रखते हैं अपने पर्वर्द्‌गार का, जो उन पर बालादस्त है। और करते हैं, जो हुक्म पाते हैं। १६.४८–५०

९९ सारी काएनात और बहुत से इन्सान सज्द: करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा, कि जो आस्मानों और ज़मीन में हैं, और सूरज और चाँद और तारे, और पहाड़ और दरख़्त और जानवर और आदमियों में से बहुत से लोग, अल्लाह को सज्द: करते हैं। २२.१८

आजिज़–नम्र तकब्बुर–घमंड बालादस्त–वरिष्ठ।

२२ ईमान

१०० इस्लाम और ईमान

१ गँवार कहते हैं, कि हम ईमान लाये। कह, तुम ईमान नहीं लाये। बल्कि तुम यह कहो, कि हमने अिताअत क़बूल कर ली है। अभी तुम्हारे दिलों में ईमान दाखिल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह का और रसूल का हुक्म मानो, तो अल्लाह तुम्हारे आ'माल से ज़रा भी कम न करेगा। बेशक अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है।

२ मोमिन सिर्फ़ वही है, जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाये, फिर शक न किया, और अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह की राह में जद्दो-जह्द की, यही लोग सच्चे हैं। ४९.१४-१५

१०१ तक़्वा, ईमान और नेक काम का मुसल्लस

१ जो लोग ईमान लाये, और नेक काम किये, वह लोग जो खाते हैं, उसमें गुनाह नहीं। जबकि वह तक़्वा इख़्तियार करें और ईमान लायें और नेक काम करें। फिर तक़्वा इख़्तियार करें और ईमान रखें। फिर तक़्वा इख़्तियार करें और नेक अमल करें। और अल्लाह नेकी करनेवालों से महब्बत करता है। ५.९६

१०२ जीना अल्लाह के लिए, मरना अल्लाह के लिए

१ कह, बिल्यक़ीन, मेरी सलात और मेरी अिबादत, और मेरा जीना, और मेरा मरना, सब अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहाँ का रब है। ६.१६२

इस्लाम–शरणता ईमान–निष्ठा अिताअत–शरणता त.क़्वा–संयम मुसल्लस–त्रिकोण मोमिन–भक्त।

१०३ हम अल्लाह के रंग में रँगे हैं

१ रंग दिया हमको अल्लाह ने। और रंग देने में अल्लाह से बेहतर कौन है ? और हम उसीके अिबादत-गुजार हैं। २.१३८

१०४ बाप को भी दोस्त न मानो, अगर वह मुन्किर हो

१ ऐ ईमानवालो ! अपने बापों, अपने भाइयों को, दोस्त न बनाओ; अगर वह लोग खुदा का इन्कार करने को, ईमान के मुक़ाबले में, अज़ीज़ रखें। और तुममें से जो लोग उनको दोस्त रखें, वही गुनहगार हैं।

२ कह, तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी बीबियाँ, और तुम्हारा कुन्बा, और वह माल जो तुमने कमाये हैं, और वह तिजारत जिसके मंदा पड़ जाने से तुम डरते हो, और वह मकानात जिनको तुम पसंद करते हो, अगर तुमको अल्लाह से, और उसके रसूल से, और उसकी राह में लड़ने से, ज्याद: प्यारे हैं, तो तुम इन्तिज़ार करो। यहाँ तक, कि अल्लाह अपना हुक्म भेजे। और अल्लाह् बेहुक्मी करनेवालों को अपना रास्ता नहीं बतलाता। ९.२३-२४

१०५ अदब बड़ा, उसकी इज़्ज़त बड़ी

१ ······बेशक, अल्लाह के पास तुममें सबसे ज़्याद: इज़्ज़त-वाला वह है, जो तुममें सबसे ज्याद: अदबवाला हो अल्लाह के साथ। और अल्लाह जाननेवाला, खबर्दार है। ४९.१३

मुन्किर—नास्तिक कुन्बा—घराना, परिवार माल—धन अदबवाला—नम्र, विनीत।

१०६ अल्लाह की मर्जी के हवाले

१ और किसी चीज़ के बारे में हर्गिज़ यह न कह, कि मैं कल यह करनेवाला हूँ।

२ मगर कह, कि "अगर अल्ला चाहे तो"··· १८.२३-२४

१०७ अि़मारत चट्टान पर, या धँसनेवाले कगार पर

१ भला, जिसने अि़मारत की बुनियाद अल्लाह के तक़्वा और उसकी रज़ामंदी पर रखी, वह बेह्तर है ? या वह, जिसने अपनी अि़मारत की बुनियाद खोखली घाटी के कगार पर रखी, जो गिरने को ही है ? फिर वह उसको लेकर, दोज़ख की आग में ढह पड़ी ············। ९.१०९

२३ ईसार और क़ुर्बानी

१०८ बेहूतरीन ब्योपार

१ ऐ ईमानवालो ! क्या मैं तुमको ऐसी तिजारत बतलाऊँ जो तुमको दर्दनाक अज़ाब से बचाये ?

२ अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह की राह में जद्दो-जहूद करो। यह तुम्हारे लिए बेहूतर है, अगर तुम समझ रखते हो।

६१.१०–११

१०९ सबसे बड़ा कारे-सवाब

१ क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे-हराम के आबाद करने को उस शख़्स के बराबर क़रार दिया, जिसने अल्लाह पर और रोज़े–आ़खिरत पर इ'तिक़ाद रखा और

ईसार और क़ुर्बानी—त्याग एवं समर्पण मस्जिदे-हराम—पूज्य प्रार्थना-स्थल, मक्का की मस्जिद ।

अल्लाह की राह में जद्दो-जहूद की। यह अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह बेइन्साफ़ लोगों को रास्ता नहीं दिखाता।

२ तो, जो ईमान लाये, जिन्होंने घरबार छोड़ा, और अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से लड़े, वह अल्लाह के नज़दीक दर्जे में बहुत बड़े हैं। और वही लोग मुराद को पहुँचनेवाले हैं। ६.१६-२०

११० बेहूतरीन ज़ख़ीरा

१ ऐ ईमानवालो! तुम उन लोगों की तरह न हो, जो मुन्किर हुए। और अपने भाइयों के बारे में, जब कि वह लोग परदेस में सफ़र को निकले हों, या लड़ते हों, कहते हैं, कि अगर वह हमारे पास रहते, तो न मरते, और न मारे जाते। ताकि अल्लाह उनके दिलों में इसको बाअिसे-हसरत बना दे। और अल्लाह ही जिलाता है। और अल्लाह ही मारता है। और अल्लाह ही तुम्हारा सब काम देखता है।

२ और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ, या मर जाओ, तो अल्लाह की बख़्शिश और रहमत बेहूतर है उस चीज़ से, कि वह जमा' करते हैं।

३ और अगर तुम मर गये, या मारे गये, तो बिज़्ज़ुरूर अल्लाह ही के पास जमा' किये जाओगे। ३.१५६-१५८

जद्दोजहद की-जूझा ज़ख़ीरा-संचय बाअिस-कारण हसरत-पश्चात्ताप, लालसा बिज़्ज़ुरूर-अवश्यमेव।

१११ ज़मीन में हर जगह सहारा

१ जो अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा, वह रूए-ज़मीन पर जाने की बहुत जगह और गुँजाइश पायेगा। और जो कोई अपने घर से हिज्रत करके, अल्लाह और रसूल की तरफ़ निकले, फिर उसको मौत आ जाये; तो अल्लाह के ज़िम्मः उसका सवाब मुक़र्रर हो चुका और अल्लाह बड़ा मग़्फ़रत करनेवाला, और बड़ा रहमतवाला है। ४.१००

११२ हुस्ने-सवाब

१ ······जिन्होंने वतन छोड़ा, और जो अपने घरों से निकाले गये। और मेरी राह में सताये गये, और लड़े, और मारे गये; तो ज़रूर उन लोगों की बुराइयाँ मैं दूर कर दूँगा। और उनको बाग़ों में दाख़िल करूँगा, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं। यह बदलः है अल्लाह की जानिब से। और अच्छा बदलः तो अल्लाह ही के पास है। ३.१९५

११३ दोनों सूरतों में फ़लाह

१ तो, हाँ! अल्लाह की राह में तो वह लोग लड़ें, जो दुन्या की ज़िन्दगानी आख़िरत के बदले बेचते हैं। और जो कोई राहे-ख़ुदा में लड़ें फिर मारा जाये या जीत ले; तो दोनों सूरतों में हम उसको बड़ा सवाब देंगे। ४.७४

रूएज़मीन—धरातल गुंजाइश—समाई, जगह हिज्रत—नेक काम के लिए वतन छोड़ना सवाब—प्रतिफल, पुण्य हुस्ने-सवाब—सद्गति, पुण्य-फल दोनों सूरतों में—उभय पक्ष में।

२४ आज़माइश और दिलासा

११४ जाँच ज़रूर होगी

१ क्या यह लोग ख्याल करते हैं, कि वह इतना कहकर छूट जायेंगे, कि "हम ईमान लाये;" और उनको जाँचा न जायगा ?
२ हमने उनसे पहिले जो थे, उनको ज़रूर जाँचा है। पस, अल्लाह मालूम करेगा उनको, जो सच्चे लोग हैं। और मालूम करेगा उनको, जो झूठे हैं। २६.२-३

११५ इम्तिहान होगा

१ हम तुमको ज़रूर आज़मायेंगे। ताकि हम तुममें से जिहाद करनेवालों और सब्र करनेवालों को मालूम कर लें, और तुम्हारी कैफ़ियात जान लें। ४७.३१

११६ मुहताजी भी निअ्मत है

१ अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोज़ी फ़राख़ कर दे तो वह दुन्या में उधम मचा दे। लेकिन वह जितनी चाहता है, नाप कर उतारता है। बेशक, वह अपने बंदों की खबर रखनेवाला, निगराँ है। ४२.२७

११७ बंदे की सअ्ी, अल्लाह की रहनुमाई

१ जिन्होंने हमारे लिए जद्दो-जहूद की, हम उनको अपनी राहें ज़रूर दिखा देंगे। बेशक, अल्लाह नेकी करनेवालों के साथ है। २६.६६

आज्माइश और दिलासा—कसौटी और आश्वासन जिहाद—धर्मयुद्ध मुहताजी—गरीबी फ़राख़—विस्तृत राह—मार्ग सअ्ी—दौड़धूप, प्रयत्न इम्तिहान—परीक्षा।

११८ मदद का वा'दः

१ हमारे बंदों, पैगंबरों के लिए हमारा यह क़ौल पहिले गुज़र चुका है ।—

२ कि बेशक, उनको ज़रूर मदद दी जायेगी । ३७.१७१-१७२

११९ मदद करनेवालों की मदद होगी

१ ऐ ईमानवालो ! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे, तो वह तुम्हारी मदद करेगा । और तुम्हारे पाँव जमा देगा । ४७.७

१२० अल्लाह नज़दीक है

१ जब मेरे बंदे तुझसे मेरे बारे में पूछें, (तो कह दे); मैं नज़दीक ही हूँ । पुकारनेवाले की पुकार का जवाब देता हूँ, जब कि वह मुझे पुकारता है । पस उनको चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें, और मुझ पर ईमान लायें । ताकि वह नेक राह पर आयें । २.१८६

१२१ अल्लाह कुव्वते-इम्तियाज़ देगा

१ ऐ ईमानवालो ! अगर अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, तो वह तुम्हें तमीज़ देगा । और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर करेगा । और तुमको बख़्शेगा । और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है । ८.२९

१२२ अल्लाह सकीनत उतारता है

१ वही है जिसने ईमानवालों के दिलों में तसकीन उतारी । ताकि उनको, अपने ईमान के साथ ईमान, और ज़्यादः हो.........। ४८.४

१२३ नजात हमारे ज़िम्मः

१ फिर हम अपने पैग़ंबरों, और उन लोगों को, जो ईमान

नेक राह—सन्मार्ग कुव्वते इम्तियाज—विवेकशक्ति सकीनत—शांति, सान्त्वना नजात—मुक्ति ।

लाये, नजात देंगे। उसी तरह हमारा ज़िम्मः है, कि मोमिनों को बचा लें। १०.१०३

२५ सब्र चाहिए

१२४ निशानी के लिए जल्दी न करो

१ आदमी जल्दी के ख़मीर का बना है। अन्क़रीब तुमको निशानियाँ दिखाऊँगा। पस तुम मुझसे जल्दी न करो। २१.३७

१२५ चढ़ने में देर लगती है

१ फ़िरिश्ते और रूह उसकी तरफ एक दिन में चढ़ते हैं जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार बरस है।

२ पस सब्र कर। अच्छा सब्र कर। ७०.४-५

१२६ ब-तद्रीज इर्तिकाऽ

१ क़सम खाता हूँ शफ़क़ की।

२ और रात की। और उनकी, जिनको वह समेट लेती है।

३ और चांद की जब वह पूरा हो जाये।—

४ कि तुम ज़रूर ज़ीना-ब-ज़ीना चढ़ोगे। ८४.१६-१६

सब्र—संयम मिक़्दार—संख्या फरिश्ते—देवदूत रूह—जीव
ब-तद्रीज—क्रम से इर्तिका—विकास ज़ीना-ब-ज़ीना—सीढ़ी-सीढ़ी से।

१२ नेक सुह्बत

२६ नेक सुह्बत

१२७ बड़ों का साथ

१ जो अल्लाह का और उसके रसूल का कहा माने, पस वह उन लोगों के साथ है, कि जिन पर अल्लाह ने इन्आम किया है। यानी नबी, और सिद्दिक़, और शहीद, और नेकबंदे और यह लोग, अच्छे साथी हैं।

२ यह अल्लाह की तरफ़ से फज़्ल है। और अल्लाह काफी जाननेवाला है। ४.६९-७०

१२८ नेकों से चिमटे रहो

१ अपने-आपको उनके साथ रोक रख, जो अपने पर्वर्द्‌गार को सुब्ह व शाम पुकारते हैं। उसकी रज़ा चाहते हैं। और दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ की चाह से तेरी आँखें उनसे फिर न जायें………। १८.२८

१२९ मुअ़ल्लिम का तरीक़ए-ता'लीम

१ फिर (मूसा अलैहिस्सलाम ने) हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया, जिसको हमने अपने पास से रह्मत अ़ता की थी, और अपने पास से उसको अ़िल्म दिया था।

२ उससे मूसा ने कहा, क्या मैं तेरे साथ रहूँ ? इसलिए, कि जो भली राह तुझको दिखायी गई है, वह तू मुझको सिखा दे।

नेक सुह्बत–सत्संगति नबी–सन्देश-वाहक सिद्दिक–सत्य-निष्ठ शहीद–सत्य के लिए जीवन न्यौछावर करनेवाला, हुतात्मा नेकबंदे–संत नेकी–सत्कृति रज़ा–प्रसन्नता, स्वीकृति मुअ़ल्लिम–गुरु तरीक़ए–ता'लीम–प्रबोध-पद्धति।

३ वह बोला ! तू हरगिज़ मेरे साथ सब्र न कर सकेगा ।
४ और तू क्योंकर सब्र करेगा ऐसी चीज़ के बारे में, कि जो तेरी समझ के इहातः में नहीं है ।
५ मूसा ने कहा ! अगर अल्लाह ने चाहा तो ज़रूर तू मुझे सब्र करनेवाला पायेगा । और मैं तेरे किसी हुक्म की ख़िलाफ़-वर्ज़ी नहीं करूँगा ।
६ वह बोला, फिर अगर तू मेरी पैरवी करता है तो मुझसे किसी बात के बारे में कोई सवाल न करना, जब तक मैं अपने-आप तेरे लिए उसके ज़िक्र की इब्तिदाऽ न करूँ । १८.६५–७०

१३० हुसूले-अ़िल्मे-दीन के लिए कुछ लोग पीछे रहें

१ मोमिनों के लिए मुनासिब नहीं, कि सबके सब कूच कर जायें । उनकी हर जमाअ़त में से एक हिस्सा क्यों न कूच करे, ताकि (बाक़ी लोग) दीन में समझ हासिल करें । और ताकि ये लोग अपनी क़ौम को, जब कि वह लौटकर आयें, होशियार करें ताकि वह बचें । ६.१२२

१३१ नेकोकारों की जमाअ़त बनाओ

१ ऐ ईमानवालो ! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, जैसा कि चाहिए । और ऐसी ही हालत में मरना, कि तुम पूरी तरह अल्लाह के मुतीअ़ हो ।

खिलाफ-वर्ज़ी–विरोध इहाता–क्षेत्र नेकोकार–सज्जन जमाअ़त–समूह, समाज मुतीअ–आज्ञाकारी ।

२ और तुम सब इकट्ठा अल्लाह की रस्सी मज़बूत पकड़ो और मुतफ़र्रिक़ न हो जाओ। तुम्हारे ऊपर अल्लाह की जो निअ्मत है, उसे याद करो। कि जब तुम आपस में दुश्मन थे तो अल्लाह ने तुम्हारे दिल में उल्फ़त डाली, और अब तुम उसकी निअ्मत से भाई-भाई हो गये। और तुम आग के एक गढ़े के किनारे पर थे सो तुमको अल्लाह ने उससे नजात दी। इस तरह अल्लाह अपनी निशानियाँ तुम्हारे वास्ते बयान करता है। ताकि तुम राह पाओ।

३ और तुममें से एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए जो भलाई की तरफ बुलाती रहे, और अच्छे कामों का हुक्म करे और बुराई से मना' करे। यही लोग हैं जो मुराद पानेवाले हैं।

३.१०२–१०४

१३२ परिंदों की भी उम्मतें

१ ज़मीन में चलनेवाले जो भी जानदार हैं, और अपने दोनों बाज़ुओं से उड़नेवाले जो भी परिंदे हैं, तुम्हारी ही तरह उम्मतें हैं............। ६.३८

मुतफ़र्रिक़–जुदा-जुदा उम्मत–समाज।

१३ दुन्या से नाफ़रेफ़्तगी

२७ "यह दुन्या आनी-जानी है" इसका इह्सास.

१३३ उजड़ा बाग़

१ दुन्या की ज़िन्दगानी की हालत तो ऐसी है, जैसे हमने आस्मान से पानी बरसाया। फिर उससे ज़मीन की नबातात, जिसको आदमी और जानवर खाते हैं, खूब गुंजान होकर निकली। यहाँ तक, कि जब उसने अपना सिंगार किया, और खुश्नुमा हुई, और ज़मीनवालों ने यह ख्याल किया, कि यह फ़स्ल अब हमारे हाथ लगेगी, नागाह उसपर हमारा .हुक्म रात को या दिन को जा पहुँचा। फिर हमने उसको काटकर भूसी का ढेर कर डाला। गोया कि कल वहाँ वह मौजूद भी न थी। इस तरह हम निशानियों को मुफ़स्सिल बयान करते हैं उन लोगों के लिए, जो ग़ौर करते हैं। १०.२४

१३४ फ़स्ल पर पाला

१ लोग इस दुन्या की ज़िन्दगी में जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे एक हवा हो, जिसमें पाला हो। वह हवा लग जाये ऐसे लोगों की खेती को, कि जिन्होंने अपने हक़ में बुरा किया था। उस हवा ने उसे बर्बाद कर डाला। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया। बल्कि वह ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं। ३.११७

नाफ़रेफ़्तगी--अनासक्ति इहसास--भावना नागाह–एकाएक मुफ़स्सिल–विस्तृत पाला–हिमवर्षा हक में–हित में।

१३५ दुन्या को सबात नहीं

१ दुन्या की ज़िन्दगी की मिसाल उनसे बयान कर। जैसे हमने आस्मान से पानी उतारा। फिर उससे ज़मीन की नबातात गुंजान हो गईं। फिर वह ऐसा चूरा चूरा हो गईं कि हवाएँ उसे उड़ाये फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

२ माल और औलाद दुन्या की ज़िन्दगानी की आज़माइश है। और बाकी रहनेवाली नेकियाँ, तेरे पर्वद्'गार के नज़दीक सवाब में बेहतर हैं। और आरज़ू के लिहाज़ से भी बेहतर हैं।

१८.४५-४६

१३६ दुन्या की ज़ीनत आज़माइश के लिए

१ बेशक जो कुछ ज़मीन के ऊपर है, उसे हमने उसकी ज़ीनत बनायी है। ताकि लोगों को आज़मायें, कि उनमें से कौन अच्छा काम करता है। १८.७

१३७ दाऽइमी ज़िन्दगी का पट्टा किसीको नहीं

१ हमने तुझसे पहिले किसी आदमी के लिए हमेशा की ज़िन्दगी नहीं बनायी। फिर क्या अगर तू मर गया तो यह लोग हमेशा ज़िन्द: रहेंगे?

२ हर जी को मौत चखनी है। और हम तुमको बुरी और भली हालतों से खूब जानते हैं। और हमारे ही पास तुम लौटाये जाओगे। २१.३४-३५

१३८ क्या तुम महफ़ूज़ रहोगे?

१ क्या तुमको उन चीजों में जो यहाँ हैं, बेखटके छोड़ दिया जायेगा?
२ बाग़ों में और इन चश्मों में?
३ और खेतों में और खजूरों में जिनके ख़ोशे टूटे पड़ते हैं?
४ और तुम पहाड़ों में घर तराशते रहोगे, इतराते हुए?

२६.१४६-१४९

सबात—स्थैर्य आर्ज़ू—आकांक्षा लिहाज से—दृष्टि से ज़ीनत—शोभा महफ़ूज़—सुरक्षित।

१३९ दुन्या की ज़िन्दगी महज़ दिल्बहलाव

१ यह दुन्या की ज़िन्दगी तो बजुज़ बहलाव और खेल के कुछ नहीं है। और हक़ीकत में आखिरत का घर ही ज़िन्दगी है। काश यह लोग जानते। २९.६४

१४० तमन्नाओं के मौज़ूअ्

१ मर्ग़ूब चीज़ों की महब्बत ने लोगों को फ़रेफ़्ता किया है। जैसे औरतें, बेटे, सोने और चाँदी के जमा किये हुए ढेर, निशान लगे हुए घोड़े, मवेशी और खेती। यह दुनयवी ज़िन्दगी की पूँजी है। और अल्लाह ही के पास अच्छा ठिकाना है। ३.१४

२८ गैर आलूदगी (वैराग)

१४१ ऐशो-आराम पर निगाह न डालो

१ और अपनी आँखें उन चीज़ों की तरफ न पसारो, जो हमने उनमें से मुख्तलिफ लोगों को दुन्यवी जिन्दगी क़ी रौनक़ के तौर पर, फ़ायदा उठाने के लिए दे रखी हैं। ताकि उनको इनमें जाँचें। और तेरे पर्वर्दगार का रिज़्क बेह्तर है। और बहुत बाक़ी रहनेवाला है। २०.१३१

१४२ बीवी-बच्चों में बा'ज़ दुश्मन हो सकते हैं

१ अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। और ईमानवालों को चाहिए, कि अल्लाह ही पर तवक्कुल करें।

२ ऐ ईमानवालो! तुम्हारी बाज़ बीवियाँ और औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं। सो तुम उनसे बचो! और अगर उनको मुआफ़ करो, और दर्गुज़र करो, और बख्श दो, तो बेशक अल्लाह बख्शनेवाला मेह्रबान है। ६४.१३-१४

तमन्नाओं के मौज़ूअ्--वासनाविषय मरग़ूब--प्रलोभन देनेवाला फ़रेफ़्ता--आसक्त दर्गुज़र करना--देखकर अनदेखा करना।

१४३ बेलौस रहो

१ तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे लिए आज़माइश हैं। और अल्लाह ही के पास बड़ा सवाब है।

२ तो, हत्तुल इम्कान अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। और सुनो, और मानो। और उसकी राह में खर्च करो। इसमें तुम्हारा अपना भला है। ज़ो कोई अपनी नफ़्सानी हिर्स से बचा लिया जाय, तो वही लोग फ़लाह पानेवाले हैं। ६४.१५-१६

१४४ शैतान से होशियार

१ ऐ लोगो! यक़ीनन् अल्लाह का वा'दः सच्चा है। पस, तुमको दुन्यवो ज़िन्दगानी धोके में न डाले। और शैतान दग़ाबाज़ अल्लाह के बारे में तुमको हर्गिज़ दग़ा न दे।

२ बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है। तो तुम भी उसको दुश्मन समझो। वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है, कि वह दोज़ख़वालों में हो जायें। ३५.५-६

१४५ दोनों जहानों की खेती

१ जो कोई आख़िरत की खेती चाहता है, हम उसको खेती में ज़्यादः देते हैं। और जो कोई दुन्या की खेती चाहता है, उसको हम दुन्या में से कुछ देते हैं। और उसके लिए आख़िरत में कुछ हिस्सः नहीं। ४२.२०

बेलौस–निःस्वार्थ हिर्स–लालच हत्तुल्इम्कान–यथासंभव।

४ आ़बिद और मुल्हि़द

१४ आ़बिद के सिफ़ात

२९ आ़बिद के पहलू

१४६ दस औसाफ़

१ अ़िताअ़त-गुज़ार मर्द और अ़िताअ़त-गुज़ार औ़रतें। और ईमान-वाले मर्द, और ईमानवाली औ़रतें। और फ़र्माबर्दार मर्द, और फ़र्माबर्दार औ़रतें। और सच्चे मर्द और सच्ची औ़रतें और सब्र करनेवाले मर्द, और सब्र करनेवाली औ़रतें। आ़जज़ी करनेवाले मर्द और आ़जज़ी करनेवाली औ़रतें। सद्क़ा करनेवाले मर्द और सद्क़ा करनेवाली औ़रतें। रोज़ा रखनेवाले मर्द, और रोज़ा रखनेवाली औ़रतें। और अपनी अ़िस्मत की ह़िफ़ाजत करनेवाले मर्द, और अपनी अ़िस्मत की ह़िफ़ाजत करनेवाली औ़रतें। और अल्लाह को बहुत याद करनेवाले मर्द, और अल्लाह को बहुत याद करनेवाली औ़रतें। इनके लिए अल्लाह ने अपनी बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है। ३३.३५

३० खुदा के परस्तार

१४७ रात में जागनेवाले

१ बेशक मुत्तक़ी बाग़ों और चश्मों में होंगे।
२ लेते रहेंगे, जो उनका पर्वर्दिगार उनको देगा।
वह इससे पहिले नेकी करनेवाले थे।
३ वह रात को थोड़ा सोते थे।
४ और जागकर, पिछली रात में, गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगते थे।
५ और उनके मालों में मांगनेवालों का और नादारों का हक़ था।
५१.१५-१९

औसाफ़—गुण, लक्षण इताअतगुजार—शरणागत फर्माबरदार—आज्ञाकारी, दीन रोजा—उपवास इस्मत—चरित्र, पवित्रता परस्तार—उपासक।

१४८ उनके पहलू बिस्तरों से लगते नहीं

१ हमारी आयतों को वही मानते हैं, कि जब उनको आयतों के ज़रीअ़: समझाया जाता है तो वह सज्द: में गिर पड़ते हैं। और अपने रब की तारीफ के साथ तस्बीह़: करते हैं। और तकब्बुर नहीं करते।

२ उनके पहलू बिछौने से जुदा रहते हैं। अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं। और हमारा दिया हुआ हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

३ और कोई नहीं जानता, कि उनके वास्ते उनकी आंखों को ठंडक पहुँचानेवाली क्या-क्या चीज़ें छुपाकर रखी गई हैं। यह सिल: है उसका, जो वह करते थे। ३२.१५–१७

१४९ पेशानी पर घट्टे

१ ....तू देखे उनको रुकूअ् करते हुए, सज्द: करते हुए, अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामंदी तलाश करते हुए। उनकी शिनाख़्त उनकी पेशानियों पर सज्दे के घट्टे हैं। (और चेहरों पर खास क़िस्म का नूर और रौनक़ है)। यही है उनकी मिसाल तौरात में और यही है उनकी मिसाल इंजील में। जैसे कि खेती ने अपना अंखुआ निकाला। फिर उसको मज़बूत किया। फिर मोटा हुआ। और अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया। कि किसानों को ख़ुश करने लगा.........। ४८.२९

सिला–प्रतिफल, मुआविज़ा   रुकुअ–प्रणाम   सज्द:–प्रणिपात
शिनाख़्त–पहचान   अंखुआ–अंकुर।

१५० लरज़ते दिल

१ ईमानवाले वही हैं, कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो उसके दिल लरज़ जाते हैं। और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह आयतें उनका ईमान बढ़ा देती हैं। और वह अपने पर्वर्दगार पर ही भरोसा रखते हैं। ८.२

१५१ आजज़ी करनेवाले

१ ······खुश्ख़बरी दे आजज़ी करनेवालों को,

२ कि जिनके दिल लरज़ उठते हैं, जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है। और जो सब्र करनेवाले हैं मुसीबत पर, जो उन पर आती है। और जो सलात को क़ायम करनेवाले हैं। और जो हमारे दिये में से ख़र्च करते हैं। २२.३४-३५

१५२ रहूमान के बंदे

१ बहुत बरकतवाला है वह, जिसने आस्मान में बुर्ज बनाये, और उसमें एक चिराग़ और रोशन चांद बनाया।

२ और वही है जिसने बदलते-सदलते रात और दिन बनाये। यह सब उनके वास्ते निशानात हैं, जो सोचना चाहते हैं, और शुक्र करना चाहते हैं।

३ और रहूमान के बंदे वह हैं, जो ज़मीन पर आजज़ी से चलते हैं। और बेसमझ लोग उनको मुख़ातिब करते हैं, तो कहते हैं कि "सलाम है।"

४ और जो लोग अपने पर्वर्दगार के आगे सज़्दे में और क़ियाम में (खड़े), रात गुज़ारते हैं। २५.६१-६४

लर्ज़ते हैं—काँपते हैं बुर्ज—राशि, नक्षत्रमण्डल मुख़ातिब करना—बोलना।

३१ रासिखुल अक़ीदः

१५३ रज़ाजोई में खुदफ़रोशी

१ लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह की रज़ाजोई के लिए अपनी जान को वेचते हैं। और अल्लाह अपने बंदों पर शफ़क़त करनेवाला है। २.२०७

१५४ बाहमी दोस्त

१ बेशक जो लोग ईमान लाये, और वतन छोड़ा, और माल और जान से अल्लाह की राह में लड़े, और जिन लोगों ने उन्हें जगह दी, और मदद की, यह लोग बाहम एक-दूसरे के दोस्त हैं......। ८.७२

१५५ अल्लाह के दोस्त (औलियाऽ-अल्लाह)

१ याद रखो ! जो अल्लाह के दोस्त हैं, उन पर न डर है, और न वह ग़मगीन होंगे।

२ यह वह लोग हैं, जो ईमानवाले हैं, और पर्हेज़गारी से रहते हैं।

३ उनके लिए, दुन्या की ज़िन्दगी में, जौर आखिरत में, खुशखबरी है। अल्लाह की बातों के लिए तब्दीली नहीं। यही बड़ी कामियाबी है। १०.६२–६४

१५६ अल्लाह का गिरोह

१ तू न पायेगा ऐसे लोगों को, जो अल्लाह और योमे-आखिरत पर ईमान रखते हों कि वह उन लोगों से दोस्ती रखते हों, जो अल्लाह और उसके रसूल के मुखालिफ़ हैं। ख्वाह, वह उनके बाप या उनके बेटे, या उनके भाई, या उनके घराने के लोग हों।

रासिखुल् अक़ीदः–दृढ़निष्ठ खुद्फ़रोशी–अपने को वेचना शफ़क़त–ममता, दयादृष्टि ग़मगीन–दुःखी खुशखबरी–शुभवार्ता मुखालिफ़–विरुद्ध ख्वाह–चाहे फ़ैज़–दानशीलता गिरोह–मंडली

यही लोग हैं, जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है। और जिनकी अपने फ़ैज़ से मदद की है। और वह उनको ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वह उनमें हमेशः रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी, और वह अल्लाह से राज़ी। यह लोग अल्लाह के गिरोह हैं। खूब सुन लो, कि अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह् पानेवाला है। ५८.२२

३२ साबिर

१५७ मुतहम्मिल

१ ऐ ईमानवालो! कठिनाई में सब्र और सलात से मदद चाहो। बेशक अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है।

२ और जो अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, उनको मरा हुआ मत कहो। वह तो ज़िन्दः हैं। लेकिन तुम नहीं समझते।

३ और हम तुमको ज़रूर आज़मायेंगे। किसी कद्र डर और भूक से और मालों और जानों और फलों के नुक़सान से। और खुशखबरी दे सब्र करनेवालों को।

४ कि जब उनको मुसीबत पहुँचे, तो कहें ; हम तो अल्लाह के हैं। और हम उसी तरफ लौट जानेवाले हैं।

५ ऐसे लोगों पर उनके पर्वर्द्गार की जानिब से अिनायतें हैं और रह्मत हैं। और यही लोग सही़ह् राह पर हैं। २.१५३-१५७

साबिर, मुतहम्मिल—धीर अिनायत—कृपा।

३३ अहिंसा पसंद (बेआज़ार)

१५८ मुआफ़ करनेवाले

१ अपने पर्वर्द्गार की बख़्शाइश की तरफ दौड़ो। और जन्नत की तरफ़, जिसकी वुसअ़त आस्मान और ज़मीन है। जो तय्यार की गई है, मुत्तक़ियों के लिए।

२ जो ख़ुश्हाली और तंगी में अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं। और ग़ुस्सा पी जानेवाले हैं। और लोगों से दर्गुज़र करनेवाले हैं। और अल्लाह नेकी करनेवालों को मह्बूब रखता है।—

३ और उन लोगों को, जो जब बेहूयाई का काम करते हैं, या अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं, तो उन्हें अल्लाह याद आता है। पस अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगते हैं। और अल्लाह के सिवा कौन है, जो गुनाहों को बख़्शे। और जानते बूझते, वह अपने किये पर इस्रार नहीं करते।

४ यही लोग हैं, जिनकी जज़ाऽ उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश है। और बाग़ात, जिनके नीचे नह्रें बहती हैं। यह लोग हमेशा उनमें रहेंगे। अ़मल करनेवालों का यह क्या ख़ूब अज्र है।

३.१३३—१३६

१५९ सख़ी

१ यह अल्लाह की महब्बत पर, मुह्ताज और यतीम और क़ैदी को, खाना खिलाते हैं।

२ महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए खिलाते हैं। (कहते हैं) हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं, न शुक्रगुज़ारी।

वसअ़त—व्याप सख़ी—उदार रज़ाजोई—प्रसन्नता, ढूँढ़ना महज़—केवल यतीम—अनाथ।

३ हम अपने रब से ख़ौफ़ रखते हैं, एक मुँह बनानेवाले और त्यौरी चढ़ानेवाले दिन का ।

४ फिर अल्लाह ने उनको उस दिन की बुराई से बचा लिया । और उनको ताज़गी और ख़ुशी से मिला दिया । ७६.८-११

१६० बाहमी मशूवरे से काम करनेवाले

१ और जो लोग गुनाहों और बेहूयाई के कामों से बचते हैं । और जब उन्हें ग़ुस्सा आता है, तो मुआ़फ़ कर देते हैं ।

२ और जिन लोगों ने अपने पर्वर्दगार का हुक्म माना, और सलात क़ायम की । और उनका काम बाहमी मश्वरे से होता है । और हमारे दिये में से हमारी राह में खर्च करते हैं । ४२.३७-३८

१६१ जोड़नेवाले

१ और वह लोग जो जोड़ते हैं उसको जिसके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है । और अपने रब से डरते हैं । और बुरे हि़साब का अंदेशा रखते हैं ।

२ अपने पर्वर्द्गार की रज़ा चाहने के लिए सब्र करते हैं । और सलात को क़ायम करते हैं । और हमने जो उन्हें दिया है, उसमें से हमारी राह में ज़ाहिर और पोशीदः खर्च करते हैं । और नेकी से बदी को दूर करते हैं । यही लोग़ हैं, जिनके लिए नेक अंजाम है । १३.२१-२२

३४ आबिदों को मुबारकबाद

१६२ शैतान का बस किन लोगों पर नहीं

१ बेशक, जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा (शैतान का) ज़रा भी बस नहीं चलेगा । मगर गुमराहों में, जो तेरी राह चलें । १५.४२

त्यौरी–भ्रुकुटि अंजाम–अन्त मुबारकबाद–अभिनंदन बिहिश्त–स्वर्ग दोज़ख–नरक ।

१६३ आ़बिदों के लिए फ़िरिश्तों की दुआ़

१ जो फ़िरिश्ते कि अ़र्शे-इलाही उठा रहे हैं, और जो उनके गिर्दा-गिर्द हैं, वह अपने पर्वर्द्गार की तस्बीह़ और तह़मीद बयान करते हैं। और उस पर ईमान रखते हैं। और ईमानवालों के लिए मग़्फ़िरत माँगते हैं, "कि ऐ हमारे पर्वर्द्गार! तेरी रह़मत और तेरे अ़िल्म ने हर चीज़ को समा लिया है। तो जो लोग तौबः करें, और तेरी राह चलें, उनको बख़्श दे। और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा।"

२ ऐ हमारे रब! उनको हमेशा रहने की बेहिश्तों में, जिनका तूने उनसे वा'दा किया है दाख़िल कर। और उनके बाप दादा और बीवियों और औलाद में से जो नेक हों, उनको भी। वाक़ई, तू ज़बरदस्त ह़िकमतवाला है।

३ और उनको बुराइयों से बचा। और जिनको तू बुराइयों से उस दिन बचा ले, उन पर तूने बहुत ही मेह्रबानी की। और यही बड़ी कामियाबी है। ४०.७-९

१५ मुलहिदों की ख़ुसूसियात

३५ बेयक़ीन

१६४ उनके दिल पत्थर से ज़्यादह सख़्त

१ इस पर भी (अल्लाह की निशानियाँ देखने के बाद भी), फिर तुम्हारे दिल पत्थर के मानिंद हो गये। या उससे ज़्यादः सख़्त। और वाक़अ़ी पत्थरों में तो ऐसे भी हैं, जिनसे चश्मे फूट निकलते हैं। और उनमें से बा'ज़ ऐसे हैं, जो फट जाते हैं, और उनमें से पानी निकलता है। और उनमें से ऐसे भी हैं कि अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं………। २.७४

१६५ बे ए'तिक़ादी की इन्तिहा

१ अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें और वह दिनदहाड़े उसमें चढ़ने लगें ;
२ तब भी कहेंगे के हमारी नज़र बाँध दी गयी है। बल्कि, हम लोगों पर तो जादू कर दिया गया है। १५.१४-१५

१६६ मुज़ब्ज़ब

१ उसने सोचा। और अटकल लगाई।
२ उस पर ख़ुदा की मार हो। कैसी अटकल दौड़ाई।
३ फिर ख़ुदा की मार हो। कैसी अटकल दौड़ाई।
४ फिर ग़ौर किया।
५ फिर त्यौरी चढ़ाई। और मुंह बनाया।

मुल्हिद–अभक्त, नास्तिक ख़ुसूसियात–वैशिष्टय् बेयक़ीन–निश्चयहीन, विश्वासहीन वाक़ई–वस्तुतः मुज़ब्ज़ब–निश्चयहीन, अव्यवसायिन्।

६ फिर पीठ फेरी। और तकब्बुर किया।

७ फिर बोला, "यह तो जादू है, जो चला आता है" ७४.१८-२४

१६७ मुअ्जिज़े के तालिब

१ वह बोले, हम तेरा कहा हरगिज़ न मानेंगे। जब तक तू हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा न जारी कर दे।

२ या तेरे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो। फिर उसके बीच-बीच में नहरें जारी कर दे।

३ या तू हम पर आस्मान, टुकड़े-टुकड़े करके गिरा दे, जैसे कि तू कहा करता है। या अल्लाह या फ़िरिश्तों को सामने ला।

४ या तेरे लिए सोने का बना एक घर हो। या तू आस्मान पर चढ़ जाए। और तेरे चढ़ने का भी हम हरगिज़ यक़ीन न करेंगे, जब तक कि तू एक किताब उतार न लाये, कि जिसे हम पढ़ें। तू कह, पाक है मेरा रब। मैं तो सिर्फ़ इन्सान हूँ। पैग़ाम पहुँचानेवाला। १७.९०-९३

१६८ कटहुज्जती और मुनाफ़िक़

१ बा'ज़ लोग ऐसे होते हैं, कि वह अल्लाह के बारे में झगड़ते रहते हैं। बग़ैर जाने। बग़ैर हिदायत। और बग़ैर ऐसी किताब के, जो रौशनी दे।—

२ तकब्बुर के साथ। ताकि अल्लाह की राह से गुम्राह करें। ऐसे लोगों के लिए दुन्या में रुस्वाई है। और हम उनको क़ियामत के दिन भी आग की सज़ा चखायेंगे।

मुअ्जिज़ा—चमत्कार कटहुज्जती—वितंडावादी मुनाफ़िक़—अभक्त, तथा-कथित भक्त रुसवाई—कुख्याति।

३ और बा'ज़ लोग ऐसे होते हैं, कि किनारे पर अल्लाह की बंदगी करते हैं। फिर अगर उनको नफ़ा' पहुँचा, तो उस अिबादत पर क़ायम हो गये। और अगर उन पर कोई आज़माइश आ पड़ी, तो उलटे मुंह फिर गये। उन्होंने दुन्या और आख़िरत दोनों गँवाई। यही सरीह् घाटा है। २२.८,९,११

१६९ मुनाफ़िक़ीन की मिसाल

१ उनकी मिसाल उस शख़्स की-सी है, जिसने आग जलाई। फिर जब आग ने उसके आसपास को रौशन किया, तो अल्लाह उनकी रौशनी ले गया। और उनको अंधेरों में छोड़ दिया, कि वह कुछ नहीं देखते।

२ बहरे हैं, गूँगे हैं. अंधे हैं। पस, वह नहीं पलटेंगे।

३ या उनकी मिसाल ऐसी है, जैसे आस्मान से ज़ोर से बारिश हो रही हो। उसमें अँधेरे हैं। और बादलों की गरज। और बिजली की चमक है। वह कड़क के मारे, मौत के डर से, अपने कानों में उँगलियाँ ठूँस लेते हैं। और अल्लाह मुन्किरों को घेरे हुए है।

४ क़रीब है, कि बिजली उनकी निगाहें उचक ले जाये। जब वह उन पर चमकती है, तो उसकी रौशनी में चलने लगते हैं। और जब उन पर अंधेरा करती है, तो खड़े हो जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे, तो उनकी समाअ़त और बसारत ले जाय। बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। २.१७--२०

सरीह—खुला, स्पष्ट समाअ़त—श्रवणशक्ति बसारत—दृष्टि।

३६ उलटी ज़हनियतवाले

१७० आसूद: लोग नहीं मानते

१ हमने किसी बस्ती में कोई होशियार करनेवाला नहीं भेजा मगर वहाँ के आसूद: लोगों ने कहा। जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसको हम नहीं मानते।

२ और उन्होंने कहा। हम ज़्याद: माल और ज़्याद: औलादवाले हैं। और हमको कभी अज़ाब न होगा। ३४.३४-३५

१७१ मुन्किरों के नज़दीक ईमान लाना ह़माक़त है

१ जब उनसे कहा जाता है के ईमान लाओ, जिस तरस और लोग ईमान लाये। तो कहते हैं "क्या हम ईमान लायें जिस तरह बेवकूफ़ ईमान लाये।" जान लो! हक़ीक़त में वही बेवक़ूफ़ हैं। लेकिन जानते नहीं। २.१३

१७२ नफ़्स-परस्त और दह्रिये

१ क्या तूने देखा, उस शख़्स को, जिसने अपनी ख़्वाहिशे-नफ़्सानी को अपना मा'बूद बना रखा है। और अल्लाह ने उसको, बावजूद समझबूझ के, गुमराह कर दिया है। और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी। और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है। फिर उसे अल्लाह के सिवा कौन राह पर लाये। तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते।

उलटी जहनियतवाले—विपरीत बुद्धि आसूद:—धनवान् नफ़्स-परस्त—कामवादी दह्रिये—कालवादी गुमराह—मार्गभ्रष्ट आसूज:—धनवान्।

२ और वह कहते हैं, कि बजुज़ हमारी इस दुन्यवी ज़िन्दगी के, और कुछ नहीं। हम मरते हैं, और हम जीते हैं। और नहीं हलाक करता हमको, मगर ज़माना। ४५.२३-२४

१७३ "ख़ुदा उन्हें नहीं देता, तो हम क्यों दें ?"

१ और जब उनसे कहा जाता है, कि अल्लाह ने जो कुछ तुमको दिया है, उसमें से उसके रास्ते में ख़र्च करो। तो मुन्किर ईमानवालों से कहते हैं; कि क्या हम ऐसों को खिलायें, कि जिन्हें अल्लाह चाहता, तो खिला देता। तुम लोग तो सरीह़ गुमराही में हो। ३६.४७

१७४ ईमानवालों को सतानेवाले

१ बेशक जिन्होंने ईमानवाले मर्दों को और ईमानवाली औरतों को ईज़ा दी, फिर तौबः न की, उनके वास्ते दोज़ख़ का अ़ज़ाब है। और उनके लिए जलने का अ़ज़ाब है। ८५.१०

१७५ अंजानों से बुरे बर्ताव को अच्छा समझनेवाले

१ अहले-किताब में बा'ज़ ऐसे हैं, कि अगर तू उनके पास माल का ढेर अमानत रखे, तो वह तुझको वापस अदा कर दें। और बा'ज़ उनमें ऐसे हैं, कि अगर तू उनके पास एक दीनार अमानत रखे, तो वह तुझे वापस न करें, जब तक कि तू उनके सर पर सवार न हो। इसलिए, कि उनका कहना है, कि "अनपढ़ लोगों के मुआ़मले में हम पर कोई गुनाह नहीं"। और वह अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं। और वे जानते हैं। ३.७५

ईज़ा—क्लेश।

३७ मुलहिदों के आ'माल अकारत

१७६ उनका किया-धरा सब ख़ाक

१ जो लोग अपने परवर्दगार से मुन्किर हुए, उनके आ'माल की मिसाल उस राख की-सी है, जिसे एक तूफ़ानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो। वह कुछ न पायेंगे उसमें से, जो उन्होंने कमाया। यही है दूर की गुम्राही। १४.१८

१७७ मज़बूत पनाहगाहें काम न आयीं

१ बेशक हिज्रवालों ने रसूलों को झुठलाया।

२ और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं। तो वह उनसे मुँह फेरे रहे।

३ और वह इत्मीनान के साथ पहाड़ों में घर तराशते रहे।

४ तो सुबह होते, ज़बर्दस्त धमाके ने उन्हें आ पकड़ा।

५ सो उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई। १५.८०-८४

१७८ किन-किनके आ'माल ग़ारत

१ कह, क्या हम तुम्हें उन लोगों की खबर दें, जो आ'माल के लिहाज़ से बहुत घाटे में हैं।

२ यह वह लोग हैं जिनकी सारी दौड़-धूप दुन्या की ज़िन्दगानी में खो गयी। और वह इसी ख्याल में हैं, कि वह ख़ूब काम कर रहे हैं।

३ यही लोग हैं, जिन्होंने अपने पर्वर्दगार की निशानियों का और उसके मिलने का इन्कार किया। पस, इनका किया-धरा सब ग़ारत हुआ। पस, हम उनके वास्ते क़ियामत के दिन कोई वज़न क़ायम न करेंगे.........। १८.१०३-१०५

पनाहगाह—संरक्षण-स्थल ग़ारत—नष्ट।

१७९ बेअमल की तमसील गधे से

१ जिन पर किताब–तौरेत–लादी गयी, फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया; उनकी मिसाल गधे जैसी है, कि पीठ पर किताबें लादे हुए है।............ ६२.५

३८ बुरा अंजाम

१८० बुलंदी से गिरना

१ ......जिसने अल्लाह का शरीक बनाया तो वह गोया आस्मान से गिरा। फिर उसको परिंदे उचक ले जाते हैं। या हवा उसको किसी दूर मक़ाम में फेंक देती है। २२.३१

१८१ शैतान बुरा साथी

१ जो कोई अल्लाह की याद से मुँह मोड़ता है, उसके वास्ते हम एक शैतान मुक़र्रर करते हैं। पस, वह उसका साथी बन जाता है।

२ और वह उनको राह से रोकते रहते हैं। और यह लोग इसी ख़्याल में रहते हैं, कि हम राह पर हैं।

३ यहाँ तक, कि जब हमारे पास आयेगा, तो (शैतान से) कहेगा, काश ! मेरे और तेरे दर्मियान मश्रिक और मग़्रिब की दूरी होती। क्या बुरा साथी है। ४३.३६-३८

१८२ शैतान किस पर सवार होता है ?

१ क्या तुमको बताऊँ, कि शैतान किस पर उतरते हैं।

२ वह उतरते हैं हर झूठे गुनाहगार पर।

३ जो (आस्मान की तरफ) कान लगाते हैं। और अक्सर उनमें झूठे हैं।

बेअमल–अनाचारी तम्सील–दृष्टांत गोया–मानो।

४ और शाअि़र लोग तो, उनकी पैरवी तो रास्ते से भटके हुए लोग करते हैं।

५ क्या तूने देखा नहीं, कि वह हर मैदान में सर मारते फिरते हैं।

६ और यह; कि वह जो कुछ कहते हैं वह करते नहीं!

२६.२२१-२२६

१८३ हमारे कर्तूत

१ (जन्नती दोज़खियों से पूछेंगे), क्या चीज़ तुम्हें दोज़ख़ में ले गयी?

२ वह कहेंगे—हम सलात करनेवालों में से न थे।

३ हम मुहताज को खाना नहीं खिलाते थे।

४ और बक्वासियों के साथ मिलकर, हम बक्वास करते थे।

५ और हम जज़ाऽ के दिन को झूठ क़रार दिया करते थे।

६ यहाँ तक कि हमें मौत आ गयी। ७४.४२-४७

१८४ ख़राबी है झुठलानेवालों के लिए

१ ख़राबी है उस दिन झुठलानेवालों के लिए।

२ क्या हमने पहिलों को हलाक नहीं किया।

३ फिर हम पिछलों को भी उनके साथ कर देंगे।

४ हम गुनाहगारों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।

५ तबाही है उस दिन झुठलानेवालों के लिए। ७७.१५-१९

१८५ काश! मैं धूल होता!

१ ऐ लोगो, बेशक हमने तुमको एक क़रीबी अज़ाब से होशियार कर दिया। जिस दिन हर आदमी अपने किये हुए आ'माल को देखेगा और मुन्किर कहेगा, काश! मैं मिट्टी होता! ७८.४०

हलाक करना—नष्ट करना तबाही—सत्यानास अज़ाब—सज़ा।

५ इ'तिक़ादे-दीन

१६ इ'तिक़ादे-दीन

३६ दीन के उसूल

१८६ दीन का निचोड़

१ मज़्हबियत यह नहीं, कि तुम अपना मुँह मश्रिक की तरफ़ करो, या मग़्रिब की तरफ़। बल्कि मज़्हबियत यह है, कि कोई शख़्स ईमान रखे अल्लाह पर, और योमे-आख़िर पर, और फ़िरिश्तों पर, और अल्लाह की किताबों पर, और पैग़ंबरों पर। और अल्लाह की महब्बत में माल दे, रिश्तेदारों और यतीमों और मुह्ताजों और मुसाफ़िरों को और माँगनेवालों को, और किसीकी गर्दन छुड़ाने में। और सलात क़ायम करे। और ज़कात दे। और वह लोग जब अ़हद करें, तो अपने अ़हद को पूरा करें। ओर तंगी मुसीबत और आफ़त के वक़्त सब्र करें। ये हैं रास्तबाज़ लोग। और यही मुत्तक़ी हैं। २.१७७

१८७ दीन का ख़ाका

१ पस जिस तरह तुझको हुक्म हुआ है साबित क़दम रह। और तेरे साथ वह भी साबित क़दम रहें, जो ताइब हुए। और हद से न बढ़ो। बेशक, तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह देखता है।

२ और उन लोगों की तरफ माऽइल न होना, जिन्होंने ज़ुल्म किया। वर्‌नः आग की लपेट में आ जाओगे। अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई वली और सरपरस्त नहीं। फिर तुम्हारी मदद न की जायगी।

इ'तिक़ादे-दीन—धर्मश्रद्धा गर्दन छुड़ाना—गुलाम को मुक्त करना रास्तबाज—सच्चे ख़ाका—रूपरेखा, ढाँचा।

३ और सलात क़ायम करो, दिन के दोनों सिरे पर, और कुछ रात गुज़रने पर। बेशक नेकियाँ बुराइयों को दूर करती हैं। यह एक याददेहानी है उन लोगों के लिए, जो अल्लाह की याद रखते हैं।

४ और सब्र कर। बेशक, अल्लाह नेकी करनेवालों की उज्रत ज़ाये' नहीं करता। ११.११२-११५

१८८ अल्लाह की फ़ित्रत पर चलना ही दीन है

१ अपना रुख सीधा कर लो, दीन के लिए यकसू होकर। अल्लाह की फ़ित्रत को इख़्तियार करो, जिस पर उसने इन्सान को पैदः किया। अल्लाह की बनावट में कोई तब्दीली नहीं। यही सीधा दीन है। लेकिन् अक्सर लोग जानते नहीं। ३०.३०

१८९ इस्लाम का अक़ीदा

१ जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, वह सब अल्लाह ही का है। और तुम अपनी दिल की बात ज़ाहिर करो, या छुपाओ; अल्लाह तुमसे इसका हिसाब लेगा। फिर जिसको चाहे बख़्शे। और जिसको चाहे, अज़ाब दे। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

२ यह रसूल इस पर ईमान लाया जो उसके पर्वर्दिगार की तरफ़ से उस पर उतरा। और मोमिनीन भी ईमान लाये। हरएक ईमान लाया अल्लाह पर, फ़िरिश्तों पर, किताबों पर और सब रसूलों पर। उनका क़ौल है, कि हम रसूलों में से किसीमें कोई फ़र्क़ नहीं करते। हमने सुना, और हमने माना।

याददेहानी—स्मरण देना ज़ाये—व्यर्थ, नष्ट, प्रभावहीन अल्लाह की फ़ित्रत—ईश्वरनिर्मित स्वभाव अक़ीदा—निष्ठा।

ऐ हमारे पर्वर्द्गार ! हम तेरी बख्शिश के तालिब हैं । और हमें तेरी ही तरफ लौटकर जाना है ।

३ अल्लाह किसी शख्स पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता, मगर उसको वुसअ़त भर । जिसने जो कुछ कमाया, (उसका अज्र) उसके लिए है । और जिसने जो कर्तूत किया, (उसका वबाल) उसी-के लिए है । ऐ हमारे पर्वर्द्गार ! हमारी गिरिफ़्त न कर, अगर हमसे भूल हो जाए, या क़ुसूर हो जाए । ऐ हमारे रब ! हम पर ऐसा बोझ न डाल, जो तूने पहिले लोगों पर डाला था । ऐ हमारे पर्वर्द्गार ! हम पर वह बार न डाल, जिसकी हमें ताक़त नहीं । और हमसे दर्गुज़र कर । और हमको बख्श । और हम पर रहम कर । तू ही हमारा मौला है । मुन्किरों पर हमारी मदद कर । २.२८४-२८६

१९० अल्लाह की इताअ़त ही दीन है

१ क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा कुछ और चाहते हैं । हालाँकि आस्मान और ज़मीन की सारी चीज़ें, चार व नाचार, अल्लाह ही के ताबिअ़-फरमाँ हैं । और उसीकी तरफ सब लौटाये जायँगे । ३.८३

१९१ मज़बूत सहारा

१ जो कोई शख्स अपना रुख अल्लाह के ताबिअ़ करे, तो बेशक उसने मज़बूत रस्सी पकड़ ली । और अल्लाह की तरफ हर काम का अंजाम है । ३१.२२

वुसअ़त—व्याप, शक्ति वबाल—दुःख, कष्ट बार—बोझ मौला—स्वामी, मित्र इताअ़त—शरणता अंजाम—परिणाम ।

४० मज़्हबी रवादारी

१९२ दीन में ज़बरदस्ती नहीं

१ दीन के मुआमले में ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है। बेशक, हिदायत गुमराही से अलग वाज़ेह हो गयी है। अब जो कोई गुमराह करनेवाले मा'बूद का इनकार करे, अल्लाह पर ईमान लाए, तो उसने मज़्बूत सहारा थाम लिया, जो कभी टूटनेवाला नहीं। और अल्लाह सुननेवाला, और जाननेवाला है। २.२५६

१९३ तमाम पैग़ंबरों पर ईमान

१ जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं; और अल्लाह और उसके रसूलों के दर्मियान तफ़रीक़ करना चाहते हैं; और कहते हैं, कि हम किसीको मानेंगे, और किसीको न मानेंगे; और उसके बीच में एक राह निकालने का इराद: रखते हैं;

२ हक़ीक़तन् यही लोग मुन्किर हैं। और हमने मुन्किरों के लिए ज़लीलो-ख़्वार कर देनेवाली सज़ा तयार रखी है।

३ और जो लोग अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाये, और रसूलों में फ़र्क़ नहीं किया, उनको हम ज़रूर अज्र अता करेंगे। और अल्लाह बख़्शनेवाला, मेहरबान है। ४.१५०-१५२

१९४ ईमानवाले सब एक उम्मत हैं

१ बेशक, यह है तुम्हारी उम्मत, वाहिद उम्मत। और मैं तुम्हारा पर्वर्दगार हूँ। पस मुझसे डरो।

२ फिर लोगों ने अपने दीन को, अपने दर्मियान काटकर, टुकड़े-टुकड़े कर लिया। हर गिरोह मगन है उसमें, जो उसके पास है। २३.५२-५३

रवादारी—सहिष्णुता तफ़्रीक—भेद ख़्वार—अपमानित अता करना—देना मज़्हबी—धार्मिक दीन—धर्म।

१९५ मोमिनों को अपने से दूर न करो

१ जो लोग अपने पर्वर्द्गार को सुबह् और शाम पुकारते हैं, और उसकी रज़ा चाहते हैं, उनको दूर न कर। उनके हिसाब में से तुझ पर कुछ नहीं है। और न तेरे हिसाब में से उन पर कुछ है, कि तू उनको दूर करे। फिर ज़ालिमों में तेरा शुमार होगा। ६.५२

१९६ किसीके मा'बूद को बुरा न कहो

१ यह लोग अल्लाह के सिवा जिनकी परस्तिश करते हैं, तुम उनको बुरा न कहो। कि वह ह़द से गुज़र कर, बेसमझे, अल्लाह को बुरा कहने लगेंगे.........। ६.१०८

१९७ भलाई में सब्क़त करो

१ ......तुममें से हरएक के लिए हमने एक तरीक़ः और एक राह बनायी। और अगर अल्लाह चाहता, तो तुमको ज़रूर एक जमाअ़त बनाता। लेकिन् उसने तुमको जो कुछ दिया है, उससे तुम्हें वह आज़माता है। इसलिए नेकियों में तुम एक-दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। अल्लाह ही के पास तुम सबको पहुँचना है। फिर जिस बात में तुम इख़्तेलाफ़ करते हो, उस बारे में वह तुम्हें हक़ीक़त बता देगा। ५.५१

१९८ बह़स में मुवाफ़क़त तलाश करो

१ तुम अहले-किताब से सिर्फ़ इस तरीक़ा से मुबाह़सा करो, जो अह़सन तरीक़ा है, बजुज़ उन लोगों के, जो उनमें ज़ालिम हैं। और कहो, जो हम पर उतरा और जो तुम पर उतरा, उस पर हम ईमान रखते हैं। और हमारा मा'बूद और तुम्हारा मा'बूद एक ही है। और हम उसके मुतीअ़ हैं। २९.४६

मुवाफ़क़त–सुसंवाद अहसन–अच्छा।

१९९ तुम्हारा और हमारा रब एक ही है

१ बेशक, अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पर्वर्दिगार है। पस, उसकी बंदगी करो। यह सीधी राह है। ४३.६४

२०० पूरब-पच्छिम-अल्लाह के पास सब बराबर हैं

१ और मश्रिक व मग़्रिब सब अल्लाह ही के हैं। पस, तुम जिस तरफ़ मुँह करो, उसी तरफ अल्लाह का रुख़ (ज़ात) है। बेशक, अल्लाह बहुत वुसअ़तवाला, और जाननेवाला है। २.११५

२०१ बेहिश्त किसीकी मीरास नहीं

१ वह कहते हैं, यहूदी और अ़ीसाई के सिवा और कोई हर्गिज़ जन्नत में नहीं जायगा। यह तो उन लोगों की तमन्नाएँ हैं। कह, अगर तुम सच्चे हो, तो अपनी दलील लाओ।

२ क्यों नहीं, जिसने अपनी हस्ती अल्लाह की इताअ़त में सौंप दी। और वह नेकी करनेवाला है तो उसके लिए उसका अज्र है उसके पर्वर्दिगार के पास। न उनको कोई डर है, और न वह कभी ग़मगीन होंगे। २.१११-११२

४१ दीन के अर्कान

२०२ लिल्लहियत, नमाज़, ज़कात

१ और उनको यही हुक्म दिया गया, कि उसकी बंदगी करें। दीन को उसीके लिए ख़ालिस करते हुए, यकसू होकर। और सलात क़ायम करें। और ज़कात अदा करें। और यह सीधा दीन है। ९८.५

तमन्नाएँ–आकांक्षाएँ, मन के खेल अर्कान–विधि, स्तम्भ।

२०३ पाँच नमाजें

१ वह जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र कर। और अपने पर्वर्दिगार की तारीफ़ के साथ उसकी तस्बीह़ कर। सूरज निकलने से पहिले, और उसके डूबने से पहिले। और तस्बीह़ किया कर रात की कुछ घड़ियों में, और दिन के दोनों किनारों पर। ताकि तू राज़ी हो। २०.१३०

२०४ खाने में अल्लाह का नाम

१ पस, अगर तुम लोग अल्लाह की निशानियों पर ईमान रखते हो, तो जिस पर अल्लाह का नाम ज़िक्र किया गया हो, उसमें से खाओ.........

२ ....और उसमें से न खाओ, जिस पर अल्लाह का नाम ज़िक्र न किया गया हो............। ६.११८, १२१

२०५ रोज़ा (सौम)

१ ऐ ईमानवालो ! तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया है। जैसे इन लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था, जो तुमसे पहिले थे। ताकि तुम पर्हेज़गारी इख़्तियार करो।

२ चंद गिन्ती के रोज़ (रोजे रखो)। फिर तुममें से जो कोई बीमार हो, तो दूसरे दिनों में गिन्ती (पूरी करे)। और जो लोग ताक़त रखते हैं, उन पर फ़र्ज़ है एक मिस्कीन को खाना खिलाना। फिर जो कोई ज़्यादह नेकी करे, तो वह उसके वास्ते अच्छा है। और अगर तुम रोज़ा रखो, तो तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो। २.१८३-१८४

२०६ ह़ज

१ और ह़ज और अुमर: को अल्लाह के वास्ते पूरा करो। फिर अगर तुम (कहीं) घिर जाओ, तो जो क़ुर्बानी मुयस्सर आये, पेश करो........

२ ....ह़ज में शहूवत की कोई बात, कोई गुनाह, और कोई झगड़ा न हो.........। २.१९६-१९७

६ अख़्लाक़

४२ हक़ और बातिल की तमीज़

२०७ अि़ल्म और जहालत में फ़र्क़

१ अंधा और देखनेवाला बराबर नहीं।
२ और न अँधेरा और न रौशनी।
३ और न साया और न धूप।
४ और नहीं बराबर होते ज़िन्दे और मुर्दे……। ३५.१६–२२

२०८ पानी और झाग की मिसाल

१ उसने आस्मान से पानी उतारा। फिर अपनी मिक़्दार के मुवाफ़िक़ नाले बहने लगे। फिर वह सैलाब, फूला हुआ झाग ऊपर ले आया। और उस चीज़ पर भी वैसा ही झाग होता है, जिसको ज़ेवर या सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं। इस तरह अल्लाह हक़ और बातिल की मिसाल बयान करता है। पस जो कि झाग है, वह सूखकर उड़ जाता है। और उसमें से जो चीज़ लोगों के काम आती है, सो ज़मीन में बाक़ी रह जाती है। इस तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। १३.१७

२०९ सच और झूठ को मत मिलाओ

१ हक़ और बातिल को ख़लत-मलत न करो। और हक़ को जानते बूझते न छुपाओ। २.४२

२१० हक़ किसीकी ख़्वाहिश के ताबेअ़ नहीं होता

१ अगर हक़ उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करे, तो आस्मान, और ज़मीन, और जो कोई उनके बीच में हैं, सब बिगड़ जायें……। २३.७१

२११ हक़ के मुक़ाबले में बातिल का ख़ातिमा

१ बल्कि, हम सच को झूठ पर फेंक मारते हैं। फिर वह उसका सर फोड़ डालता है। पस, नागाह वह मिट जाता है…। २१.१८

अख़्लाक़–नीति हक़ और बातिल–सत्यासत्य जहालत–अज्ञान
मिक़्दार–मात्रा सैलाब–बाढ़।

१८ पाकीज़गीए नुत्क़

४३ हक़परस्त

२१२ कहनी वैसी करनी

१ ऐ ईमानवालो ! ऐसी बात क्यों कहते हैं, जो करते नहीं ।

२ अल्लाह के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़गी की है, कि वह बात कहो जो करो नहीं । ६१.२-३

२१३ सिर्फ़ दूसरों को नसीहत न करो

१ क्या तुम, लोगों को नेक काम करने का .हुक्म देते हो, और अपने-आपको भूल जाते हो ? हालाँकि, किताब की तिलावत करते हो । फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते ? २.४४

२१४ मेहनत से काता हुआ सूत तोड़ डाला

१ अल्लाह का अ़हद पूरा करो । जब के तुमने उससे अ़हद बाँधा । और क़स्मों को, पक्का करने के बाद, तोड़ न डालो । जब कि तुम अल्लाह को अपने ऊपर शाहिद बना चुके हो । यक़ीनन्, अल्लाह जानता है, जो कुछ तुम करते हो ।

२ और उस (सर्फिरी) औ़रत के जैसे न हो जाओ; कि जिसने मेहनत से काता हुआ अपना सूत टुकड़े-टुकड़े कर डाला ।...... १६.९१-९२

२१५ .हक़परस्ती तक़्वा है

१ जो लोग सच्ची बात लेकर आये, और जिन्होंने उसको सच माना, वही लोग मुत्तक़ी हैं ।

२ वह जो कुछ चाहेंगे, वह उनके पर्वर्द्गार के पास है । यह नेकोकारों का सिला है । ३९.३३-३४

पाकीज़गीए नुत्क़–वाचाशुद्धि हक़परस्त–सत्यसन्ध ।

४४ अच्छी ज़बान

२१६ अच्छी-बुरी बात की मिसाल

१ क्या तूने देखा नहीं, कि अल्लाह ने पाकीज़: बात की कैसी मिसाल बयान की है। उसकी मिसाल एक अच्छे दरख़्त की-सी है। जिसकी जड़ मज़बूत जमी हुई है। और उसकी शाखें आस्मान में हैं।

२ हर आन, वह अपने रब के हुक्म से अपने फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। ताकि वह सबक़ हासिल करें।

३ और नापाक बात की मिसाल एक गंदे दरख़्त की-सी है। जो ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाता है। उसके लिए कोई इस्तेह्काम नहीं। १४.२४–२६

२१७ सबसे अच्छी बात कहो

१ मेरे बंदों को कह दे; कि वह बात कहा करें, जो बेह्तरीन हो। बेशक, शैतान उनके दर्मियान फ़साद डलवाता है। हक़ीक़त यह है, कि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। १७.५३

२१८ सबसे अच्छी बात

१ उससे बेह्तर किसकी बात हो सकती है, जो अल्लाह की तरफ बुलाये। नेक काम करे और कहे, कि मैं उन लोगों में हूँ, जिन्होंने अपने-आपको अल्लाह के हवाले कर दिया। ४१.३३

२१९ सीधी बात

१ ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो। और सीधी बात कहो। ३३.७०

आन–क्षण गंदा–अशुचि इस्तेहकाम–ठहराव, स्थिरता फ़साद–झगड़ा।

४५ बदगोई से पर्हेज़

२२० बुरी बात न कहो

१ बुरी बात ज़बान पर लाना अल्लाह पसंद नहीं करता। इल्ला यह, कि किसी पर ज़ुल्म हुआ हो। और अल्लाह सुननेवाला, और जाननेवाला है।

२ अगर तुम भलाई ज़ाहिर करो या छुपाओ। या बुराई मुआफ़ करो। तो बेशक, अल्लाह भी मुआफ़ करनेवाला, बड़ी क़ुद्रत-वाला है। ४.१४८-१४९

२२१ बदगोई न करो

१ ऐ ईमानवालो! मर्दों को मर्दों की हँसी न उड़ानी चाहिए। शायद कि वह उनसे बेह्तर हों। और न औ़रतें औ़रतों की हँसी उड़ायें। शायद कि वह उनसे बेह्तर हों। और एक-दूसरे को ऐ़ब न लगाओ। और एक-दूसरे को बुरे अल्क़ाब से न पुकारो। ईमान के बाद गुनाह का नाम ही बुरा है। और जो उससे बा'ज़ न आये, वही ज़ालिम हैं।

२ ऐ ईमानवालो! दूसरों पर शक करने से बचते रहो। बेशक बा'ज़ शक गुनाह हैं। और किसीकी जासूसी और टोह में न लगो। तुममें कोई किसीकी ग़ीबत न करे। भला तुममें से किसीको यह पसंद आयेगा, के अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? तो तुमको उससे घिन आए। और अल्लाह से डरते रहो। बेशक, अल्लाह तौबः कबूल करनेवाला, मेहरबान है। ४९.११-१२

बदगोई—अमंगल वाणी ग़ीबत—पृष्ठनिन्दा।

२२२ फ़ुज़ूल बहस से बचो

१ जब तू उन लोगों को देखे, कि हमारी आयतों पर नुक्ताचीनियाँ कर रहे हैं; तो उनके पास से हट जा। यहाँ तक, कि वह उसके सिवा और किसी बात में लग जायें। और अगर शैतान तुझे भुलावे में डाल दे; तो याद आ जाने के बाद, उन ज़ालिमों के साथ मत बैठ। ६.६८

२२३ बेहूदा बातों में न पड़ो

१ वह (मोमिन) जब बेहूदा बातें सुनते हैं, तो टाल जाते हैं। और कहते हैं, कि हमारे आ'माल हमारे लिए। और तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिए हैं। तुम पर सलाम हो। हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। २८.५५

२२४ दीन की मज़म्मत न सुनो

१ अल्लाह इस किताब में तुम पर हुक्म उतार चुका है; कि जब तुम अल्लाह की आयात के बारे में सुनो, कि उनका इन्कार किया जा रहा है, और उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है। तो उन लोगों के पास न बैठो, जब तक कि वह उसके सिवा दूसरी बात में न लग जायें। नहीं तो तुम भी उन ही जैसे होगे...। ४.१४०

२२५ बदगोई करनेवालों का अंजाम

१ ख़राबी है, हर अ़यबजू तानाज़न के लिए,

२ जिसने माल इकट्ठा किया। और उसको गिना किया।

३ वह इस गुमान में है, कि माल उसको हमेशा रखेगा।

नुक्ताचीन—मीनमेख निकालनेवाला बेहूदा—असभ्य मज़म्मत—निन्दा मज़ाक़—हँसी अयबजू—दोषैक दृष्टि तानाज़न—उलाहना देनेवाला गुमान—कल्पना।

४ हरगिज नहीं। वह ज़रूर फेंका जायगा, तोड़-फोड़ करनेवाली के अन्दर।
५ और तू क्या जाने, वह तोड़ने-फोड़नेवाली क्या है ?
६ वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग है।
७ जो दिलों पर चढ़ आती है।
८ वाक़आ़ी, वह आग उन पर बंद कर दी गई है।—
९ लम्बे-लम्बे सुतूनों में। १०४.१-९

सुतून—खम्भे।

१६ अहिंसा (बेआज़ारी)

४६ इन्साफ़

२२६ एक जान को बचाना तमाम इन्सानों को ज़िन्दगी बख़्शना है

१ हमने बनी इस्राईल पर लिखा; कि जिसने किसी इन्सान को, बग़ैर किसी जान के बदले, या दुनिया में फ़साद फैलाने के सिवा किसी और वजह से, क़त्ल किया, उसने गोया तमाम इन्सानों को क़त्ल कर दिया। और जिसने किसी जान को बचाया, उसने गोया तमाम इन्सानों को ज़िन्दगी बख़्शी......। ५.३५

२२७ फ़साद न फैलाओ

१ अपने पर्वर्दिगार को पुकारो। गिड़गिड़ाते हुए, और चुपके-चुपके। बेशक, वह हद से बढ़नेवालों को पसंद नहीं करता।

२ इस दुनिया में फ़साद बरपा न करो। जब कि उसकी इस्लाह हो चुकी है। और उसीको पुकारो। डर और तमअ़ के साथ। बेशक, अल्लाह की रह्मत, नेकी करनेवालों के क़रीब है।

७.५५-५६

२२८ दुश्मनी करनेवाले से भी बेइन्साफ़ी न करो

१ ऐ ईमानवालो ! अल्लाह के वास्ते, रास्ती पर क़ायम रहनेवाले, और इन्साफ़ की गवाही देनेवाले बनो। और किसी क़ौम की अदावत तुम्हें मुश्तअ़िल न कर दे, कि तुम इन्साफ़ न कर सको। इन्साफ करो। यही बात तक़्वा से ज़्यादह क़रीब है। और अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। बेशक अल्लाह, तुम्हारे आ'माल से बाख़बर है। ५.६

तमअ़–लालच, लोभ अदावत–बैर मुस्तैद–तैयार इस्लाह–सुधार।

२२९ दोस्ती के लिए हमेशा मुस्तअिद रहो

१ अगर वह सुलह की तरफ झुकें, तो तू भी उसके लिए झुक जा। और अल्लाह पर भरोसा रख। बेशक, वही है सुननेवाला, जाननेवाला।

२ और अगर वह तुझको धोका देने का इरादा रखते हों। तो तेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। उसीने तुझको, अपनी मदद से, और ईमानवालों से, तक़्वियत पहुँचाई है।—

३ और मोमिनों के दिल एक-दूसरे से जोड़ दिये। अगर तू ज़मीन में जो कुछ है, सब खर्च कर डालता, तो भी उनके दिलों को जोड़ न सकता। लेकिन् अल्लाह ने उनके दिल जोड़ दिये। बेशक वह ग़ालिब हिकमतवाला है। ८.६१—६३

४७ इन्साफ़ (ठीक मावज़ा) से मुआ़फ़ी बेहतर

२३० सब्र बेहतरीन रास्ता है

१ अगर बदला लो, तो इस क़दर बदला लो, जिस क़दर तुमको ईज़ा पहुँचाई गयी। और अगर सब्र करो, तो सब्र करनेवालों के लिए बेहतर है।

२ और तू तो सब्र ही कर। और यह तेरा सब्र करना अल्लाह ही की मदद से है। और उन पर रंज न कर। और उनकी चालबाज़ियों से तंग न हो।

३ बेशक, अल्लाह उन लोगों के साथ है; जो तक़्वा से काम लेते हैं, और इह्सान करनेवाले हैं। १६.१२६-१२८

तक़्वियत—शक्ति चालबाज़ी—धोखाधड़ी मुस्तअिद—तैयार।

२३१ मुआफ़ करना बेह्तर है

१ वह लोग जब उन पर ज़्यादती होती है, तो जवाब देते हैं।

२ और बुराई का बदला उतनी ही बुराई है। फिर जो कोई मुआफ़ करे और इस्लाह करे, तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मः है। बेशक वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता। ४२.३६-४०

४८ अहिंसाई अक़ीदा

२३२ मुआफ़ कर और अल्लाह की पनाह माँग

१ मुआफ़ करने की आदत डाल। और नेकी का हुक्म देता जा। और जाहिलों से किनारा-कश रह।

२ और अगर शैतान का वस्वसा (छेड़) तुझे उभारे, तो अल्लाह की पनाह माँग। बेशक, वह सुननेवाला-जाननेवाला है।

३ बेशक, जो लोग खुदातरस हैं, उनको जब कभी शैतान की तरफ़ से कोई ख्याल छू भी जाता है, तो वह चौकन्ने हो जाते हैं। पस, यकायक उनकी आँखें खुल जाती हैं। ७.१९९–२०१

२३३ बुराई का अच्छाई से मुक़ाबला करो

१ बुराई का दफ़अिया, ऐसे बर्ताव से करो जो बहुत अच्छा हो। हम ख़ूब जानते हैं, जो यह बयान करते हैं।

२ और कह, ऐ पर्वर्दिगार! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, शैतान के वस्वसों से।

३ और ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, इससे कि शैतान मेरे पास आयें। २३.९६–९८

खु़दातरस–ईश्वर से डरनेवाला।

२३४ अल्लाह से मुआफ़ी के ख्वास्तगार औरों को मुआफ़ करें

१ ...लोगों को चाहिए के मुआफ़ करें, और दर्गुज़र करें। क्या, तुम नहीं चाहते, कि अल्लाह तुमको मुआफ़ करे? और अल्लाह बख्शनेवाला, मेहेरबान है। २४.२२

२३५ दुश्मन दोस्त हो जाते हैं

१ नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती। बदी को दूर करने के लिए, जवाब में ऐसा बर्ताव करो, जो बहुत अच्छा हो। फिर यका-यक वह शख्स, कि जिसके और तेरे दर्मियान दुश्मनी है, ऐसा होगा, कि गोया वह तेरा दिली दोस्त है।

२ और यह बात उसीको नसीब होती है, जो मुस्तक़िल-मिज़ाज है। और यह बात उसीको नसीब होती है, जो बड़े नसीब-वाला है। ४१.३४-३५

२३६ महब्बत कैसे पैदः होती है

१ बेशक जो लोग ईमान लाते हैं, और जिन्होंने नेक काम किये हैं, उनमें वह रहमान महब्बत पैदः करता है। १९.९६

४९ ता'वुन का जज़्बा

२३७ पड़ोसियों से नेक बर्ताव

१ क्या, तूने उस शख्स को देखा, जो जज़ाऽ के दिन को झुठलाता है?
२ पस, यही वह शख्स है, जो यतीम को धक्के देता है।
३ और मुह्ताज को खाना देने के लिए किसीको तरग़ीब नहीं देता।

ख्वास्तगार—इच्छुक नसीब होना—भाग्य में आना मुस्तक़िल मिज़ाज—स्थिर स्वभाव का ता'वुन—सहकार जज़्बा—भावना तरग़ीब देना—प्रोत्साहित करना।

४ पस, ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए,
५ जो अपनी नमाज़ में ग़ाफ़िल हैं।
६ वह जो रियाकारी (दिखलावा) करते हैं।
७ और पड़ोसियों को रोज़मर्रा के बरतने की छोटी चीज़ें भी इस्तिअ़माल करने नहीं देते। १०७.१–७

२३८ आपस में सब्र् और रहम की ताकीद

१ क्या हमने इन्सान को दो आँखें नहीं दीं।
२ और ज़बान और दो होंठ।
३ और दिखला दीं उसको दोनों राहें।
४ पस, वह घाटी में नहीं चढ़ा।
५ और तू क्या जाने, के वह घाटी (चढ़ाव) क्या है ?
६ ग़ुलामी की ज़ंजीर से किसी गर्दन को छुड़ाना है।
७ या भूक के दिन में खाना खिलाना है।–
८ रिश्तेदार यतीम को
९ और ख़ाक-नशीन मिस्कीन को।
१० फिर उन लोगों में से होना। जो ईमान लाये। और आपस में एक-दूसरे को सब्र् की ताकीद करते हैं। और एक-दूसरे को रहम करने की ताकीद करते हैं। ९०.८–१७

२३९ आपस में हक़ और सब्र् की ताकीद

१ क़सम है ज़माने की,
२ वाक़ई इन्सान घाटे में है।

ताकीद–प्रोत्साहन ख़ाक-नशीन–धूल में बैठा हुआ।

३ सिवाय उन लोगों के, जो ईमान रखते हैं। और नेक काम करते हैं। और आपस में एक-दूसरे को हक़ की ताकीद करते हैं। और एक-दूसरे को सब्र की ताकीद करते हैं। १०३.१–३

२४० नेक काम में एक-दूसरे की मदद करो

१ ......नेकी और पर्हेज़गारी में एक-दूसरे की मदद करो। और जुल्म पर एक-दूसरे के साथ मदद न करो।...... ५.३

२४१ नेक काम की दौड़ में बाज़ी जीतो

१ हर एक के लिए एक सिम्त है, जिसकी तरफ वह मुड़ता है। पस तुम भलाइयों में सबक़त करो। जहाँ कहीं तुम होगे, अल्लाह तुम सबको इकट्ठा कर लायेगा। बेशक, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। २.१४८

५० बुराई से अदम-ता'वुन

२४२ झूठों की मत सुन

१ पस तू कहना मत मान, झुठलानेवालों का।
२ वह चाहते हैं के तू मुलायम पड़े। तो वह भी मुलायम पड़े।
३ और तू कहा न मान, बहुत क़स्में खानेवाले ज़लील का।
४ वह ऐ़ब—जो चुग़लख़ोर है।
५ भले काम से रोकनेवाला, हद से बढ़नेवाला, गुनाहग़ार है।
६ जो सख़्त-मिज़ाज है। और उन सबके बाद वह है, बुराई और मलामत में मशहूर।
७ और यह सब इस (घमंड) से, कि माल और बेटे रखता है।
६८.८–१४

सिम्त—दिशा सबक़त करो—आगे बढ़ो अदम-तावुन—असहकार मलामत—निन्दा।

५१ नागुज़ीर मुक़ाबलः

२४३ मुक़ाबले की अ़दम-मौजूदगी में मुक़द्दस मुक़ामात मिसमार होते

१ उन लोगों को लड़ाई की इजाज़त दी जाती है, जिनसे लड़ाई की जा रही है, इस वास्ते कि उन पर ज़ुल्म हो रहा है। और बेशक, अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है।——

२ जिन लोगों को नाहक़ उनके घरों से निकाला गया, सिर्फ़ उनके इस कहने पर, कि हमारा पर्वर्द्गार अल्लाह है। और अगर अल्लाह लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता; तो दुर्वेशों के खल्वतखाने, और नसारा की अ़िबादतगाहें, और यहूद के अ़िबादतखाने, और मस्जिदें, जिनमें अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता है, ढा दिये जाते। और बेशक, अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा, जो उसकी मदद करेगा। बेशक, अल्लाह क़वी और ग़ालिब है। २२.३९-४०

२४४ दीन के तहफ़्फ़ुज़ के लिए महूदूद मुक़ाबला

१ जिन लोगों ने, अल्लाह की राह में, घर-बार छोड़ा, फिर मारे गये, या मर गये; उनको अल्लाह ज़रूर अच्छा रिज़्क़ देगा। और यक़ीनन् अल्लाह सबसे बेहतर रोज़ी देनेवाला है।

२ वह उन लोगों को ज़रूर ऐसी जगह दाखिल करेगा, जिसे वह पसंद करेंगे। बेशक, अल्लाह जाननेवाला, और हलीम है।

३ यह हुआ। और जो शख्स बदला ले उतना ही, जिस क़द्र कि उसको सताया गया है। उस शख्स पर अगर फिर से ज़्यादती हो, तो अल्लाह उसको ज़रूर मदद देगा। बेशक अल्लाह मुआ़फ़ करनेवाला, बख्शनेवाला है। २२.५८—६०

२० ज़ब्ते ज़ायक़ा

५२ तर्क़े-लज़्ज़ात

२४५ एक ग़िज़ा से उकता जाना

१ जब तुमने कहा, ऐ मूसा ! हम एक ही तरह के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं करेंगे। पस, अपने रब से हमारे लिए दुआ करो; कि हमारे लिए वह चीज़ें पैदा कर दे, जिसे ज़मीन उगाती है। यानी साग-तरकारी, और गेहूँ, और दाल, और प्याज़। मूसा ने कहा, क्या तुम बेहतर चीज़ के बदले में अदना दर्जे की चीज़ लेना चाहते हो ? तो किसी शहर में जा उतरो। जो कुछ तुम माँगते हो, वहाँ मिल जायेगा। और उन पर ज़िल्लत और बेबसी मुसल्लत कर दी गई। और वह अल्लाह के ग़ज़ब में आ गये······।* २.६१

जब्तेज़ायक़ा—रुचि-संयम तर्क़े-लज़्ज़ात—अस्वाद मुसल्लत कर दी गई—थोपी गई।

* (१) बेहतर=अल्लाह का दिया रिज़्क़् (२) अदना=ख्वाहिशाते नफ़्सानी ने माँगा हुआ खुराक। (मु०)

२१ पाकीज़गीये-नफ़्स

५३ पाकीज़गी

२४६ ख़ुद को पाक कहनेवाले

१ क्या तूने उनको देखा, जो अपने-आपको पाक कहते हैं। हालाँकि अल्लाह ही पाक बनाता है, जिसको चाहता है। (और उन पाकीज़गी का ज़ा'म रखनेवालों को जो सज़ा होगी। उसमें)— उन पर ज़र्रा बराबर (खजूर की गुठली की लकीर के बराबर) भी ज़ुल्म न होगा। ४.४६

२४७ पाकीज़गी रह्मत है

१ ऐ ईमानवालो! शैतान के क़दमों की पैरवी न करना, और जो शैतान के क़दमों की पैरवी करेगा; तो बेशक, वह बेहयाई और नामा'क़ूल काम करने का हुक्म करता है। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रह्मत न होती, तो तुममें से एक भी कभी पाक न होता। लेकिन् अल्लाह जिसको चाहता है, पाक करता है। और अल्लाह सुननेवाला, और जानने-वाला है। २४.२१

२४८ ग़ैर इरादी क़ुसूरों से वचना अल्लाह की रह्मत से मुमकिन है

१ जो बड़े गुनाहों से और फ़ह्श बातों से बचते हैं, सिवाय ग़ैर इरादी क़ुसूरों के। बेशक, तेरा रब वसीअ् बख़्शनेवाला है। और वह तुमको उस वक़्त से ख़ूब जानता है, जब तुमको ज़मीन से पैदा किया, और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे।

पाकीज़गीये-नफ़्स—कामनाशुद्धि, ब्रह्मचर्य ज़ाम—घमण्ड गैरइरादी क़ुसूर—सूक्ष्म दोष फ़ह्शबात—वैषयिक वार्ता।

पस, तुम अपने तक़द्दुस का इज़हार न करो। वह खू़ब जानता है, कि कौन तक़्वावाला है। ५३.३२

२४९ अंदरूनी और बेरूनी गुनाहों से बा'ज़ आओ

१ ज़ाहिरी गुनाह और बातिनी गुनाह छोड़ दो। जो लोग गुनाह कमाते हैं, उनको उनके उस कर्तूत का बदला ज़रूर दिया जायेगा। ६.१२०

२५० पाकीज़गी और ज़िक्रुल्लाह

१ बेशक, बामुराद हुआ वह शख्स। जिसने पाकीज़गी इख्तियार की।

२ और अपने पर्वर्दगार का नाम याद किया। फिर सलात पढ़ी। ८७.१४-१५

२५१ तक्वा और फुजूर की तमीज़ रक्खो

१ क़सम है नफ़्स की। और उस ज़ात की, जिसने उसको दुरुस्त किया।

२ फिर आगाह किया उस नफ़्स को उसकी बदी से, और उसकी परहेज़गारी से।

३ और यक़ीनन्, वह शख्स मुराद को पहुँचा, जिसने नफ़्स को पाक किया।

४ और नामुराद हुआ वह, जिसने उसको पामाल किया। ९१.७-१०

२५२ इसमत की हिफ़ाज़त

१ ऐ आदम के बेटो! बेशक, हमने तुम पर लिबास उतारा है; जो तुम्हारी शर्मगाहें ढाँकता है, और जो ज़ीनत है। और तक़्वा का पहनावा बेहतरीन पहनावा है। यह अल्लाह की निशानियों में से है। ताकि यह लोग नसीहत हासिल करें।

तक़द्दुस—पावित्र्य फ़ुजूर—व्यभिचार, दुराचार ज़ीनत—शोभा।

२ ऐ आदम के बेटो ! तुमको शैतान फ़ित्ने में मुब्तला न कर दे। जैसा कि तुम्हारे माँ-बाप को बेहिश्त से निकलवाया। उनके कपड़े उनसे उतरवाये। ताकि उनको उनकी शर्मगाहें दिखा दे। वह और उसका कुंबा तुमको इस तरह से देखते हैं, कि तुम उनको नहीं देख सकते। बेशक, हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते।

३ और वह लोग जब कोई बुरा काम करते हैं, तो कहते हैं। कि हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है। और अल्लाह ही ने हमको ऐसा करने का हुक्म दिया है। बेशक, अल्लाह बुरे कामों का हुक्म नहीं दिया करता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो, जिसका तुम्हें अ़िल्म नहीं। ७.२६–२८

२५३ ग़ैर मुस्तनद रुहूबानीयत

१ फिर उनके बाद पै दर पै हमने रसूल भेजे। और उनके बाद मर्यम के बेटे ईसा को भेजा। और उसको इंजील अ़ता की। उसकी इत्तिबाअ़ करनेवालों के दिलों में नरमी और रहम पैदा कर दिया। और उन्होंने तरके-दुनिया (रुहूबानीयत) अपनी तरफ़ से नया निकाला था। उसको हमने उन पर लाज़िम नहीं किया था। मगर उन्होंने अल्लाह की रज़ा ढूँढ़ने के लिए वह किया। फिर उसको जैसे निभाना चाहिए था, नहीं निभाया। फिर हमने उनमें जो ईमानवाले थे, उनको उनका अज्र दिया। और बहुत से उनमें नाफ़र्मान थे। ५७.२७

ग़ैरमुस्तनद–अनधिकृत रुहूबानीयत–संन्यास दर पै–लगातार इत्तिबाअ़–अनुसरण लाज़िम–अवश्य नाफ़र्मान–आज्ञा न माननेवाला।

२५४ ब्रह्मचारी—यह्या अलैहिस्सलाम

१ उस जगह ज़करिया ने अपने पर्वर्द्गार को पुकारा। कहा, ऐ मेरे पर्वर्द्गार, मुझको अपने पास से पाकीज़ः औलाद अ़ता कर। बेशक, तू दुआ़ का सुननेवाला है।

२ फ़िरिश्तों ने पुकारकर कहा जब कि वह हुज्रे में खड़ा सलात पढ़ रहा था। कि अल्लाह तुझको यह्या की ख़ुश्ख़बरी देता है। और वह कलमतुल्लाह अ़ीसा की तसदीक़ करनेवाला। सरदार हसूर (ब्रह्मचारी) नबी होगा। और सालिह़ीन में से होगा।

३.३८-३९

२५५ अल्लाह को ह़ाज़िर-नाज़िर जानकर ख़्वाहिशे-नफ़सानी रोकना

१ फिर जब आयेगा वह बड़ा हंगामा।

२ उस दिन आदमी याद करेगा, जो सअ़ी उसने की थी।

३ और दोज़ख़ सामने लायी जायगी कि वह उसे देखें।

४ पस जिसने सरकशी की होगी।

५ हयाते-दुनिया को तरजीह दी होगी।

६ पस, दोज़ख़ ही उसका ठिकाना होगा।

७ और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा हो, और उसने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका हो।

८ तो बेशक, उसका ठिकाना बेहिश्त ही है। ७९.३४-४१

कलमतुल्लाह—ईश्वरीय शब्द तसदीक़ करना—सच्चा बताना सालहीन—नेक हाज़िर—उपस्थित नाज़िर—देखनेवाला तर्जीह देना—श्रेष्ठ मानना।

२२ पाकीज़गीए-मआ़ीशत

५४ अ़दम-सर्क़:

२५६ सूद हराम है

१ जो लोग सूद खाते हैं वह नहीं खड़े होंगे; मगर उस शख्स की तरह, जिसको शैतान ने छूकर बावला कर दिया। ऐसा इसलिए कि, वह कहते हैं; कि तिजारत भी तो सूद ही जैसी है। हालाँकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया है; और सूद को हराम। लिहाज़ा, जिस शख्स को उसके पर्वर्दिगार की तरफ से नसीहत पहुँचे। और वह सूद से बा'ज आ जाय। तो जो कुछ पहले वसूल हो चुका, वह उसका है। और उसका मुआ़मला अल्लाह के हवाले है। और जो कोई इसके बाद फिर सूद लेगा। तो वही हैं आगवाले, जिसमें वह हमेशा रहेंगे।

२ अल्लाह सूद का मठ मार देता है। और सदक़ात को नशव-नुमा देता है। और नाशुक्रे बदअ़मल को पसंद नहीं करता।

२.२७५-२७६

२५७ रक़म सूद पर न दो, ज़कात में दो

१ सो जो कुछ तुम सूद पर देते हो, ताकि लोगों के माल में (पहुँचकर) वह बढ़े, वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता। और जो कुछ ज़कात (पाक दिल से) अल्लाह की राह में देते हो, अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के इरादे से। तो ऐसे ही लोग अल्लाह के पास अपना दिया हुआ दुगना करनेवाले हैं।

३०.३९

पाकीज़गीए-मआ़ीशत—अर्थशुचिता अ़दम-सर्क़ा—अस्तेय मठ मारना—समूल नष्ट करना मठ—नील का हौज़ नशोनुमा—फूलना-फलना बदअ़मल—दुराचारी खुश्नूदी—प्रसन्नता।

२५८ सहीह नाप और तौल

१ और मद्यन की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा। भाइयो, अल्लाह की बंदगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं। और नाप-तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको फ़राग़त की हालत में देखता हूँ। और ऐसे दिन के अज़ाब से डरता हूँ, जो तुम सबको आ घेरेगा।

२ और ऐ भाइयो! इन्साफ़ के साथ पूरी नाप और तौल करो। और, लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दिया करो। और ज़मीन पर फ़साद फैलाते न फिरो।

३ अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिए बेहतर है। अगर तुम ईमानवाले हो। और मैं तुम पर कोई निग्राँ नहीं हूँ।

११.८४–८६

२५९ धोके की कमाई शैतान की कमाई

१ बड़ी खराबी है नाप-तौल में कमी करनेवालों के लिए

२ कि जब लोगों से नाप लें, तो पूरी-पूरी लें;—

३ और जब उनको नापकर या तौलकर दें, तो घटाकर दें।

८३.१–३

२६० हवस न करें

१ और तमन्ना न कर उस चीज़ की, कि जिसके जरीअः अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है……। ४.३२

फ़राग़त–अवकाश हवस–लोभ, लालच फ़ज़ीलत–श्रेष्ठता।

४५ अल्निहज ग़ैरुलमग़्बह

२६१ बुख़्ल में ख़सारा

१ हाँ, तुम लोग ऐसे हो, कि तुमको अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है; तो तुममें कोई ऐसा होता है कि बुख़्ल करता है। और जो कोई बुख़्ल करता है, वह खुद अपने लिए बुख़्ल करता है। ओर अल्लाह तो बेनियाज़ है। और तुम मुहताज हो। और अगर तुम मुँह फेरोगे, तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को लायेगा। फिर वह तुम्हारे जैसे नहीं होंगे। ४७.३८

२६२ कंजूस कंजूसी सिखाता है

१ और तुम सब अल्लाह की अिबादत करो। और उसके साथ किसीको शरीक न बनाओ। और माँ-बाप के साथ खुशअस्लूबी के साथ बर्ताव करो। और क़राबतदारों, और यतीमों, और मिस्कीनों, और पड़ोसी रिश्तेदार, और अजनबी हमसाये, और पास बैठनेवाले साथी, और मुसाफिर, के साथ अच्छा सुलूक करो। और उनके साथ, जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं। बेशक, अल्लाह पसंद नहीं करता इतरानेवाले शेखीबाज़ को।

२ जो कंजूसी करते हैं। और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं। और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से जो उनको दिया है, छुपाते हैं। ऐसे नाशुक्रों के लिए, हमने ज़िल्लत की सजा तयार रखी है। ४.३६-३७

अल्निहज–मार्ग ग़ैरुल मग़्बह–अशोषण, असंग्रह बुख़्ल–कंजूसी ख़सारा–नुकसान खुशअस्लूबी–सौजन्य क़राबतदार–रिश्तेदार शेखीबाज़–वल्गक।

२६३ बख़ीलों की दुर्गत

१ जो लोग अल्लाह के दिये हुए फ़ज़्ल में बुख़्ल करते हैं। वह यह गुमान न करें, कि उनके लिए बेहतर है। नहीं। बल्कि यह उनके लिए बुरा है। क़ियामत के रोज़ वह माल, जिसमें उन्होंने बुख़्ल किया था तौक़ बनाकर उनके गले में डाला जायगा। आस्मान और ज़मीन की मीरास अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखता है। ३.१८०

२६४ सोना-चाँदी जख़ीरा करनेवाले

१ ऐ ईमानवालो! बहुत से अहले-किताब आ़लिम और दुर्वेश लोगों के माल नाहक़ खा जाते हैं। और उन्हें अल्लाह की राह से रोकते हैं। और जो लोग सोना-चाँदी जमा' करके रखते हैं। और उसको अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते। तो उनको एक बड़ी दर्दनाक सजा की ख़ुशख़बरी दे दो।

२ जिस दिन कि उस माल पर दोज़ख़ की आग दहकायी जायगी। फिर उसीसे उनकी पेशानियों, करवटों, और पीठों को दाग़ा जायगा। (और उनसे कहा जायगा); यह है, जो तुमने अपने वास्ते जमअ़ कर रखा था। तो अब अपनी समेटी हुई दौलत का मज़ा चखो। ९.३४-३५

२६५ ज़मीन से चिमटनेवाले

१ ऐ ईमानवालो! तुमको क्या हुआ है। कि जब तुमसे कहा जाता है, कि अल्लाह की राह में कूच करो। तो तुम ज़मीन से चिमटकर रह जाते हो! क्या आख़िरत को छोड़कर, दुन्या की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये हो? तो दुन्यवी ज़िन्दगी का सरो-सामान आख़िरत के मुक़ाबिले में बहुत हक़ीर है। ९.३८

बख़ील—कृपण, कंजूस तौक़—हँसली दुर्वेश—फ़क़ीर।

२६६ क़ारून की सबक़्-आमोज़् कहानी

१ क़ारून मूसा की बिरादरी में से था। फिर उनके मुकाबले में सरकशी करने लगा। और हमने उसको इतने खज़ाने दिये थे, के उसकी कुंजियाँ उठाने से कई ज़ोरावर शख्स थक जाते थे। जब उसकी बिरादरी ने उससे कहा। इतरा मत। वाक़ई अल्लाह को इतरानेवाले नहीं भाते।

२ और जो तुझको अल्लाह ने दिया है, उसके ज़रीअ: आख़िरत के घर की जुस्तजू कर। और दुनिया से अपना हिस्सा वहाँ ले जाना न भूल। और इहसान कर। जैसे कि अल्लाह ने तेरे साथ इहसान किया है। और ज़मीन में फ़साद मत चाह। अल्लाह को फ़साद करनेवाले पसंद नहीं।

३ बोला। बेशक यह माल तो मुझे एक हुनर से मिला है जो मेरे पास है। क्या उसे मा'लूम नहीं, कि अल्लाह ने उससे पहले कई जमाअ़तें हलाक की हैं। जो उससे ज़्यादह क़वी और मालदार थीं। और गुनहगारों से उसके गुनाह पूछे नहीं जाते।

४ फिर एक बार वह अपनी बिरादरी के सामने अपने ठाठ से निकला। उसे देखकर उन्होंने कहा जो दुन्यवी ज़िन्दगी के ख्वाहाँ थे। अये काश ! हमको भी मिलता। जैसा कुछ क़ारून को मिला है। बेशक, वह बड़े नसीबवाला है।

५ और जिनको समझ-बूझ मिली थी वह बोले। ख़राबी है, तुम्हारे लिए। अल्लाह का सवाब बेहतर है, उन लोगों के लिए, जो ईमान रखते हैं और अच्छे काम करते हैं। और यह उनको ही दिया जाता है, जो सब्रवाले हैं।

सबक़्-आमोज़—पाठ सिखानेवाली जुस्तजू करना—ढूँढ़ना क़वी—बलवान् ख्वाहाँ—इच्छुक।

६ फिर हमने उसको और उसके घर को जमीन में धँसा दिया और अल्लाह के अ़लावा उसकी फिर कोई ऐसी जमाअ़त न हुई, जो उसकी मदद करती। न वह ख़ुद मदद ला सका।

७ और वह लोग, जो कल शाम उसके जैसा होने की आर्ज़ू कर रहे थे, कहने लगे। अरे-अरे! अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है। और जिसके लिए चाहता है, तंग कर देता है। और अगर अल्लाह हम पर इह्सान न करता, तो हमको भी ज़मीन में धँसा देता। अरे-अरे! मुन्किर कभी फ़लाह् नहीं पाते। २८.७६–८२

२६७ उनका वहाँ कोई दोस्त नहीं होता

१ वह ख़ुदाये-बुज़ुर्ग पर ईमान नहीं रखता था।
२ और मुह्ताज के खिलाने पर तरग़ीब नहीं देता था।
३ पस, आज उसका यहाँ कोई दोस्त नहीं रहा। ६९.३३–३५

२६८ कहता है, रब ने इ़ज़्ज़त दी, और उसीने ज़लील किया

१ पस, आदमी को जब उसका पर्वर्द्गार आज़माता है; या'नी उसको इज़्ज़त देता है और निअ़मत देता है; तो कहता है कि मेरे पर्वर्द्गार ने मुझे अ़िज़्ज़त दी।

२ और जब उसको जाँचता है, और उस पर रोज़ी तंग कर देता है तो कहता है के मेरे पर्वर्द्गार ने मेरी तौहीन की।
३ हर्गिज़ नहीं। बल्कि तुम यतीम की क़द्र नहीं करते।
४ और मुहताज को खिलाने पर एक-दूसरे को नहीं उभारते ?
५ और मीरास का माल खा जाते हो, समेट-समेटकर।
६ और माल को जी-जान से प्यार करते हो। ८९.१५–२०

२६९ कस्रते-दौलत के लिए मुक़ाबला का अंजाम

१ कस्रत की चाह ने तुमको ग़ाफ़िल किया ।
२ यहाँ तक, कि तुम क़ब्रों में जा मिले ।
३ हर्गिज़ नहीं । अन्क़रीब तुम्हें मा'लूम हो जायगा ।
४ फिर हर्गिज़ नहीं । अन्क़रीब तुम्हें मा'लूम हो जायगा ।
५ हर्गिज़ नहीं । काश तुम यक़ीन करके जानते ।
६ बेशक, तुमको दोज़ख़ ज़रूर देखना है ।
७ फिर उसको ज़रूर यक़ीन की आँखों से देखोगे ।
८ फिर उस दिन तुमसे ज़रूर पूछा जायगा निअ्मतों के बारे में ।

१०२.१-८

५६ सद्क़ात

२७० सद्क़ात के बारे में तम्सीलें

१ जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल ऐसी ही है । जैसे एक दाना कि उससे सात बालें उगीं । हर साल में सौ दाने हों । अल्लाह जिसके लिए चाहता है बढ़ाता है । और अल्लाह बड़ी वुसअ्तवाला, और जाननेवाला है ।
२ जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं । और फिर ख़र्च करके, न इह्सान जताते हैं, और न ईज़ा पहुँचाते हैं । उनके लिए उनका अज्र उनके पर्वर्दगार के यहाँ है । और उनके लिए न डर है । और न वह ग़मगीन होंगे ।
३ एक भली बात, और मुआ़फ़ कर देना उस सद्क़ः से बेहतर है, कि जिसके पीछे ईज़ा हो । और अल्लाह बेनियाज़ और निहायत बुर्दबार है ।

कस्रते-दौलत—धन-वैपुल्य अन्क़रीब—निकट में बालें—ख़ोशे
बुर्दबार—सहिष्णु ।

४ ऐ ईमानवालो ! अपने सद्क़ात को इह्सान जतलाकर, या ईज़ा पहुँचाकर, ज़ाये' न करो। उस शख़्स की तरह्, जो अपना माल अल्लाह की राह में सिर्फ़ लोगों के दिखलाने के लिए ख़र्च करता है, और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। सो उसकी मिसाल ऐसी है। जैसे एक चटान। उस पर कुछ मिट्टी पड़ी है। फिर उस पर ज़ोर का मेंह बरसा। तो उसने पत्थर को साफ़ कर दिया। ऐसे लोगों को उनका कमाया हुआ कुछ भी हाथ नहीं लगता। और अल्लाह मुन्किरों को सीधी राह नहीं दिखाता।

५ और जो लोग अल्लाह की रज़ाजोई के लिए और अपने दिलों के सबात के लिए, अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं; उनकी मिसाल ऐसी है। जैसे बुलंदी पर एक बाग़ है। और उस पर जोर का मेंह पड़ा। तो वह बाग़ अपना फल ज़्यादः लाया। और अगर उस पर मेंह न पड़ा, तो हल्की फुवार भी काफ़ी है। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देखनेवाला है।

६ क्या तुममें से कोई यह पसंद करेगा ? कि उसका एक खजूर या अंगूर का बाग़ हो। उसके नीचे नहरें बहती हों। उसके उस बाग़ में हर तरह् के फल हों। वह बूढ़ा हो गया हो और औलादे-नातवाँ रखता हो कि इस ह़ाल में उस बाग़ पर एक बगोला आ पड़े, जिसमें आग हो। जिससे वह बाग़ जल जाये। इस तरह् अल्लाह तुमसे अपनी बातें बयान करता है। ताकि तुम ग़ौर करो। २.२६१–२६६

मेंह–मेघ सबात–स्थिरता नातवाँ–अशक्त बगोला–घूमती हुई आग, बवंडर।

२७१ सद्क़: में अच्छी चीज़ें दो

१ ऐ ईमानवालो, जो तुमने कमाया है, या जो कुछ तुम्हारे लिए हमने ज़मीन से पैदा किया है, उसमें से अुम्दा चीज अल्लाह की राह में खर्च करो। और यह इरादा न करो, कि रद्दी चीज़ अल्लाह की राह में ख़र्च करो। ह़ालाँकि तुम ख़ुद वह चीज़ लेनेवाले नहीं। इल्ला यह, कि उसके लेने में तुम चश्मपोशी बरत जाओ। और जान लो, कि अल्लाह बेनियाज़ है, और तारीफ़ का मुस्तहिक़ है। २.२६७

२७२ पोशीद: सद्क़ात

१ अगर तुम सद्क़ात अ़लानिय: दो, तो यह भी अच्छा है। और अगर तुम उसको छुपाकर हाजतमंदों को दो; तो वह तुम्हारे लिए ज़्यादह: बेह्तर है, और तुमसे तुम्हारी कुछ बुराइयाँ दूर करेगा। और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़ूब बाख़बर है।

२.२७१

२७३ सद्क़: बिनमाँगे

१ सद्क़: उन तंग्दस्तों के लिए, जो अल्लाह के काम में इस तरह घिर गये हैं, कि मुल्क में दौड़-धूप नहीं कर सकते। उनकी ख़ुद्दारी की वजह से नावाक़िफ़ शख़्स उनको ख़ुश्हाल समझता है। तुम उनके चेहरों से उनको पहचान सकते हो। वह लोगों के पीछे पड़कर कुछ नहीं माँगते। और जो कुछ माल तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे, बेशक अल्लाह उसको जानता है।

चश्मपोशी–देखा-अनदेखा करना मुस्तहक़–हक़दार अ़लानिय:–प्रकट हाजतमंद–जरूरतवाला तंगदस्त–जिसके हाथ में धन नहीं है ख़ुद्दारी–स्वाभिमान।

२ जो लोग अपने माल, रात-दिन छुपे और खुले, अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं; उनका अज्र् उनके पर्वर्द्गार के पास है। उनको न कोई डर है। और न वह ग़मगीन होंगे।

२.२७३-२७४

२७४ सबसे प्यारी चीज़ अल्लाह को

१ तुम नेकी को हर्गिज़ हासिल न कर सकोगे, जब तक कि अपनी प्यारी चीज़ को अल्लाह की राह में ख़र्च न करो। और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे, तो अल्लाह उसे जानता है। ३.९२

२७५ जीते जी अपने हाथों से

१ ऐ ईमानवालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुमको अल्लाह के बारे में ग़ाफ़िल न कर दे। और जो ऐसा करें, तो ऐसे ही लोग घाटे में हैं।

२ और हमने जो कुछ तुमको दिया है, उसमें से अल्लाह की राह में ख़र्च करो। क़ब्ल इसके कि तुममें से किसीको मौत आ जाये। तो कहने लगे, ऐ पर्वर्द्गार! तूने मुझे एक थोड़ी-सी मुद्दत तक मुह्लत क्यों न दी; कि मैं सद्क़: देता और नेक लोगों में शामिल हो जाता।

३ और अल्लाह हर्गिज़ किसी जी को, जब उसकी मौत आ जायगी, तो मुह्लत नहीं देगा। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बाख़बर है।

६३:९–११

२३ अख़लाक़ी ता'लीम

५७ अच्छाई की ताक़त

२७६ अच्छाई और बुराई की तमीज़

१ कह, नापाक और पाक बराबर नहीं होते। गो, नापाक की कस्रत तुमको कितने ही ता'ज्जुब में डालती हो। इसलिए ऐ अक़्लमंदो ! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। ताकि तुम्हारी नजात हो। ५.१०३

५८ अख़लाक़ी हिदायतें

२७७ अख़्लाक़ की जामेअ़् ता'लीम

१ बेशक, अल्लाह हुक्म करता है इन्साफ़ करने का, और भलाई करने का, और क़राबतदारों के देने का। और (मना') करता है, बेहयाई और नामा'क़ूल काम से, और ज़ुल्म व ज़्यादती से। और तुमको समझाता है, ताकि तुम सबक़ हासिल करो। १६.९०

२७८ अख़्लाक़ी ज़िन्दगी का नक़्शः

१ (१) तेरे पर्वर्दगार ने फ़ैसला कर दिया है, कि उसके सिवा किसीकी अ़िबादत न करो। और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करो। अगरचे तेरे पास उनमें से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनको उफ़ तक न कह। और न उनको झिड़की दे और उनसे अदब से बात कर।

२ और उनके सामने आ़जिज़ी और मेहरबानी से झुककर रह। और दुआ़ किया कर। और कह, ऐ रब ! उन दोनों पर रह्म कर जैसा कि उन्होंने मुझे बचपन में पाला।

३ (२) तुम्हारा पर्वर्दगार खूब जानता है, तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम नेक हो तो वह अिताअ़त की तरफ लौट आनेवालों को बख़्शनेवाला है।

जामेअ़्—समावेशक सुलूक—बरताव।

४ (३) रिश्तःदार और मुहताज और मुसाफ़िर को उनका हक़ देते रहो (४) फ़ुज़ूलख़र्ची न करना।

५ बेशक फ़ुज़ूल ख़र्च लोग शैतान के भाई हैं। और शैतान अपने पर्वर्द्गार का बड़ा नाशुक्रा है।

६ (५) और अगर तू अपने पर्वर्द्गार की रह्मत की तलब में, जिसकी तुझे उम्मीद है, उनसे इअ्राज़ करे; तो उनको नरमी से जवाब दे।

७ (६) और न तो (कंजूसी से) अपना हाथ गर्दन से बाँध रख और न बिलकुल (फ़ुज़ूलख़र्ची से) खुला फैला दे। कि मलामतज़दः और आ़जिज़ बनकर बैठ रहे।

८ बेशक तेरा पर्वर्द्गार, जिसके लिए चाहता है, रिज़्क़ कुशादा कर देता है। और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। बेशक, वही अपने बंदों से बाख़बर, देखनेवाला है।

९ (७) और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से न मार डालो। हम उनको भी रोज़ी देते हैं, और तुमको भी। दर्-हक़ीक़त उनको मार डालना बड़ी ख़ता है।

१० (८) और ज़िना के क़रीब न फटको। वह यक़ीनन् बेहयाई है, वह बुरी राह है।

११ (९) और उस जान को क़त्ल न करो, जिसको अल्लाह ने मना' किया है मगर हक़ के साथ। और जो ज़ुल्म से मारा गया, उसके वारिस को इख़्तियार दिया है। तो वह उस बारे में हद से न निकल जाये। बेशक उसकी मदद की जाती है।

इअ्राज़ करना—मुँह मोड़ना   कुशादा—विशाल   मुफ़्लिसी—गरीबी
दर्-हक़ीक़त—वास्तव में   ज़िना—व्यभिचार।

१२ (१०) और यतीम के माल के पास न जाओ, मगर अच्छी नि्य्यत से। यहाँ तक, कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाये। और (११) अ़ह्द को पूरा करो। और बेशक अ़ह्द की बाज़्पुर्स होगी——

१३ (१२) और जब नाप कर दो तो पूरा भरकर दो। और ठीक तराज़ू से तौलो। यह बेह्तर है। और इसका अंजाम भी बेह्तर है।

१४ (१३) और किसी ऐसी बात के पीछे न लग, जिसका तुझे अ़िल्म नहीं। बेशक, कान और आँख और दिल, सबकी बाज़्-पुर्स होगी।

१५ (१४) और ज़मीन में इतराता हुआ न चल। न तू ज़मीन को फाड़ सकता है। और न पहाड़ों की बुलंदी को पहुँच सकता है।

१६ इन अह्काम में से हर एक का बुरा पहलू तेरे रब के नज़दीक नापसंदीद: है।

१७ यह इन हि्कमत की बातों में से है, जो कि तेरे रब ने तुझ पर वह्.य की है……। १७.२३–३६

२७९ बेटे की लुक़मान की नसीहत

१ हमने लुक़मान को हि्कमत अ़ता की, कि अल्लाह का शुक्र अदा करो। जो कोई शुक्र करता है, वह अपने भले के लिए करता है। और जो नाशुक्री करता है तो अल्लाह बेनियाज़ है, और तारीफ़ के लायक़।

बाज़पुर्स होगी–पूछा जायगा अ़ह्द–अभिवचन नापसंदीद: है–भाती नहीं अता–प्रदान।

२ और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा। कि बेटा ! (१) एक ख़ुदा के साथ किसीको शरीक न ठहराना। बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।

३ (२) और हमने इन्सान को उसके माँ-बाप के मुता'ल्लिक ताकीद कर दी है। उसकी माँ ने उसको थक-थककर पेट में रखा। और उसका दूध दो बरस में छूटता है। कि तू मेरी और अपने माँ-बाप की शुक्रगुज़ारी कर। मेरे ही तरफ़ लौटकर आना है।

४ (३) और अगर वह दोनों तुझे इस बात पर मज्बूर करें, कि उस चीज़ को मेरा शरीक मान जिसका तुझे कोई अ़िल्म नहीं। तो उन दोनों का कहना मत मान। और (४) दुन्या में उनका अच्छी तरह साथ दे। और (५) उस शख़्स की राह इख़्तियार कर जो मेरी तरफ़ रुजूअ़् हुआ। मेरी तरफ़ तुमको लौटकर आना है। फिर मैं तुमको वह सब कुछ बतला दूँगा जो तुम करते थे।

५ (६) बेटा ! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो, ख़्वाह वह किसी पत्थर में हो या आस्मानों में, या ज़मीन में। अल्लाह उसे यक़ीनन् हाज़िर करेगा। बेशक अल्लाह बड़ा बारीकबीन बाख़बर है।

६ (७) बेटा ! सलात को क़ायम कर। (८) और भली बात का हुक्म कर। (९) और बुराई से रोक। (१०) और तुझ पर जो आ पड़े, उस पर सब्र कर। बेशक, यह हिम्मत का काम है।

ज़ुल्म—दोष।

७ (११) और लोगों की तरफ़ अपने गाल मत फुला। (१२) और ज़मीन पर इतराकर न चल। बेशक, अल्लाह किसी मुन्किर शेख़ीबाज़ को पसंद नहीं करता।

८ (१३) और चाल में मियाना-रवी इख़्तियार कर। (१४) और अपनी आवाज़ को नर्म कर। बेशक, आवाज़ में सबसे बुरी आवाज़ गधे की है। ३१.१२-१६

२८० अच्छा गृहस्थ

१ हमने इन्सान को हुक्म किया, कि अपने माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करे। उसकी माँ ने तकलीफ़ से उसका बोझ उठाया। और तकलीफ़ से उसे जनम दिया। और उसका हमल और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में पूरा होता है। यहाँ तक कि जब जवानी को पहुँचता है और चालीस बरस का हो जाता है, तो कहने लगता है। कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मुझे तौफीक़ दे कि मैं तेरी उन निअ़मतों का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझे और मेरे माँ-बाप को अ़ता की हैं। और यह, कि मैं नेक काम करूँ। जिससे तू राज़ी हो, और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह़ कर। वाक़ई, मैं तेरी तरफ़ लौट आया। और मैं फ़र्माँबर्दारों में से हूँ।

२ यह वह लोग हैं, कि हम उनके किये हुए बेहतर काम उनसे क़बूल करते हैं, और उनकी बुराइयाँ मुआ़फ़ करते हैं। ये लोग जन्नतवालों में हैं। और उनसे जो वा'दः किया जाता था वह सच्चा वा'दः था। ४६.१५-१६

गाल फुलाना—गर्व जताना, मुँह फुलाना, रूठना मियाना-रवी—मध्यम चाल।

२४ आदाबे-मुआशरत

५६ आदाब

२८१ तर्के मुनश्शियात

१ लोग शराब और जूए के बारे में तुझसे पूछते हैं। कह, उन दोनों में बड़ा गुनाह है। और, लोगों के लिए उनमें कुछ फ़ायदे हैं। मगर उनका गुनाह उनके फ़ायदे से बहुत ज़्यादः है......। २.२१६

२८२ जवाब में ज़्यादः अदब बरतो

१ जब तुमको इह्तेराम के साथ सलाम किया जाये, तो तुम उसको उससे बेह्तर तरीक़े से जवाब दो, या उसीको फेर दो। बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेनेवाला है। ४.८६

२८३ किसीके घर में दाखिल होने के आदाब

१ ऐ ईमानवालो! अपने घरों के सिवा किसी और घर में दाखिल न हो जब तक कि इजाज़त न ले लो, और घरवालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेह्तर है। ताकि तुम याद रखो।

२ पस अगर उस घर में किसीको न पाओ, तो उसमें दाखिल न हो। यहाँ तक, कि तुमको इजाज़त न मिल जाय। और अगर तुमसे कहा जाय, कि लौट जाओ; तो तुम लौट जाओ। वह तुम्हारे लिए बहुत पाकीज़गी की बात है। और अल्लाह तुम्हारे सब कामों का अ़िल्म रखता है। २४.२७-२८

इह्तेराम—आदर।

२८४ मज्लिसी आदाब

१ ऐ ईमानवालो ! जब तुमको कहा जाता है, कि मज्लिसों में कुशादगी करो; तो कुशादः कर दो। अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा करेगा। और जब तुमको उठने के लिए कहा जाये, तो उठ जाओ। तुममें से जो ईमान रखते हैं, और अ़िल्म रखते हैं, अल्लाह उनके दर्जे बुलंद कर देगा। और जो कुछ तुम करते हो; अल्लाह उससे बाख़बर है। ५८.११

२८५ सिफ़ारिश में जिम्मःदारी

१ जो नेक बात की सिफ़ारिश करेगा, उसको उसमें हिस्सः मिलेगा। और जो कोई बुरी बात की सिफ़ारिश करेगा, वह उसमें हिस्सः पायेगा। और अल्लाह हर चीज़ पर नज़र रखनेवाला है। ४.८५

२८६ मस्लहतें

१ ऐ ईमानवालो ! जब तुम सर्गोशी करो, तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सर्गोशी न करो। नेकोकारी और तक़्वा के लिए मस्लहत करो। और अल्लाह से डरते रहो। उसीके पास तुम सब जमा' किये जाओगे।

२ क्या तूने देखा नहीं, कि अल्लाह जानता है, जो कुछ आस्मानों में है, जो कुछ ज़मीन में है। कोई मस्लहत तीन आदमियों की ऐसी नहीं, जिसमें वह अल्लाह चौथा न हो। और न पाँच आदमियों की सर्गोशी, जिसमें वह छठा न हो। और न उससे कम, और न ज़्यादः। मगर वह उनके साथ होता है। ख्वाह वह कहीं भी हों। फिर वह उनको क़ियामत के दिन उनके सब कामों की खबर देगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ को जानता है। ५८.९ और ७

सर्गोशी—कानाफूसी, मस्लहत।

७ इन्सान और उसकी फ़ित्रत

मनुष्य और उसका स्वभाव

२५ इन्सान

६० इन्सान की ख़ुसूसियतें

२८७ इन्सान की इम्तियाज़ी सलाहियत—नुत्क़

१ जब तेरे रब ने फ़िरिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नायब बनानेवाला हूँ। तो फ़िरिश्तों ने कहा कि क्या तू ज़मीन में किसी ऐसे को मुक़र्रर करेगा, जो उसमें फ़साद पैदः करे, और ख़ून बहाये ? हालाँकि, हम तेरी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं। और तेरी तक़्दीस करते हैं। कहा बेशक मैं जानता हूँ, जो कुछ तुम नहीं जानते।

२ और अल्लाह ने आदम को सब चीज़ों के नाम सिखा दिये। फिर उनको फ़िरिश्तों के सामने पेश किया। और कहा, मुझे उनके नाम बताओ, अगर तुम सच्चे हो।

३ उन्होंने कहा, पाक है तू। हमको तूने जो कुछ सिखाया, उसके सिवा हम कुछ नहीं जानते। बेशक, तू ही जाननेवाला, हिकमतवाला है।

४ कहा, ऐ आदम ! फ़िरिश्तों को उनके नाम बता दे। तो जब उसने उनको उनके नाम बता दिये, तो अल्लाह ने कहा : क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था, कि मैं आस्मानों और ज़मीन की मख़्फ़ी हक़ीक़तें जानता हूँ ? जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो, वह भी जानता हूँ। और जो कुछ छुपाते हो, उसे भी।

५ और जब हमने फ़िरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दः करो तो उन सबने सज्दः किया, बजुज़ शैतान के। उसने इन्कार किया। और अपनी बड़ाई के घमंड में पड़ गया। और नाफ़र्मानों में शामिल हो गया। २.३०–३४

सलाहियत–योग्यता नुत्क़–वाणी तक़्दीस करना–पुनीतता का वर्णन करना मख़्फ़ी–गुप्त।

२८८ इन्सान को अल्लाह ने दोनों हाथों से वनाया

१ कहा, ऐ इब्लीस ! जिस चीज़ को मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया, उसको सज्दः करने से तुझे क्या चीज़ मानिअ् हुई ?··· ३८.७५

२८९ तीन ख़ास निअ्मतें—किताब, मीज़ान और लोहा

१ हमने अपने रसूलों को खुली निशानियाँ देकर भेजा है। और उनके साथ हमने किताब उतारी है। और मीज़ान उतारी ताकि लोग इन्साफ़ पर कायम रहें। और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ा खतरा है, और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं······। ५७.२५

२९० अल्लाह की अमानत

१ हमने यह अमानत आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की। सबने उसको उठाने से इन्कार कर दिया। और उससे डर गये। और इन्सान ने उसको उठा लिया। वाक़अी, वह बड़ा बेबाक और बड़ा नादान है। ३३.७२

२९१ दो सिरे—बेह्तरीन और बद्तरीन

१ वाक़अी, हमने इन्सान को बेह्तरीन साख़्त में पैदः किया।
२ फिर हमने उसको लौटा दिया, निचलों में सबसे ज़्यादः निचला बनाकर। ९५.४-५

२९२ तीन दर्जे—रज़ील, औसत और अफ़्ज़ल

१ ······तो बा'ज़े उनमें अपनी जान पर ज़ुल्म करनेवाले हैं। और बा'ज़े उनमें मियानारव हैं। और बा'ज़े उनमें अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों में सबसे अच्छे हैं। यही बड़ा फज़्ल है। ३५.३२

• मीज़ान—तराज़ू खतरा—भय बेबाक—निर्लज्ज बेहतरीन और बदतरीन—सर्वोत्तम तथा सर्वहीन साख़्त—बनावट रज़ील—नीच अफ़्ज़ल—उच्च औसत—मध्यम।

२९३ इन्सान की तख़्लीक़ का मक़सद

१ मैंने जिन्न और इन्सान को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया, कि वह मेरी बंदगी करें।

२ मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता। और न यही चाहता हूँ, कि वह मुझे खिलायें।

३ बेशक, अल्लाह ही सबको रोज़ी देनेवाला, ज़ोरावर, और ताक़तवर है। ५१.५६—५८

६१ इन्सान की ख़ामियाँ

२९४ बेहिम्मत

१ अगर फ़ायदः क़रीब होता, और सफ़र मा'मूली होता तो वह लोग ज़रूर तेरे साथ हो लेते। मगर उन पर तो यह मसाफ़त् बहुत कठिन हो गई......। ९.४२

२९५ तज्रिबे से सबक़ नहीं लेते

१ क्या उन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की है, जिससे कि वह देखते, कि उनसे पहलों का क्या अंजाम हुआ? वह उनसे क़ुव्वत में ज़्यादः थे। और उन लोगों ने ज़मीन को जोता-बोया था। और जितना इन्होंने इसको आबाद किया है, उससे ज़्यादः उन्होंने इसको आबाद किया था। उनके पास उनके रसूल खुली निशानियाँ लेकर आये। सो अल्लाह उन पर ज़ुल्म करनेवाला न था। बल्कि वह ख़ुद अपने-आप पर ज़ुल्म कर रहे थे। ३०.९

२९६ तलव्वुन-मिज़ाज

१ अगर हम इन्सानों को अपनी तरफ़ से रहमत का मज़ा चखा देते हैं, फिर उससे उसको छीन लेते हैं तो वह नाउम्मीद और नाशुक्रा हो जाता है।

ख़ामी—कमी मसाफ़त—सफ़र तलव्वुन-मिज़ाज—[illegible]।

२ और अगर हम उसको तकलीफ़ के बा'द, जो उसको पहुँची है, निअ्मत का मज़ा चखा दें, तो वह कहने लगता है, कि मेरे सारे दुख-दर्द दूर हो गये। बेशक, वह बड़ा इतरानेवाला, शेखी-बाज़ है। ११.९-१०

२९७ ह़रीस

१ मैंने उसको कस्रत से माल दिया।
२ और साथ रहनेवाले बेटे।
३ और उसके लिए हर तरह की तय्यारी कर दी।
४ फिर भी हवस रखता है, कि मैं उसे और ज़्याद: दूँ। ७४.१२–१५

२९८ बेइस्तिक़्लाल

१ बेशक, इन्सान बेसब्र पैद: किया गया है।
२ जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है, तो घबरा जाता है।
३ और जब उसको फ़ायद: पहुँचता है, तो (दूसरों को उसमें हिस्स: देने में) कुड़कुड़ाता है। ७०.१९–२१

२९९ बेहि़स और ग़ाफ़िल

१ क्या ये लोग देखते नहीं, कि वह हर साल एक बार या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं। फिर भी वह न तो तौब: करते हैं। और न कोई सबक़ लेते हैं। ९.१२६

३०० बुराई की तरफ़ जल्द बढ़नेवाला

१ ······(सालिह अलैहिस्सलाम ने कहा), ऐ मेरे लोगो! भलाई से पहिले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो। अल्लाह से मुआफ़ी क्यों नहीं माँगते। ताकि तुम पर रह्म किया जाये। २७.४६

बेइस्तक़्लाल—सातत्यहीन बेहि़स—भावनाहीन, निर्लज्ज।

६२ बुराई का रुजहान

३०१ नफ़्स बुराई सिखाता है

१ मैं अपने नफ़्स की बराअत नहीं करता। बेशक, इन्सान की ख़्वाहिश (नफ़्स) तो बुराई का हुक्म देती है। इल्ला यह, कि किसी पर मेरे रब की रह्मत हो। बेशक, मेरा पर्वर्दिगार बख़्शनेवाला, मेह्रबान है। १२.५३

३०२ अगर अल्लाह सज़ा देता

१ अगर अल्लाह लोगों को उनके आ'माल की पादाश में पकड़ता, तो रूए-ज़मीन पर एक मुतनफ़्फ़िस न छोड़ता……। ३५.४५

३०३ भलाई अल्लाह की और बुराई तेरी

१ जो भलाई तुझे पहुँची है, वह अल्लाह की तरफ़ से हुई है। और जो मुसीबत तुझको पहुँची है, वह तेरे नफ़्स की तरफ़ से है…। ४.७९

६३ इह्सान फ़रामोश

३०४ ऐ इन्सान ! तू नाशुक्रा क्यों हुआ ?

१ ऐ इन्सान ! तुझको किस चीज़ ने तेरे करीम पर्वर्दिगार से बहका दिया ?

२ जिसने तुझको पैदः किया। फिर तुझे ठीक किया। फिर तुझे बराबर किया।

३ जिस सूरत में चाहा, तुझे तरतीब दिया। ८२.६–८

३०५ नाशुक्रगुज़ार

१ वाक़ई, इन्सान अपने पर्वर्दिगार का नाशुक्रा है।

२ और बिला शुबः, इस बात पर गवाह भी है।

रुजहान–प्रवृत्ति नफ़्स–वासना पादाश–सज़ा मुतनफ़्फ़िस–प्राणी।

३ और वह माल की महब्बत में पक्का है ।
४ क्या वह नहीं जानता वह वक़्त, जब उठाया जायगा, जो कुछ क़ब्रों में है ।
५ और हासिल किया जायगा जो कुछ सीनों में है ।
६ बेशक उनका पर्वर्दगार उस रोज़ उनके हाल से पूरा आगाह है । १००.६–११

३०६ मुसीबत में अल्लाह की याद । और ख़ुशी में फ़रामोशी

१ जब इन्सान को तकलीफ़ पहुँचती है; तो वह लेटे बैठे खड़े, हमको पुकारता है । फिर जब हम उससे वह तकलीफ़ हटा देते हैं; तो ऐसा चल निकलता है, गोया किसी तकलीफ़ के पहुँचने पर उसने हमको पुकारा ही न था । इस तरह हद से गुज़र जानेवालों के लिए, उनके कर्तूत ख़ुशनुमा बना दिये गये ।
१०.१२

३०७ समंदर और किनारे की मिसाल

१ वह अल्लाह ही है, जो तुमको ख़ुश्की और तरी में फिराता है । यहाँ तक, कि जब तुम कश्तियों में होते हो, और कश्तियाँ लोगों को लेकर मुवाफ़िक हवा से चलती हैं, और लोग उससे ख़ुश होते हैं । कि उन कश्तियों पर तुंद हवा आती है । और उन पर हर तरफ़ से मौजें उठी चली आती हैं । और वह समझ लेते हैं, कि वह घिर गये । तो वह दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालस करके, उससे दुआएँ माँगने लगते हैं । कि अगर तूने हमको इससे बचा लिया, तो हम ज़रूर शुक्र-गुज़ार हो जायेंगे ।

फ़रामोशी–विस्मरण ख़ुशनुमा–प्रियदर्शन ख़ुश्की और तरी–थल-जल तुंद–क्रुद्ध, कुपित ।

२ फिर जब अल्लाह उनको बचा लेता है, तो वह फ़ौरन् ही ज़मीन में नाहक़ सर्कशी करते हैं। ऐ लोगो! तुम्हारी यह सर्कशी तुम्हारे ही ख़िलाफ़ है। दुन्यवी चंद-रोज़ः ज़िन्दगी का नफ़ा' उठा लो। फिर हमारे ही पास तुमको लौटकर आना है। तो हम तुम्हें बतला देंगे, कि तुम क्या कुछ करते रहे। १०.२२-२३

३०८ यह मेरी अह्लियत है!

१ इन्सान ख़ुश्हाली की दुआ माँगने से थकता नहीं। और अगर उसको तकलीफ़ पहुँचती है; तो वह बहुत मायूस, नाउम्मीद होता है।

२ और किसी तकलीफ़ के बा'द, जो उसको पहुँचती है; हम उसे अपनी रह्मत का मज़ा चखा दें। तो वह ज़रूर कहेगा, कि "यह मेरे वास्ते है"…।

३ और जब हम इन्सान पर निअ्मतें भेजते हैं; तो वह मुँह फेर लेता है और पहलूतही करता है। और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है, तो वह लम्बी-चौड़ी दुआवाला हो जाता है। ४१.४६, ५०, ५१

६४ मोमिन और मुन्किर

३०९ भलाई पर अक़ीदः रखनेवाला और भलाई पर अक़ीदः न रखनेवाला

१ क़सम है रात की, जब छा जाये।
२ और दिन की, जब रौशन हो जाये।
३ और उस ज़ात की, जिसने पैदः किये नर और मादः।
४ बेशक, तुम्हारी सऔ मुख़्तलिफ़ है।

ख़ुशहाली—अच्छी अवस्था पहलूतही—उपेक्षा, अलग रहना सऔ—दौड़-धूप, प्रयास।

५ सो जिसने अल्लाह् की राह में दिया। और पर्हेज़गारी इख़्तियार की।
६ और भली बात की तसदीक़ की।
७ तो हम उसके लिए आसानियाँ बहम पहुँचायेंगे।
८ और जिसने बुख़्ल किया। और बेपर्वाई बरती।
९ और भली बात को झुठलाया।
१० तो हम उसको आसानी से सख़्ती में (दोज़ख़ में) पहुँचा देंगे।
११ और उसका माल उसके काम न आयेगा, जब वह् गढ़े में गिरेगा।
१२ बेशक, रहनुमाई हमारे ज़िम्मः है।
१३ बेशक, दुन्या और आख़िरत दोनों हमारी ही हैं।
१४ तो हमने तुमको एक भड़कती हुई आग से आगाह कर दिया।
१५ उसमें वही गिरेगा, जो बद्बख़्त है।—
१६ जिसने झुठलाया, और मुँह फेरा।
१७ और उस आग से वह् बचा लिया जायगा, जो बड़ा पर्हेज़गार है।
१८ जो अपना माल अल्लाह् की राह में देता है ताकि पाक हो जाये।
१९ और उस पर किसीका इह्सान नहीं है कि (जिसका इस तरह्) बदला दिया जा रहा है।
२० इल्ला यह्, कि उसको अपने रब्बे-आ'ला की रज़ा मक़्सूद है।
२१ और अन्क़रीब वह् राज़ी हो जायगा। ९२.१—२१

बहम—एक साथ बद्बख़्त—अभागा इल्ला यह् कि—सिवाय इसके कि रब्बे-आ'ला—उच्च प्रभु मक़्सूद—उद्दिष्ट।

८ रसूल

२६ रसूल

६५ रसूल, सबकी बहबूदी के लिए

३१० रसूल अपनी मादरी ज़बान में बोलते हैं

१ हमने कोई भी रसूल भेजा, तो उसकी क़ौम की ज़बान बोलने-वाला भेजा। ताकि वह उन्हें अच्छी तरह खोलकर समझा सके···। १४.४

३११ हर क़ौम के लिए रसूल

१ हरएक जमाअत का एक रसूल है। फिर जब उनका वह रसूल आता है, तो उनके दर्मियान इन्साफ़ से फ़ैसलः होता है। और उन पर ज़ुल्म नहीं होता। १०.४७

६६ रसूल इन्सान ही हैं

३१२ पहले के रसूल भी इन्सान ही थे

१ हमने तुझसे पहले सिर्फ़ आदमियों को ही पैग़म्बर बनाकर भेजा है, जिनको हम वह्य भेजते थे। पस अगर तुम्हें मा'लूम न हो तो ज़िक्रवालों से पूछो।

२ और हमने उनके बदन ऐसे नहीं बनाये थे कि वह खाना न खाते हों। और न वह हमेशा रहनेवाले थे। २१.७-८

३१३ बाल-बच्चों में रहनेवाले

१ तुझसे पहले हम बहुत से पैग़म्बर भेज चुके हैं। और हमने उनको बीवियों और बच्चोंवाला किया। और किसी पैग़म्बर के लिए मुम्किन न था, कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी ले आये। हरएक वा'दः लिखा हुआ है। १३.३८

रसूल—प्रेषित बहबूदी—कल्याण वादः—अभिवचन।

३१४ तमाम रसूलों को शैतान से साबिक़ा पड़ा

१ तुझसे पहले किसी ऐसे रसूल और नबी को नहीं भेजा, कि जब कभी उसने तमन्ना की, तो शैतान ने उस तमन्ना में वस्वसः डाला न हो। पस, अल्लाह शैतान के वस्वसः को हटा देता है। और अपनी निशानियों को मुह्कम करता है। और अल्लाह जाननेवाला, और हिकमतवाला है। २२.५२

३१५ अल्लाह के रसूल इन्सान ही क्यों ?

१ लोगों के पास जब कभी हिदायत आयी, तो उनको ईमान से किसी चीज़ ने नहीं रोका। मगर उनके इस क़ौल ने, कि अल्लाह ने इन्सान को पैग़म्बर बनाकर भेजा है !

२ कह, अगर ज़मीन में फ़िरिश्ते इत्मिनान से चल-फिर रहे होते; तो हम ज़रूर किसी फ़िरिश्ते को, उन पर पैग़म्बर बनाकर, आस्मान से उतारते। १७.९४-९५

३१६ रसूल इन्सान हैं, मगर अल्लाह के मुल्हम हैं

१ उनके रसूल बोले, क्या अल्लाह के बारे में तुमको शक है, जो आस्मानों और ज़मीन का बनानेवाला है ? वह तुम्हें बुला रहा है। ताकि तुम्हारे क़ुसूर मुआफ़ करे, और तुमको एक वक़्ते मुक़र्रर: तक मुहलत दे। उन्होंने कहा। तुम तो हम जैसे ही इन्सान हो। हमें उसकी बंदगी से रोकना चाहते हो, जिसकी बंदगी हमारे बाप-दादा करते रहे। सो तुम हमारे पास कोई सनद ले आओ।

साबिक़ा—संबंध मुह्कम—पक्का, मज्बूत इतमिनान से—शांति से मुल्हम—कृपापात्र सनद—प्रमाणपत्र।

२ उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं। मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिन पर चाहता है, इह्सान करता है। और यह हमारे इख़्तियार में नहीं, कि बग़ैर अल्लाह के हुक्म के, तुम्हारे पास कोई सनद ला सकें। और अल्लाह पर ही ईमानवालों को भरोसः करना चाहिए।

३ और हमको क्या हुआ, कि हम अल्लाह पर भरोसः न करें। जब कि उसने हमको हमारी राहें दिखा दीं। और जो अज़ीयतें तुम हमको दे रहे हो हम उन पर ज़रूर सब्र करेंगे। और भरोसः करनेवालों को अल्लाह ही पर भरोसः करना चाहिए।

१४.१०–१२

६७ रसूलों के चंद ख़ुसूसी अवसाफ़

३१७ साबित-क़दम

१ कितने ही ऐसे नबी हैं, जिनके साथ मिलकर बहुत से खुदा-परस्त लड़े। तो अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं; तो वह न हिम्मत हारे, न कमज़ोर हुए, और न वह दबे। और अल्लाह साबित-क़दम रहनेवालों से महब्बत करता है।

२ और वह बोले, तो सिर्फ़ यह बोले, "ऐ हमारे पर्वर्दगार! हमारे गुनाहों को, और हमारे काम में ज़्यादती होती हो उसको, मुआफ़ कर। हमारे क़दम जमा दे और मुन्किरों पर हमको मदद दे।

३ फिर अल्लाह ने उनको दुन्या का सवाब भी दिया। और आख़िरत का सवाब भी दिया। और अल्लाह नेक काम करने-वालों को पसंद करता है।

३.१४६–१४८

अज़ीयतें–कष्ट, दुःख ख़ुसूसी–विशिष्ट अवसाफ़–गुण साबित-क़दम–दृढ़निश्चयी।

३१८ बुर्दबार

१ तुझसे पहले बहुत से पैग़ंबर झुठलाये जा चुके। तो उन्होंने झुठलाये जाने पर, और ईज़ा दिये जाने पर सब्र किया। यहाँ तक, कि उनको हमारी मदद पहुँच गयी। और अल्लाह की बातों को बदलनेवाला कोई नहीं। और बेशक तेरे पास पैग़ंबरों की ख़बरें आ चुकी हैं।

२ और अगर उन लोगों को बेरुख़ी तुझ पर गिराँ है, तो अगर कुछ तुझसे हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूंढ़। या आस्मान में सीढ़ी ढूंढ़, फिर उनके पास कोई निशानी ले आ। और अगर अल्लाह चाहता, तो उन सबको ज़रूर हिदायत पर जमा' कर देता। पस तू नादान मत बन। ६.३४-३५

३१९ मुख़ालिफ़ हालात में हिदायत करनेवाले

१ जब उनमें से एक जमाअ़त ने कहा, तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीह़त करते हो, जिन्हें अल्लाह हलाक करनेवाला है या सख़्त सज़ा देनेवाला है। उन्होंने जवाब दिया, तुम्हारे रब के हुज़ूर, मा'ज़रत पेश करने के लिए और इसलिए कि शायद वह बचें। ७.१६४

बेरुख़ी करना—मुँह फेरना मुख़ालिफ़—विरोधी।

६८ रसूलों के क़िस्सों से फ़ायदे

३२० रसूलों की कहानियाँ क्यों कहीं ?

१ यह पैग़ंबरों के क़िस्से जो हम तुम्हें सुनाते हैं। यह वह चीज़ें हैं, जिनके ज़रीअः हम तेरे दिल को मज़्बूत करते हैं। और उसमें तेरे पास हक़ आया है। और ईमानवालों के लिए नसीहत, और याद्-दहानी है। ११.१२०

६९ नूह अलैहिस्सलाम

३२१ नूह की नजात

१ नूह ने हमें पुकारा था। पस, हम बेहतरीन फ़र्याद-रस हैं।

२ हमने उसको और उसके घरवालों को बड़ी भारी घबराहट से नजात दी। ३७.७५-७६

३२२ "नाफ़र्मान बेटा तेरे कुन्बः से बाहर है"

१ नूह ने अपने पर्वर्दगार को पुकारा। कहा, ऐ मेरे पर्वर्दगार! मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है। और बेशक, तेरा वा'दः सच्चा है। और तू सब हाकिमों में बड़ा बेहतर हाकिम है।

२ ख़ुदा ने फ़र्माया, ऐ नूह! वह तेरे घरवालों में से नहीं है। यक़ीनन्, वह एक बिगड़ा हुआ काम है। लिहाज़ः उस बात का सवाल मुझसे न कर, जिसका तुझे अिल्म नहीं। मैं तुझे नसीहत करता हूँ, कि तू जाहिलों में से न हो। ११.४५-४६

फ़र्याद-रस—फर्याद सुननेवाला हाकिम—न्यायकर्ता।

७० इब्राहीम अलैहिस्सलाम

३२३ गुलज़ारे-इब्राहीम

१ (इब्राहीम ने) कहा—क्या तुम अल्लाह के सिवा ऐसे की अ़िबादत करते हो, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सकता है, न कुछ बुरा कर सकता है ?

२ तुफ़ है तुम पर, और उन चीज़ों पर जिसकी तुम अल्लाह के सिवा अ़िबादत करते हो। क्या तुम समझते नहीं ?

३ वह लोग एक-दूसरे से बोले, अगर तुम कुछ करनेवाले हो तो इसको जला दो। और अपने मा'बूदों की मदद करो।

४ हमने कहा, ऐ आग ! तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती हो जा। २१.६६–६९

३२४ इब्राहीम का अल्लाह पर ईमान

१ इब्राहीम ने कहा, भला देखते हो जिसकी तुम अ़िबादत करते हो।

२ तुम और तुम्हारे पहिले के बाप-दादा।

३ पस वाक़ई वह मेरे दुश्मन हैं। मगर पर्वर्द्गारे-आ़लम,

४ कि जिसने मुझे पैदः किया। और वही मेरी रह्नुमाई करता है।

५ और वही है जो खिलाता है, पिलाता है।

६ और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही शिफ़ाऽ देता है।

७ और वही है जो मुझको मारेगा। फिर जिलायेगा।

८ और जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ, कि क़ियामत के दिन मेरी खता मुआ़फ़ करेगा।

गुलज़ार—फूल का बगीचा पर्वर्द्गारे-आ़लम—जगत्प्रभु रह्नुमाई—मार्गदर्शन शिफ़ा—आरोग्य।

९ ऐ मेरे परवर्दगार ! मुझे हिक्मत दे। और मुझे नेकों में दाख़िल कर।

१० और आनेवालों में मेरे वास्ते सचाई की ज़बान अ़ता कर।

११ और मुझको जन्नते-नओ़ीम के वारिसों में शामिल कर।

१२ और मेरे बाप को मुआ़फ़ कर, कि वह गुमराहों में से है।

१३ और जिस दिन लोग उठाये जायेंगे, उस दिन मुझे रुस्वा न कर।

१४ जिस दिन, कि माल और औलाद काम न आयेंगे।

१५ इल्ला यह, कि अल्लाह के हु़ज़ूर में क़ल्बे-सलीम (चंगा दिल) लेकर आये। २६.७५–८९

३२५ बाप-बेटे का मुकालमः

१ ···बेशक वह (इब्राहीम) बहुत सच्चा नबी था।

२ जब उसने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! तू उसकी अ़िबादत क्यों करता है; जो न सुनता है न देखता है, न तेरे कुछ काम आता है ?

३ ऐ मेरे बाप! मेरे पास वह अ़िल्म आया है, जो तेरे पास नहीं। तो तू मेरे कहने पर चल। मैं तुझे सीधी राह दिखा दूंगा।

४ ऐ मेरे बाप! शैतान की अ़िबादत न कर। बेशक, शैतान रह़्मान का नाफ़र्मान है।

५ ऐ मेरे बाप! मैं डरता हूँ, कि रह़्मान की तरफ़ से तुझ पर कोई अ़ज़ाब आ जाये, तो तू शैतान का साथी हो जाये।

नओ़ीम–निहायत अच्छी रुस्वा–बदनाम हुज़ूर–उपस्थिति मुका-लमः–संवाद।

६ इब्राहीम के बाप ने कहा : ऐ इब्राहीम ! क्या तू मेरे मा'बूदों से फिरा हुआ है ? अगर तू बाज़ न आया, तो मैं तुझको ज़रूर संग्सार करूँगा। और मेरे पास से हमेशा के लिए दूर हो जा।

७ इब्राहीम ने कहा, सलाम अ़लैक। मैं अपने पर्वर्द्गार से तेरे लिए मग़्फ़िरत तलब करूँगा। बेशक वह मुझ पर बहुत मेह्रबान है।

८ और मैं तुम लोगों से, और जिनकी तुम अल्लाह के सिवा अ़िबादत करते हो उनसे किनारा करता हूँ। और मैं अपने पर्वर्द्गार की अ़िबादत करूँगा। मुझे उम्मीद है कि अपने पर्वर्द्गार की अ़िबादत करके, मैं बद्नसीब न हूँगा।

१६.४१–४८

३२६ नरम दिल इब्राहीम

१ इब्राहीम का अपने बाप के लिए बख़्शिश की दुआ़ करना सिर्फ़ उस वा'दः के सबब था, कि जो उसने उससे किया था। फिर जब उस पर ज़ाहिर हो गया, कि वह अल्लाह का दुश्मन है; तो उससे बे-ता'ल्लुक़ हो गया। बेशक, इब्राहीम बड़ा रहूम-दिल था। हलीम था। ६.११४

३२७ इब्राहीम अलैहिस्सलाम के फ़र्ज़ंद—इस्माअ़ील

१ जब वह लड़का (इस्माअ़ील) उसके (इब्राहीम) साथ दौड़ने की अ़ुम्र को पहुँचा तो इब्राहीम ने कहा : बेटा ! मैं ख़्वाब में क्या देखता हूँ, कि तुझे ज़ब्ह कर रहा हूँ। फिर देख, तेरी क्या राय है ? बोला, ऐ बाप ! तुझको जो ह़ुक्म किया जाता है उसकी ता'मील कर। अगर अल्लाह ने चाहा, तो तू मुझे सब्र करनेवाला पायेगा।

संगसार करना—पथराव करना, पत्थर मारकर मार डालना रहम-दिल—दयार्द्र-हृदय ज़ब्ह करना—काटना।

२ फिर जब दोनों मुतीअ़ हुए, और (इब्राहीम ने) उसको माथे के बल लिटाया ।

३ तो हमने पुकारा, "ऐ इब्राहीम !"

४ बेशक, तूने ख़्वाब को सच कर दिखाया । बेशक हम नेकी करनेवालों को इसी तरह जज़ाऽ देते हैं ।

५ बेशक, यह बड़ी खुली हुई आज़माइश थी । ३७.१०२–१०६

७१ मूसा अ़लैहिस्सलाम

३२८ मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ़ क़बूल

१ मूसा ने कहा, ऐ मेरे परवर्द्गार ! मेरे लिए मेरा सीनः खोल दे ।

२ और मेरा काम मेरे लिए आसान कर ।

३ और मेरी ज़बान से गिरह खोल दे ।

४ कि लोग मेरी बात समझें ।

५ और मेरे वास्ते मेरे कुन्बे से एक मुआ़विन मुक़र्रर कर ।

६ मेरे भाई हारून को ।

७ उसीसे मेरी कुव्वत मज़बूत कर ।

८ और उसको मेरे काम में शरीक कर ।

९ ताकि हम तेरी पाकी बहुत बयान करें ।

१० और तुझको बहुत याद करें ।

११ बेशक, तू हमको देखनेवाला है ।

१२ कहा; ऐ मूसा ! तूने जो माँगा, तुझे दिया गया । २०.२५–३६

जज़ा–बदला मुआ़विन–सहकारी ।

७२ अ़ीसामसीह् अलैहिस्सलाम

३२९ अ़ीसा अलैहिस्सलाम का इज़्हार कि वह हमेशा बा-बरकत हैं

१ (अ़ीसा) बोले। बेशक मैं अल्लाह का बंदा हूँ। उसने मुझे किताब दी। और मुझको नबी बनाया।

२ और मुझे बरकतवाला बनाया। ख़्वाह मैं कहीं रहूँ। और मुझको सलात और ज़कात की ताकीद की है, जब तक जीता रहूँ।

३ और अपनी माँ के साथ मुझे अच्छा सुलूक करनेवाला बनाया। और मुझको जब्र करनेवाला बद्-बख़्त नहीं बनाया।

४ और सलाम (अम्नो रह्मत) है, मुझ पर। जिस दिन मैं पैदः हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन उठूँगा मैं ज़िन्दः होकर।

५ यह है अ़ीसा मर्यम का बेटा............। १९.३०–३४

३३० अ़ीसा अलैहिस्सलाम को सूली पर चढ़ाया जाना एक ज़न

१ उनके इस कहने पर कि हमने मर्यम के बेटे अ़ीसामसीह रसूलुल्लाह को मार डाला। (हमने उनको सजा में मुब्तला किया)। और, उन्होंने उसको न मारा, न उसको सूली दी बल्कि वह धोके में डाल दिये गये। और जो लोग इस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं, वह ज़रूर इसमें शक में हैं। उनको इसका कोई अ़िल्म नहीं। वह सिर्फ़ गुमान पर चल रहे हैं। और यक़ीनन् उन्होंने उसको मारा नहीं।

२ बल्कि, उसको अल्लाह ने अपनी तरफ़ उठा लिया। और अल्लाह ग़ालिब, हिकमतवाला है। ४.१५७-१५८

बा-बरकत—धन्य जब्र—नाजायज़ दबाव, अत्याचार मुब्तला—ग्रस्त, फँसा हुआ।

३३१ यह्या अलैहिस्सलाम अीसामसीह के मुसद्दिक़

१ हमने कहा; ऐ यह्या, किताब को मज़्बूती से थाम ले। और हमने उसको लड़कपन में हिकमत अता की।
२ और अपने पास से रह्मदिली और पाकीज़गी दी। और वह मुत्तक़ी था।
३ और अपने माँ-बाप से नेक सुलूक करनेवाला था। और सख़्त-गीर और ख़ुद्सर नहीं था।
४ और सलाम (अम्नो रह्मत) है उस पर। जिस दिन वह पैदः हुआ, और जिस दिन वह मरेगा, और जिस दिन जिन्दः होकर उठेगा। १९.१२–१५

३३२ अीसा अलैहिस्सलाम के पैरव

१ ......ईमान रखनेवालों की दोस्ती में क़रीब्तर तू उन लोगों को पायेगा, जो कहते हैं कि नसारा हैं। यह इसलिए कि बा'ज़ उनमें आलिम हैं। और अिबादत करनेवाले दुर्वेश हैं। और वह तकब्बुर नहीं करते।
२ और जब वह उस कलाम को सुनते हैं, जो रसूल पर उतारा गया; तो तू देखेगा, कि उनकी आँखें आँसुओं से उमंड़ती हैं। इस वजह से, कि उन्होंने हक़ को पहचाना है। वह कहते हैं; "ऐ पर्वर्द्गार ! हम ईमान लाये हैं। हमको शाहिदों के साथ लिख ले।" ५.८५-८६

७३ रुसुल ग़ैर-मुतज़क्करः

३३३ रसूल, जिनका ज़िक्र नहीं हुआ

१ हमने तुझसे पहले बहुत पैग़म्बर भेजे, जिनमें बा'ज़ का ज़िक्र हमने तुझसे किया। और बा'ज़ वह हैं, जिनका ज़िक्र तुझसे नहीं किया.....................। ४०.७८

२७ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

७४ ता'लीमे-ग़ैबी

३३४ पहेली वह्य

१ पढ़, अपने पर्वर्दिगार के नाम से, जिसने पैद: किया।
२ पैद: किया इन्सान को जमे हुए ख़ून से।
३ पढ़, और तेरा पर्वर्दिगार बड़ा करीम है,
४ जिसने अिल्म सिखाया क़लम से।
५ सिखाया इन्सान को, जो वह नहीं जानता था। ९६.१–५

३३५ मे'राज

१ पाक है वह, जो ले गया एक रात अपने बंदे को मस्जिदुल्हराम से दूर की मस्जिद तक। जिसके माहौल को हमने बरकत दी है, ताकि उसको अपनी निशानियाँ दिखलायें। बेशक, वह सुननेवाला, देखनेवाला है। १७.१

३३६ बिला शुब: उसने देखा

१ यह तुम्हारा साथी दीवाना नहीं।
२ और वाक़अी उसने उसको खुले आस्मान के किनारे पर देखा।
३ और वह ग़ैब की बातें बताने में बख़ील नहीं हैं। ८१.२२-२४

मे'राज–दिव्य प्रवास।
मस्जिदुलहराम–पवित्र मस्जिद, मक्का शरीफ़ की मस्जिद।
माहौल–परिसर।
बिला शुब:–बेशक।
ग़ैब–अव्यक्त।
बख़ील–कृपण।

७५ अल्लाह की हिदायत

३३७ ज़ाइद अिबादत का हुक्म

१ नमाज़ क़ायम कर सूरज ढलने से रात के अँधेरे तक और फ़ज्र के वक़्त क़ुर्आन पढ़। यक़ीनन् फ़ज्र का क़ुर्आन पढ़ना मश्हूद है।

२ और रात को क़ुर्आन के साथ नमाज़े-तहज्जुद पढ़। यह तेरे लिए नफ़्ल (ज़ायद चीज़) है। उम्मीद है, कि तुझको तेरा रब मक़ामेमहमूद पर पहुँचा दे।

३ और कह, ऐ पर्वर्द्गार! मुझे जहाँ भी ले जा, सचाई के साथ ले जा। और जहाँ से भी निकाल, सचाई के साथ निकाल और अपने पास से एक़्तेदार दे, (जो) मदद देनेवाला हो।

४ और कह, हक़ आ गया है। और बातिल मिट गया, बेशक बातिल तो मिटनेवाला ही है। १७.७८–८१

३३८ महज़ पैग़ाम पहुँचानेवाला

१ ख़्वाह कोई वा'दः जो हमने उनसे किया है, हम तुझको दिखला दें। ख़्वाह तुझको उठा लें। पस तेरा ज़िम्मः सिर्फ़ पहुँचा देना है। और हमारा काम हिसाब लेना है। १३.४०

मश्हूद है–उपस्थित किया गया नमाज़े तहज्जुद–आधी रात के बाद की नमाज महमूद–स्तुति-योग्य इक्तेदार–सत्ता, प्रतिष्ठा महज़–केवल।

३३९ हिदायत तेरा काम नहीं

१ बेशक तू मुर्दों को सुना नहीं सकता। और बहरों को अपनी आवाज़ सुना नहीं सक़ता, जब कि वह पीठ फेरकर चल दें।

२ और तू अन्धों को उनकी गुम्राही से राह दिखानेवाला भी नहीं। तू तो सिर्फ़ उन्हींको सुना सकता है, जो हमारी निशानियों पर ईमान रखते हैं, फिर वह मुतीअ़ भी हैं। २७.८०-८१

३४० मुहम्मदस० और अन्धा

—कौन जानता है कि रह्मत किस पर होगी ?—

१ त्यौरी चढ़ाई, और मुँह फेरा।

२ कि उसके पास अन्धा आ गया।

३ और तुझे क्या मा'लूम है, शायद वह पाक हो जाता।

४ या सोचता, तो समझाना उसके काम आता।

५ तो वह, जो पर्वा नहीं करता।

६ उसके तो तू दर पै है।

७ हालाँकि, तुझ पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि वह पाक नहीं होता।

८ और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आया।

९ और वह डरता है।

१० तो तू उससे तग़ाफ़ुल करता है। ८०.१-१०

दर पै है—पीछे लगा है तग़ाफ़ुल—बेपर्वाही।

३४१ बिला ख़ौफ़ पैग़ाम पहुँचाओ

१ ऐ रसूल ! तुझ पर तेरे रब की तरफ़ से जो कुछ उतारा गया है, उसे तू पहुँचा दे। और अगर तू न करे, तो तूने उसका पैग़ाम नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तुझको (मुख़ालिफ़) आदमियों से बचा लेगा। ५.७०

३४२ कोई कुछ कहे, तू मरने तक अिबादत कर

१ वाक़िअी हम जानते हैं, कि उनकी बातों से तेरा दिल तंग हो जाता है।

२ पस, तू अपने पर्वर्द्गार की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान कर। और सज्दः करनेवालों में हो जा।

३ और अपने रब की अिबादत किये जा। यहाँ तक, कि तुझको मौत आ जाये। १५.६७-६६

३४३ आख़िरी फ़ैसलः करने तक साथियों से मश्वरः कर

१ यह अल्लाह की रहमत है, कि तू उन लोगों के लिए नरम दिल वाक़िअ् हुआ है। वर्नः, अगर तू तुन्दख़ू सख़्त-दिल होता, तो वह तेरे गिर्दो-पेश से छट जाते। तो तू उनको मुआफ़ कर। और उनकी बख़्शिश की दुआ कर। और काम में उनसे मश्वरः ले। फिर जब तू अ़ज़्म कर ले तो फिर अल्लाह पर भरोसा कर। बेशक, अल्लाह भरोसा करनेवालों को पसंद करता है। ३.१५६

३४४ कोशिश कर, अल्लाह की याद के साथ

१ हमने तेरे लिए तेरा सीनः खोल नहीं दिया ?

२ और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।

३ जिस बोझ ने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

तुन्दख़ू-गुस्सैल-क्रोधी, गिर्दो-पेश-दायें, बायें और सामने अज़्म-दृढ़ निश्चय।

४ और हमने तेरे लिए तेरा ज़िक्र बुलंद किया।
५ तो बेशक, मुष्किल के साथ आसानी है।
६ बेशक, मुष्किल के साथ आसानी है।
७ फिर जब तू फ़ारिग़ हो जाये, तो मेहनत कर।
८ और अपने पर्वर्दगार की तरफ़ दिल लगा। ९४.१-८

३४५ निज के तज्रिबे की रौशनी में हिदायत

१ क़सम है चाश्त के वक़्त (चढ़े दिन) की।
२ और रात की जब कि छा जाये।
३ तेरे पर्वर्दगार ने तुझको न छोड़ा, और न नाराज़ हुआ।
४ और अलबत्ता पिछली (आइंदा) ज़िन्दगी बेहतर है तेरे लिए पहिली ज़िन्दगी से।
५ और तेरा पर्वर्दगार तुझे ज़रूर देगा। फिर तू ख़ुश हो जायगा।
६ क्या उसने तुझको यतीम नहीं पाया। फिर जगह दी।
७ और पाया तुझे भटकता हुआ। पस, राह दिखलाई।
८ और तुझको मुफ़्लिस पाया। फिर ग़नी कर दिया।
९ पस, जो यतीम हो, उस पर जब्र न कर।
१० और जो माँगनेवाला हो, उसे मत झिड़क।
११ और अपने पर्वर्दगार की निअ्मत का तज़्किरा करता रह।
९३.१-११

फ़ारिग़—मुक्त तज़्किरा—चर्चा।

७६ दीन का ए'लान

३४६ पाँच तौजीहात (कुल ख़म्सा)

१ कह; मैं तो सिर्फ़ एक बात समझाता हूँ, कि तुम अल्लाह के वास्ते दो-दो एक-एक खड़े हो जाओ। फिर सोचो, कि तुम्हारे इस साथी को कुछ दिवानगी नहीं। वह तो सिर्फ़ होशियार करनेवाला है। एक बड़ी आफ़त आने से पहिले।

२ कह; मैंने तुमसे जो मुआ़वजः माँगा हो, तो वह तुम ही रखो। मेरा मुआ़वजः उसी अल्लाह के ज़िम्मः है। और वह हर चीज़ को देख रहा है।

३ कह, बेशक मेरा पर्वर्द्गार ह़क़ नाज़िल करता है। और वह ग़ैब की बातें जानता है।

४ कह; ह़क़ आया। और बातिल न पैदा करता है, और न फेरकर लाता है।

५ कह, अगर मैं गुम्राह हो जाऊँ, तो सिर्फ़ अपनी ही जान के लिए गुम्राह हूँगा। और अगर मैं हिदायत पाऊँ, तो इसी सबब से, कि मेरे पर्वर्द्गार ने मुझको वह्य भेजी है। बेशक, वह सुननेवाला है, नज़दीक है। ३४.४६–५०

ए'लान—घोषणा कुल ख़म्सा—वद-पंचक नाज़िल करना—उतारना।

७७ औसाफ़ की दौलत

३४७ नमाज़ में मह्वियत

१ बेशक, तेरा पर्वर्द्गार जानता है, कि तू और तेरे साथियों में से कुछ लोग, (नमाज़ में) खड़े रहते हैं। दो तिहाई रात के क़रीब, और आधी रात, और तिहाई रात.............।

७३.२०

३४८ अल्लाह की दाइमी क़ुर्बत

१ अगर तुम नबी की मदद न करोगे तो यक़ीन जानो, अल्लाह ने उसकी मदद उस वक़्त की है, जिस वक्त मुन्किरों ने उसको निकाल दिया था। जब कि वह दो में का दूसरा था, दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था; "ग़म न करे"; यक़ीनन् अल्लाह हमारे साथ है। उस वक्त अल्लाह ने उस पर अपनी तरफ़ से सुकूने-कल्ब नाज़िल किया। और उसकी ऐसे लश्करों से मदद की कि जो तुमको नज़र नहीं आते थे। और मुन्किरों का बोल नीचा कर दिया। और अल्लाह ही का बोल-बाला रहा। और अल्लाह ग़ालिब है, हिक्मतवाला है। ९.४०

३४९ अ़िबादत का बेह्तरीन नमूना

१ बेशक, तुम्हारे लिए, या'नी उस शख़्स के लिए, जो अल्लाह की और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बहुत याद करता है, रसूलुल्लाह के अंदर एक उमदः नमूना है।

३३.२१

३५० रसूल और मो'मिन का ता'ल्लुक़

१ ईमानवालों को नबी से अपनी जान से ज़्यादहः लगाव है...।

३३.६

मह्वियत—तन्मयता क़ुर्बत—सान्निध्य ग़ार—गुफा उमदः—उत्कृष्ट।

३५१ गुज़श्तः ज़िन्दगी से सच्चाई साबित

१ कह; अगर अल्लाह चाहता, तो मैं उसका कलाम न तो तुम्हारे सामने पढ़ता, और न वह तुमको इसकी ख़बर करता। वाकिअः यह है कि मैं उसके पहिले एक उम्र तुममें गुज़ार चुका हूँ। फिर क्या तुम इतना नहीं समझते। १०.१६

३५२ अनपढ़ मोमिन

१ कह, ऐ लोगो, मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ हूँ। उसकी आस्मानों और ज़मीन में बादशाही है। उसके सिवा कोई हाकिम नहीं। वही जिलाता है, और वही मारता है। पस ईमान लाओ अल्लाह पर। और उसके भेजे हुए अनपढ़ नबी पर। जो अल्लाह पर और उसके कलामों पर ईमान लाता है। और तुम उसकी पैरवी करो। ताकि तुम राह पाओ। ७.१५८

३५३ अल्लाह ने मुहम्मदस० को साबित-कदम किया

१ और वह लोग चाहते थे, कि तुझे उस चीज़ से बिचला ही दें, जो हमने तेरी तरफ वह्य भेजी। ताकि तू उसके सिवा कुछ और हमारे नाम से गढ़ ले। और तब वह तुझे ज़रूर दोस्त बना लेते।

२ और अगर हम तुझे सँभाल न रखते, तो तू ज़रूर उनकी तरफ़ कुछ न कुछ झुकने लग जाता। १७.७३-७४

३५४ "सबका ही सुननेवाला"

१ उनमें से बा'ज ऐसे हैं, जो नबी को दुख देते हैं। और कहते हैं कि वह तो कान है (यानी सबकी ही सुनता है)। वह कान है तुम्हारे भले के लिए। अल्लाह पर ईमान रखता है। और मोमिनों का यक़ीन करता है। और तुममें से जो ईमान रखते हैं, उनके लिए रहमत है.........। ९.६१

३५५ आम राय से मग़्लूब नहीं

१ दुन्या में ज़्याद: लोग ऐसे हैं, कि अगर तू उनका कहना मानने लगे, तो वह तुझको अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे। वह सिर्फ़ गुमान पर चलते हैं। और सिर्फ़ क़ियास-आराइयाँ करते हैं।

६.११६

७८ रसूल का मिशन

३५६ रसूल-अल्ला की रह्‌मत

१ और हमने तुझको नहीं भेजा, मगर दुन्या के लोगों के लिए रह्‌मत बनाकर। २१.१०७

३५७ पाँच तरह का काम

१ अये नबी! बेशक हमने तुमको भेजा है। बतानेवाला (शाहिद), ख़ुश्ख़बरी देनेवाला, और होशियार करनेवाला बनाकर।

२ और अल्लाह की तरफ़ से उसके हुक्म से बुलानेवाला, और रौशन-चिराग़ बनाकर। ३३.४५-४६

७९ दुरूद भेजो

३५८ महम्मद स० पर दुरूद भेजो

१ बेशक, अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं। अये ईमानवालो! तुम दुरूद भेजो। और उस पर सलाम भेजो, सलाम कहकर। ३३.५६

मग़्लूब—प्रभावित, अधीन दुरूद—दुआ और सलाम, खासकर रसूल पर।

९ सरबस्तः राज़ों की तरफ़ इशारा

२८ फ़ल्सफ़ः

८० काएनात

३५९ तख़्लीक़ बेसबब नहीं

१ हमने आस्मान ज़मीन और जो कुछ उसमें है, उसको बेकार नहीं बनाया।

२ अगर हम कोई मश्गलः ही इख़्तियार करना चाहते, तो उसको अपने पास ही से कर लेते, अगर हमको यह करना होता।

२१.१६-१७

३६० तख़्लीक़ बे-मानी नहीं

१ वह जो अल्लाह को याद करते हैं, उठते-बैठते और लेटते और आस्मान और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं। (पुकार उठते हैं कि): अये पर्वर्द्गार! तूने यह सब कुछ फ़ुज़ूल और बेमक़्सद पैदा नहीं किया.....। ३.१९१

फ़ल्सफ़ः—तत्त्वज्ञान, दर्शन काएनात—सृष्टि।

८१ रूह

३६१ तख़लीक़ बा-मक़्सद

१ क्या तुमने यह गुमान कर लिया है, कि हमने तुमको बेकार पैदः किया है ? और यह, कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाये जानेवाले हो ? २३.११५

३६२ नींद मौत का तज्रिबए-माक़ब्ल

१ वही है, जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज करता है। और दिन में जो कुछ तुम करते हो, उसे जानता है। फिर उठाता है तुमको कि मुक़र्रर: मुद्दत पूरी हो। फिर उसीकी तरफ तुमको, लौट जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो। ६.६०

३६३ नींद और मौत

१ अल्लाह खींच लेता है, जानों को, उनकी मौत के वक़्त और जिनको मौत नहीं आई, उनको नींद की हालत में खींच लेता है। फिर जिन पर मौत मुक़र्रर हो चुकी है। उनको रोक लेता है। और बाक़ी को भेज देता है एक मुद्दते-मुक़र्रर: के लिए। इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो सोच-विचार करनेवाले हैं। ३९.४२

३६४ रूह के बारे में सवाल

१ यह लोग तुझसे रूह के बारे में पूछते हैं। कह, रूह मेरे, पर्वर्दगार के हुक्म से है। तुम लोगों ने अ़िल्म से कम ही हिस्स: पाया है।

रूह—जीवात्म। बा-मक़्सद—सोद्देश्य, सहेतुक तज्रिबए-माक़ब्ल—पूर्वानुभव क़ब्ज करना—खींचना मश्गल:—व्यवसाय।

२ और अगर हम चाहें, तो वह चीज़ ले जायें, जो हमने तेरी तरफ़ वह्य की है···। १७.८५-८६

३६५ ग़ैब का अ़िल्म नहीं

१ कह, मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं। और न मै ग़ैब का अ़िल्म रखता हूँ। और न मैं तुमसे कहता हूँ, कि मैं फ़िरिश्ता हूँ। मैं सिर्फ उस वह्य की पैरवी करता हूँ, जो मेरी तरफ़ की गई है······। ६.५०

३६६ अगर ग़ैब का अ़िल्म होता

१ कह; मैं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा' और नुक़सान का इख़्तियार नहीं रखता। मगर जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब जानता तो भलाई में से बहुत लेता और मुझे बुराई लगती नहीं···।
७.१८८

३६७ ग़ैर-ज़रूरी सवाल न पूछो

१ अये ईमानवालो! ऐसी बातें न पूछा करो, कि अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जायें, तो तुम पर गिराँ गुज़रें······।
५.१०४

ज़ात–स्वयं गिराँ गुजरना–दिल पर बोझ होना।

८२ मुल्हिम्

३६८ जिसे चाहता है, उस पर अपनी वह्य उतारता है

१ बुलंद दर्जोंवाला साहिबे-अ़र्श। अपने बंदों में से जिस पर चाहता है, अपने हुक्म से वह्य उतारता है। ताकि मुलाक़ात के दिन हुशियार करे। ४०.१५

३६९ मुद्दर्रिके-क़ल्ब

१ अये ईमानवालो! तुम अल्लाह व रसूल के कहने को बजा लाओ। तुमको हम इसलिए बुलाते हैं, कि हम तुमको ज़िन्दगी बख्शें। और यह जान लो, कि अल्लाह .हाइल है आदमी और उसके दिल के दर्मियान। और यह, कि उसीके पास तुम जमा' किये जाओगे। ८.२४

मुल्हिम—अंतर्यामी मुद्दर्रिके-क़ल्ब—अंतर्यामी, अन्तःप्रेरक।

२९ क़ानूने मुक़ाफ़ाते अ़मल

८३ क़ानूने मुक़ाफ़ाते अ़मल में बुनियादी इ'तेक़ाद

३७० ग्यारह नुकात

१ कि कोई बोझ ढोनेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं ढोता।

२ इन्सान ने जो सअ़य की है, वही उसके लिए है।

३ और उसकी सअ़्य ज़रूर देखी जायगी।

४ फिर उसको पूरा-पूरा बदलः मिलेगा।

५ और तेरे रब तक सबको पहुँचना है।

६ और वही हँसाता है, रुलाता है।

७ वही मारता है, जिलाता है।

८ उसीने नर और मादः का जोड़ा बनाया है।

९ एक बूँद से जब वह डाली जाती है।

१० उसके जिम्मः है दो बारः पैदः करना।

११ और वही दौलतमंद करता है। और वही रज़ा व इताअ़त का सरमायः देता है।

१२ और वही है सितारे-शिअ़रा का रब। ५३.३८–४९

८४ मुक़ाफ़ाते अ़मल का क़ानून अटल

३७१ अपनी फ़िक्र अपना जिम्मः

१ अये ईमानवालो ! अपनी फ़िक्र करो। दूसरे की गुमराही से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता, जब कि तुम राह पर हो। अल्लाह ही की तरफ़ तुम सबको लौटकर जाना है। फिर वह तुम्हें बतला देगा, कि तुम क्या करते रहे हो। ५.१०८

मुक़ाफ़ाते अ़मल–कर्मविपाक नुकात–मर्म, सूक्ष्म बातें सितारे-शुअ़राऽ–लुब्धक तारा।

३७२ अपनी-अपनी जिम्मःदारी

१ जो सीधी राह पर चलता है, वह अपने ही भले को चलता है। और जो गुम्राह हुआ, वह अपने ही बुरे को गुम्राह हुआ। और कोई बोझ ढोनेवाला दूसरे का बोझ नहीं ढोता……। १७.१५

३७३ अल्लाह उसीकी हालत बदलता है, जो अपने अंदर तब्दीली लाता है

१ हक़ीक़त यह है, कि अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह, जो उसके जी में है, उसे नहीं बदलती। और अल्लाह जब किसी क़ौम पर मुसीबत डालना चाहता है, तो वह टलती नहीं और अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार नहीं। १३.११

३७४ हम आप ही अपने दुश्मन हैं

१ तुमको जो मुसीबत पहुँचती है, वह तुम्हारे हाथों ने जो कमाया, उस वजह से है। और बहुत से गुनाह तो वह मुआफ़ ही करता है। ४२.३०

३७५ नेकी का बदलः दसगुना

१ जो नेकी लेकर आये, तो उसके लिए उसका दसगुना है। और जो बदी लेकर आये तो उसके बराबर बदलः दिया जायेगा। और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। ६.१६०

३७६ भलाई का अंजाम भलाई

१ भलाई का बदलः भलाई ही है। ५५.६०

३७७ अल्ला की ज़मीन वसी है

१ कह; मेरे बंदो ! जो ईमान लाये; अपने पर्वर्दगार का तक़्वा इख़्तियार करो। जो लोग इस दुन्या में नेकी करते हैं, उनके लिए नेक सिलः है। और अल्लाह की ज़मीन कुशादः है। यक़ीनन्, सब्र करनेवालों को उनका सवाब बेशुमार मिलता है। ३९.१०

३७८ नेक कलाम और अच्छे काम की अिज़्ज़त

१ जो अिज़्ज़त चाहता है; तो (वह समझ ले), कि सारी अिज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। सुथ्री बात उसी तक पहुँचती है। और नेक काम को वह बुलंदी बख़्शता है। और जो लोग बुरी-बुरी चालें करते हैं, उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है। और उनका मक्र नेस्तो-नाबूद होगा। ३५.१०

८५ मरने के बाद भी अ़ा'माल का नतीजः टलता नहीं

३७९ जो यहाँ अन्धा, वह वहाँ भी अन्धा

१ जो शख़्स इस दुन्या में (दीन का) अन्धा रहा, वह आख़िरत में भी अन्धा रहेगा, और राह बहुत खोया हुआ होगा। १७.७२

३८० अल्लाह की मीज़ान

१ क़ियामत के दिन हम इन्साफ की तराज़ुएँ रखेंगे। फिर किसी जी पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जायेगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी अ़मल होगा तो हम उसको ला हाज़िर करेंगे। और हम हिसाबवाले, काफी हैं। २१.४७

मक्र—कपट नेस्तो-नाबूद—नष्ट।

३८१ ज़ल्ज़लए-हश्र

१ जब ज़मीन अपनी भूँचाल से हिलाई जायगी ।

२ और ज़मीन अपने बोझ निकाल बाहर करेगी ।

३ और इन्सान कहेगा कि इसको क्या हुआ ।

४ उस दिन वह अपनी बातें बयान करेगी ।

५ इसलिए, कि तेरे पर्वर्द्गार ने उसे यही हुक्म भेजा ।

६ उस दिन लोग निकलेंगे बिखरे हुए । ताकि वह अपने आ'माल को देखें ।

७ पस, जो ज़र्रः बराबर भलाई करेगा, वह उसे देखेगा ।

८ और जो ज़र्रः भर बुराई करेगा, वह उसे देखेगा । ९९.१–८

३८२ हल्का पल्ला, भारी पल्ला

१ वह खडखडा डालनेवाली ।

२ क्या है वह खडखडा डालनेवाली ?

३ और तूने क्या समझा, कि क्या है वह खडखडा डालनेवाली ?

४ जिस दिन होंगे लोग, जैसे बिखरे हुए पतंगे ।

५ और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे ।

६ पस, जिसका पल्ला भारी होगा ।

७ तो वह ख़ुश्गवार ज़िन्दगी में होगा ।

८ और जिसका पल्ला हल्का हुआ ।

९ तो उसका ठिकाना गढ़ा (हाविय:) है ।

१० और तूने क्या समझा कि वह क्या है ?

११ आग दहकती हुई । १०१.१–११

भूँचाल–धरणीकम्प ।

३० हयात बा'दल् मौत

८६ क़ियामत नहीं टलेगी

३८३ पत्थर हो जाओ या लोहा

१ कहते हैं, क्या हम जब हड्डियाँ और चूरा-चूरा होकर रह जायेंगे तो क्या हम नये सिरे से पैदा करके उठाये जायेंगे ?

२ कह, तुम पत्थर हो, या लोहा हो जाओ। या और कोई चीज़ जो तुम्हारे दिल में बड़ी लगे।

३ फिर वह कहेंगे, फिर कौन हमें लौटाकर लायेगा ? कह, वही जिसने तुमको पहिली बार पैदा किया.........। १७.४९–५१

३८४ नफ़्से लव्वामः की गवाही

१ मैं क़सम खाता हूँ, क़ियामत के दिन की।

२ और क़सम खाता हूँ, उस नफ़्स की, जो बुराई पर मलामत करे।

३ क्या इन्सान यह ख़्याल करता है, कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी न करेंगे।

४ क्यों नहीं। हम क़ादिर हैं, कि उसकी उँगलियों की पोर-पोर दुरुस्त करें। ७५.१–४

हयात बा'दल् मौत–मृत्यु के बाद का जीवन नफ़्से लव्वामः–सदसद्-विवेकबुद्धि।

८७ क़ियामत का दिन

३८५ क़ियामत, एक वाक़िअ़:

१ क़सम है उनकी, जो उड़ाकर बिखेरनेवाली हैं।
२ फिर क़सम उनकी, जो बोझ उठानेवाली हैं।
३ फिर नर्मी से चलनेवाली हैं।
४ फिर हुक्म से बाँटनेवाली हैं।
५ बेशक, तुमसे जिसका वा'द: किया गया, वह ज़रूर सच है।
६ और बेशक, इन्साफ़ ज़रूर होनेवाला है। ५१.१–६

३८६ कोई किसीका नहीं होगा

१ फिर जब आयेगी कान फोड़ देनेवाली।
२ उस दिन आदमी भागेगा, अपने भाई से,
३ अपनी माँ और अपने बाप से।
४ अपनी साथवाली (बीवी) से और अपनी औलाद से।
५ उस दिन उनमें से हर आदमी की एक ऐसी हालत होगी, जो उसके लिए काफ़ी होगी। (वह उसको दूसरों से बेपर्वा कर देगी)। ८०.३३–३७

३८७ कोई सिफ़ारिश काम नहीं आयेगी

१ और डरो उस दिन से जब कोई किसीके ज़रा काम न आयेगा। न किसीकी तरफ़ से कोई मुआविज़: क़बूल किया जायेगा। और न किसीकी तरफ़ से सिफ़ारिश क़बूल होगी। और न उनको कोई मदद दी जायेगी। २.१२३

३८८ क़ियामत की बारह निशानियाँ

१ जिस वक़्त सूरज लपेटा जायेगा ।
२ और सितारे झड़ जायेंगे ।
३ और पहाड़ चलाये जायेंगे ।
४ और जब बियाती दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी ।
५ और जब जंगली जानवर इकट्ठा किये जायेंगे ।
६ और जब समंदर भड़काये जायेंगे ।
७ और जब जानें मिलाई जायेंगी ।
८ और जब ज़िदः गाड़ी हुई (लड़की) से पूछा जायगा ।
९ कि किस गुनाह से वह मारी गई ।
१० और जब आ'माल-नामे खोले जायेंगे ।
११ और आस्मान की खाल उतारी जायेगी ।
१२ और जब दोज़ख़ दहकायी जायेगी ।
१३ और जब बेहिश्त नज़दीक की जायेगी ।
१४ हर जी जानेगा कि उसने क्या किया है । ८१.१–१४

८८ बेहिश्त व दोज़ख़ वग़ैरः का निज़ाम

३८९ जंज़ीर तौक़ और दहकती आग

१ हमने मुन्किरों के लिए, जंज़ीरें, तौक़, और दहकती आग, तैयार रखी है । ७६.४

आ'मालनामे–कर्मपत्र निज़ाम–व्यवस्था ।

३९० कान, आँख और खाल भी गवाही देंगी

१ जिस दिन अल्ला के दुश्मन आग की तरफ जमा किये जायेंगे, तो उनकी टोलियाँ बनायी जायेंगी।

२ यहाँ तक, कि वह जब उस आग के पास आ जायेंगे, तो उनके कान, उनकी आँखें, और उनकी खालें, उनके खिलाफ़ उनके कर्तूतों की गवाही देंगी।

३ और वह अपने चमड़ों से कहेंगे, तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी? वह जवाब देंगे, हमको उसी अल्लाह ने बुलवाया, जिसने हर चीज़ को गोया किया। और उसीने तुमको पहिली बार पैदा किया। और उसीकी तरफ तुम लौटाये जा रहे हो।

४ और तुम (गुनाह करते वक्त) छुपाते थे। (तो) इस ख्याल से नहीं, कि (कल को) तुम्हारे कान, और तुम्हारी आँखें, और तुम्हारी खालें, तुम्हारे खिलाफ़ गवाही देंगी। बल्कि, तुमको यह गुमान था, कि तुम्हारे बहुत से कर्तूतों को अल्लाह नहीं जानता।

४१.१९–२२

३९१ तक़्वावालों का मक़ाम

१ वह आखिरत का घर हम उन लोगों के लिए खास करते हैं, जो न ज़मीन में बड़ा बनने का इरादः करते हैं, न फ़साद का। और मुत्तक़ियों के लिए नेक अंजाम है। २८.८३

३९२ दूध और शहद की नहरें

१ पर्हेज़गारों से जिस जन्नत का वा'द: किया गया है, उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें पानी की नहरें हैं, जो पानी बिगड़नेवाला नहीं। और दूध की नहरें हैं, जिसका मज़: बदला हुआ नहीं होगा। और ऐसे शर्बत की नहरें हैं, जो पीनेवालों के लिए मज़: देंगी। और शहद की नहरें, जो शहद साफ़ किया हुआ होगा। और उन तक्वावालों के लिए वहाँ तरह-तरह के मेवे हैं। और उनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से मग्फ़िरत·········।
४७.१५

३९३ आ'राफ़

१ और उन दोनों (बेहिश्त और दोज़ख) के दर्मियान एक हद्दे-फ़ासिल है। और आ'राफ़ के ऊपर कुछ लोग होंगे। हर एक को उसकी निशानी से वह पहचान लेंगे। और जन्नतवालों को पुकारकर कहेंगे, तुम पर सलामती है। वह अभी जन्नत में दाखिल नहीं हुए। मगर उसके उम्मीदवार हैं।

२ और जब उनकी निगाहें दोज़खवालों की तरफ फिरेंगी, तो वह कहेंगे, ऐ हमारे पर्वर्दिगार, हमें उन गुनहगारों में शामिल न कर।
७.४६-४७

३९४ ईमान + इरादा + सअ़्ई = रज़ाए-इलाही

१ जो आखिरत का इरादा करता हो और उसके लिए सअ़ी करे, जैसी कि उसके लिए सअ़ी करनी चाहिए; और वह ईमानवाला हो। तो ऐसे हर शख़्स की सअ़ी मश्कूर (क़ाबिलेक़द्र) होगी। (उसको अपनी कोशिश का फल मिलकर रहेगा।) १७.१९

मग्फ़िरत—क्षमा आ'राफ़—उच्चस्थान रज़ाए-इलाही—ईश्वरी प्रसन्नता, प्रभु-प्रसाद।

३९५ दायें बायें और मुक़र्रबीन

१ तुम हो जाओगे तीन क़िस्में ।
२ दाहिनेवाले, कैसे अच्छे हैं दाहिनेवाले ।
३ और बायेंवाले, कैसे बुरे हैं बायेंवाले ।
४ और आगे निकल जानेवाले, सबसे आगेवाले हैं ।
५ वह लोग मुक़र्रब हैं । ५६.७–११

३९६ सुरूरे आख़िरत या सुरूरे दुन्या

१ ऐ इन्सान ! तुझे मेह्‌नत करनी है, अपने पर्‌वर्‌द्‌गार तक पहुँचने के लिए । खूब मेह्‌नत कर फिर । तू उससे मिलनेवाला है ।
२ पस, जिसका आ'माल-नामः उसके दाहिने हाथ में दिया गया ।
३ तो उससे हिसाब लिया जायगा, आसान हिसाब ।
४ और वह अपने लोगों की तरफ़ ख़ुश होकर लौटेगा ।
५ और जिसको अपना आ'माल-नामः पीठ के पीछे से दिया गया ।
६ वह पुकारेगा, मौत-मौत !
७ और वह जहन्नम में दाख़िल होगा ।
८ बेशक, वह अपने अह्‌लो-अयाल में ख़ुश था ।
९ वाक़ई, उसने गुमान किया था, कि वह हर्‌गिज़ न लौटेगा ।
८४.६–१४

मुक़र्रबीन–निकटवर्ती, अन्तेवासी जहन्नम–नरक ।

३९७ मगर जब अल्लाह चाहे

१ जो बद्बख़्त होंगे, वह आग में होंगे। वहाँ वह चीखेंगे। और धाड़ें मारकर रोयेंगे।

२ वह उसमें हमेशः रहेंगे, जब तक कि आस्मान और ज़मीन रहें, इल्ला यह कि तेरा रब चाहे। पस, बेशक तेरा पर्वर्द्गार जो चाहता है, उसे कर डालता है।

३ और वह लोग जो नेक्बख़्त होंगे, वह जन्नत में होंगे। वह उसमें हमेशः रहेंगे, जब तक कि आस्मान और ज़मीन रहें, इल्ला यह कि तेरा रब चाहे। यह अ्तियः लाज़वाल है।

११.१०६–१०८

८९ दुआ़ऽए-र्‌मत

३९८ नफ़्से मुत्मऽइन्न

१ ऐ इत्मीनानवाली रूह !

२ लौट चल अपने पर्वर्द्गार की तरफ़। तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी।

३ पस, मेरे (अल्लाह के) बन्दों में शामिल हो जा।

४ और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। ८९.२७–३०

नेक्बख़्त–भाग्यवान् इल्ला यह–सिवाय इसके अतिया–देन लाज़वाल–अक्षय दुआ़ऽए-रह्मत–शांतिमंत्र नफ़्से मुत्मऽइनः—हे शांतजीव।

९० अल्लाह की रह्मत

३९९ अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी रह्मत

१ अल्लाह ने, ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों से, ऐसे बाग़ों का वा'दः किया है, जिसके नीचे नह्रें बहती हैं। वह उनमें हमेशः रहेंगे। और उन सदा-बहार बाग़ों में पाकीज़ः घरों का भी वा'दः है। और सबसे बढ़कर अल्लाह की रज़ा हासिल होगी। यही है बड़ी कामियाबी। ९.७२

४०० व लदय्ना मज़ीदुन्

१ पर्हेजगारों के लिए, बेहिश्त नज़दीक लायी जायेगी। दूर न होगी।

२ (कहा जायगा); यह है, जिसका वा'दः हर रुजूअ् करनेवाले, पाबंदी करनेवाले के लिए, तुमसे किया गया।

३ जो डरता है रहमान से, बग़ैर देखे। और जो रुजूअ् करनेवाले दिल के साथ आता है।

४ उसमें सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ। यह हमेशः रह्ने की जगह है।

५ वह जो कुछ चाहेंगे, वहाँ उनके लिए मौजूद है।

और हमारे पास और भी ज्यादः है।

५०.३१-३५

●

रह्मत—प्रसाद व लदय्ना मज़ीदुन्—और हमारे पास ज्यादः है।

हमारा धार्मिक साहित्य

(विनोबा)

गीता-प्रवचन (हिन्दी) (अजिल्द) १.६०
गीता-प्रवचन (हिन्दी) (सजिल्द) २.५०
Talks on The Gita 3.00, 2.00
गीता-प्रवचनानि (संस्कृत) ३.००
गीता-प्रवचन (उर्दू) १.५०
गीता-प्रवचन (उर्दू, नागरी लिपि) १.५०
नामघोषा-सार १.५०
आत्मज्ञान और विज्ञान १.५०
Science & Self-knowledge 1.00
प्रेरणा-प्रवाह १.२५
जपुजी १.००
ज्ञानदेव-चिन्तनिका १.००
आश्रम-प्रज्ञोपनिषद् १.००
स्त्री-शक्ति १.००
सप्त शक्तियाँ ०.५०
शुचिता से आत्मदर्शन ०.४०
सर्वोदय-पात्र ०.४०
राम-नाम : एक चिन्तन ०.३०
भगवान् के दरबार में ०.१२

(दादा धर्माधिकारी)

स्त्री-पुरुष सहजीवन १.५०
गांधी पुण्य-स्मरण ०.५०

(श्री कृष्णदत्त भट्ट)

धर्मों की फुलवारी ०.५०
वैदिक धर्म क्या कहता है ? (तीन भाग) प्रत्येक ०.५०
जैन धर्म क्या कहता है ? ०.५०
बौद्ध धर्म क्या कहता है ? ०.५०
पारसी धर्म क्या कहता है ? ०.५०
यहूदी धर्म क्या कहता है ? ०.५०
ताओ और कनफ्यूश धर्म क्या कहता है ? ०.५०
ईसाई धर्म क्या कहता है ? ०.५०
इस्लाम धर्म क्या कहता है ? ०.५०
सिख धर्म क्या कहता है ? ०.५०
वचन साहित्य परिचय रं० रा० दिवाकर ६.००
पुरंदरदास के भजन बाबुराव कुमठेकर ३.००
नीति-निर्झर अज्ञात १.२५
ताओ उपनिषद् मनोहर दिवाण ०.७५

सर्व - सेवा - संघ - प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी

रूहुल्-कुरान अन्य भाषाओं में

एसेंस ऑफ कुरान (अंग्रेजी)	४.००
रूहुल्-कुर्आन (उर्दू)	४.००
रूहुल्-कुर्आन (उर्दू, नागरी लिपि)	२.००
कुरान-सार (हिन्दी) अजिल्द २.५०, सजिल्द	३.००
कुराण-सार (मराठी)	२.५०
कुरान-सार (बंगला)	(प्रेस में)
रूहुल्-कुर्आन (अरबी)	(प्रेस में)
रूहुल्-कुर्आन (अरबी-उर्दू)	
एसेंस ऑफ कुरान (अरबी-अंग्रेजी)	